(नोटिस)

न्यामतसिंह रचित जैन ग्रन्थमाला के निम्न लिखित भाग तय्यार हो चुके हैं परन्तु अभी तक यह ही भाग छपे हैं जिनके सामने मूल्य लिखा गया है अन्य भाग भी छप रहे हैं शीघ्र ही प्रकाशित होने वाले हैं ॥

		नागरी	उर्दू
१ जिनेन्द्र भजन माला	...	।-)	०
२ जैन भजन रत्नावली	...	।)	०
३ मूर्ति मंडन प्रकाश (जैन भजन पुष्पावली)	...	।)	०
४	...	०	०
५	...	०	०
६ भविष्यदत्त तिलकासुन्दरी नाटक	...	१।।)	।)
७ जैन भजन मुक्तावली	...	।)	०
८ राजुल भजन एकादशी	...	-)	०
९ श्री नाम जैन भजन पच्चीसी	...	=)	०
१० कलियुग लीला भजनावली	...	=)	-)।।
११ कुन्ती नाटक	...	≡)	०
१२ विद्यानन्द शिवसुन्दरी नाटक	...	।।)	।=)
१३ अनाथ रुदन	...	-)	०
१४	...	०	०
१५	...	०	०
१६	...	०	०
१७	...	०	०
१८ जैन भजन शतक	...	।=)	०
१९ [illegible] जैन भजन [illegible]	...	≡)	=)
२० मैनासुन्दरी नाटक (बड़ा नाटक मोटे अक्षर मोटा कागज़)		२।)	०

पुस्तक मिलने का पता—

न्यामतसिंह जैनी सेक्रेटरी डिस्ट्रिक्ट बोर्ड मु० हिसार (पंजाब)

Niamat Singh Jain.

Secretary District Board, HISSAR (Punjab)

नियम

(१) चिट्ठी में पता साफ नागरी व उर्दू व अं
लिखना चाहिये ॥

(२) यदि किसी चिट्ठी का जवाब न पहुँचे तो
चिट्ठी साफ़ पते की आनी चाहिये ॥

(३) ५) रुपये से कम पर कोई कमीशन नहीं
जाएगा ५) रु० पर या ५) रु० से ज्यादे
सैकड़ा कमीशन दिया जावेगा ॥

(४) कोई साहब वी० पी० वापिस न करें वरने डा
सूल उनको देना होगा ॥

(५) चिट्ठी में साफ लिखना चाहिये कि पुस्तक
की दरकार है या उर्दू की ॥

पुस्तक मिलने का पता—

बाबू न्यामतसिंह जैनी सेक्रटरी डिस्ट्रिक्ट बोर्ड मु०
(पंज

B. NIAMAT SINGH JAINI
Secretary District Board Hissar.
HISSAR Distt: (Punj

विशेष सूचना।

(१) यह मैनासुन्दरी नाटक सन् १९०६ में बनाना प्रारंभ किया था॥ १६ दिसम्बर १९१२ को समाप्त होनेपर छपवाकर सर्व भाइयोंके हितार्थ प्रकाशित किया गया था यह नाटकभी पाल चरित्र शास्त्रानुसार रचा गया है॥

(२) इस नाटक को क़िस्सा कहानी समझ कर इसकी अविनय नहीं करनी चाहिये बल्कि जैनशास्त्र समझ कर इसको विनय पूर्वक पढ़े क्योंकी इसमें भीजैनशास्त्रका रहस्य दिखाया गया है॥

(३) इस नाटक को भादों में और ख़ासकर अठाई के पर्व में श्रीमन्दिरजी में रातके समय सभाके बीचमें नाटकके तौर पर पढ़ना चाहिये और नाटकपात्र अलग अलग होने चाहियें॥

(४) इस नाटक के वास्ते हारमोनियम बाजा और तबला अवश्य होने चाहियें॥

(५) चूंकि यह धार्मिक नाटक है इसलिये इसके पढते सुनते समय किसी प्रकार की अविनय या अनुचित हंसी मसख़री नहीं होनी चाहिये॥

(६) प्रथम ऐडीशन छपने के समय शीघ्रता के कारण इस पुस्तक पर विशेष ध्यान नहीं दिया जा सका था सो कहीं २ इसमें त्रुटी रह गई थीं वह दूसरी ऐडीशन (सन् १९१५) में पूरी करदी गई थीं इस कारण भजनों की तादाद बढ़ गई थी। जो ग़ैर ज़रूरी बात समझी गई थी वह निकाल दीगई थी॥

(७) इस नाटक की अबतक सात एडीशन इस प्रकार प्रकाशित हुई है॥

१ प्रथमा वृत्ति	सन्	१९१२ में	१०००	कापी	मूल्य	१॥)
२ द्वितीया वृत्ति	,,	१९१५ ,,	२०००	,,	,,	१॥)
३ त्रितीया वृत्ति	,,	१९१८ ,,	१०००	,,	,,	१॥)
४ चतुर्था वृत्ति	,,	१९१९ ,,	१०००	,,	,,	२॥)
५ पंचमा वृत्ति	,,	१९२१ ,,	१०००	,,	,,	२।)
६ षष्टमा वृत्ति	,,	१९२२ ,,	१०००	,,	,,	२॥)
७ सप्तमा वृत्ति	,,	१९२४ ,,	१०००	,,	,,	२॥)

न्यामत सिंह जैन—२० मई सन् १९२३ ई०

१२ सितम्बर सन् १९२२

श्रीवीतरागायनमः

नाटक पात्र पुरुषों के नाम

—:❀:—

अरीदमन—चम्पापुर नगरका राजा (श्रीपालका पिता)
वीरदमन—राजा अरीदमनका भाई (श्रीपालका चचा)
श्रीपाल—राजा अरीदमनका पुत्र
पहुपाल—उज्जैन नगरीका राजा (मैनासुन्दरीका पिता)
कनककेतू—हंसद्वीपका राजा (रैनमंजूषाका पिता)
भूमंडल—कुमकुमद्वीपका राजा (गुणमालाका पिता)
धवल सेठ—कोशंबीपुर नगरका सेठ जी
सुमत प्रकाश—धवल सेठका मंत्री
कुमत प्रकाश—धवल सेठका मंत्री

नाटक पात्र स्त्रियोंके नाम

कुन्दप्रभा—राजा अरीदमनकी पटराणी (श्रीपालकी माता)
निपुणसुन्दरी—राजा पहुपालकी पटराणी
सुरसुन्दरी—राजा पहुपालकी बड़ी पुत्री
मैनासुन्दरी—राजा पहुपालकी छोटीपुत्री (श्रीपालकी पटराणी)
कंचनमाला—राजा कनककेतू की पटराणी
रैनमंजूषा—राजा कनककेतू की पुत्री (श्रीपालकी राणी)
रत्नमाला—राजा भूमंडलकी पटराणी
गुणमाला—राजा भूमंडलकी पुत्री (श्रीपालकी राणी)

—:S:—

मैना सुन्दरी नाटक

पहिला ऐक्ट

राजा पहुपाल और मैनासुन्दरी की
तक़दीर व तदबीर पर तकरार ॥
मैना सुन्दरी का श्रीपाल कुष्टी के
साथ ब्याह होना और बनको
चला जाना ॥

३

परियोंका कंवर श्रीपाल कोटीभट के दरबार में आने की मुबारकबादी गाना ॥

चाल—(नाटक) गावोरी सब मिलके बधय्यां ॥

छाएरी धन शुभके बदरवा । आए हैं कोटी भट राजा ।
चुनचुनके फूल बरसावोरी–जश गावोरी-गुण गावोरी–
धन शुभके बदरवा ॥ छाएरी० ॥

१ परी–सागरसा धीर देखो–वीरों में वीर देखो ॥
हां बेनज़ीर देखो–सबका हितकार है ॥

२ परी–प्यारी युवराज देखो–सरपै है ताज देखो ॥
सारी समाज देखो–जय जय जयकार है ॥

३ परी–नैना पसार देखो–आनन्द अपार देखो ॥
मोतियनका हार देखो–देता बहार है ॥

४ परी–कैसी है आन देखो–तरकशमें बान देखो ॥
करमें कमान देखो–भुजबल अपार है ॥

४

श्रीपालका दरबारमें आना और राजाका युवराज पद (वलीअहद) देना ॥

चाल—(कवाली) सेवें सारे सुर नर मुनि तेरा द्वार ॥

आवो कोटी भट सुन श्रीपाल राज ॥ टेक ॥
तू कुरु भूषण रहित विदूषण । धर्म निपुण रघुकुलकी लाज ।१।

अरिदलखंडन अति बलमंडन। दूं तोहेपदयुवराज आज ॥ २॥
तु जग प्यारा प्राणाधारा। धरूं सर पर मोतियनका ताज ॥ ३॥
(सर पर ताज रखना)

५

परियोंका मुबारक बाद गाना ॥
चाल—(नाटक) जय ऋषभेश्वर कृपा करो ॥ भवसागरसे पार करो ॥

कोटीभट युवराज बना-हां सबका सरताज बना ॥ टेक ॥
हितकारी युवराज तूही-बलधारी महाराज तूही ॥
सबको तू सुख दायक, है सरताज बना ॥ कोटी० ॥ १ ॥
हो तेरा इक़बाल बड़ा-जश फैले जग माहीं सदा ॥
तू है सब गुण लायक, कुलकी लाज बना ॥ कोटी० ॥ २ ॥
हम सब मिल अर्दास करें, तन मन धन सब वार करें ॥
परमानन्द शुभ दायक, है दिन आज बना ॥ कोटी० ॥ ३ ॥

सीन २
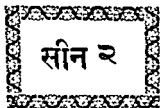
राज महलका परदा ॥

६

महाराज अरिदमनका मरजाना और रानी कुन्दप्रभाका राजा के
वियोग में रंज करते हुये नज़र आना और श्रीपालका
माताको धीर बंधाना ॥

चाल—(ग़ज़ल सोरठी) मैं वही हूं प्यारी शकुन्तला तुम्हें याददो कि न याददो

प्यारी मां भजो जिनराज को, ज़रा दिलको सब्रोक़रार दो।

जो कुछ होनाथा सोतो होचुका, अब रंजोग़मको निवारदो॥१॥
सर मौत सब के सवार है—यहां रहना दिन दो चार है ॥
नहीं जग में कोई भी सार है, ज़रा दिलमें अपने विचारलो॥२॥
मेरे तात-तुम बेज़ार हो, कैसे जीको मेरे क़रार हो ॥
अब मात तुम्ही सुखतार हो, तुम्ही तात तुम्ही सरकार हो ॥३॥
तेरा क्षत्री कुल अवतार है, तेरा कोटी भट सा कुमार है ॥
फिर क्यों यह हालते ज़ार है, ज़रा दिलको अपने क़रारदो ॥४॥
मै निभाऊंगा अपना परन, नहीं टारूं तेरे कभी वचन ॥
करूं सेवा आपकी रातदिन, जैसा हुक्म करके विचार दो ॥५॥

७

माता का जवाब ॥

चाल—(ग़ज़ल) पहलू में यार है तुझे उसकी ख़बर नहीं ॥

बेटा पती का रंज निवारा नहीं जाता ॥
मैं क्या करूं यह दर्द सहारा नहीं जाता ॥ १ ॥
तू आप जाके तख्त को अपने सम्हार ले ॥
मेरेसे कोई काम संवारा नहीं जाता ॥ २ ॥
नीती से राज कीजियो राजा का धर्म है ॥
बस और मुझ से ज्यादे विचारा नहीं जाता ॥ ३ ॥

८

श्रीपाल का जवाब ॥

चाल—(ग़ज़ल) कहां लेजाऊं दिल दोनों जहां में इसकी मुश्किल है ॥

तुझे यूं छोड़ कर दुख में राज करने को जाऊं मैं ॥

मेरे से हो नहीं सकता हुकम कैसे बजाऊं में ॥ १ ॥
तुम्हें क्या रंज अय माता जो में हाज़िर हूं सेवा में ॥
धरम जो पुत्र का होगा निभा करके दिखाऊं में ॥ २ ॥
बनेगा जैसा कुछ मुझ से करूंगा आपकी सेवा ॥
रहूंगा तेरी आज्ञा में चरन में सर झुकाऊं में ॥ ३ ॥
छोड़ कर रंज अय माता करो आज्ञा जो मर्ज़ी हो ॥
हुकम जो आपका होगा सर आंखों से बजाऊं में ॥ ४ ॥

९

माता का शोक तजना और श्रीपाल को राज करने की आज्ञा देना
और श्रीपाल के सिर पर ताज रखना ॥

चाल—(ग़ज़ल) कहां लेजाऊं दिल दोनों जहां में इसकी मुशकिल है ॥

राज के काम में मनको लगाना ही मुनासिब है ॥
राज का भार सर अपने उठाना ही मुनासिब है ॥ १ ॥
प्रजा की पालना करना यही है धर्म राजा का ॥
तुम्हें इस धर्म को बेटा निभाना ही मुनासिब है ॥ २ ॥
न कर कुछ सोच तू मेरा सबर अब कर लिया मैंने ॥
तुझे मेरी तरफ़ से ग़म हटाना ही मुनासिब है ॥ ३ ॥
चिरनजीवो मेरे बेटा धरूं सिरपे ताज तेरे ॥
पिता का ताज सर अपने सजाना ही मुनासिब है ॥ ४ ॥

१०

श्रीपाल का सिंहासन पर बैठना परियों का आना और मुबारकबाद गाना
चाल—(नाटक) तेरी छवि पर है प्यारी ॥

प्यारे बादे बहारी चली चम्पा मंझारी ।

हुई आनंद सारी-नगरिया आन ॥
तेरे सरपे विराजे-ताज हीरों का साजे ।
सारे राज्यों में राजा तुही वलवान ॥
दूनी दूनी हो शान-होवें दुशमन हैरान ।
तावे हों सारे जमीन आसमान ॥
हो मुवारक यह ताज-तुझे चम्पा का राज-वोलो सारी समाज
होवे जय जय जय, जय जय जय, जय जय जय, ॥प्यारी०॥

सीन ३
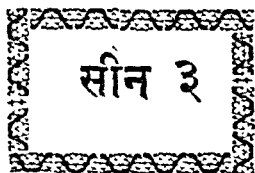
दरवार का परदा

११

कुछ वर्ष राज करने के बाद राजा श्रीपाल और उसके सातसौ वीरों को कुष्ट होना ॥ शहर में दुर्गंध फैलना ॥ प्रजा का दुखित होकर वीरदमन (श्रीपाल का चचा) को साथ लेकर राजा श्रीपाल के दरवार में जाना और अर्ज़ करना।

चाल—अपनी हमें भक्ती का कुछ दीजो दान ॥

परजा की अर्जी को सुनिये सरकार ॥
तू दयावान हितकारी । है धर्मराज सुखकारी ॥
सुनो तुम सवकी पुकार ॥ १ ॥
तेरे राज महा सुख पायो । दुख भयका नाम नसायो ॥
सभी जाने संसार ॥ २ ॥

अब कष्ट भयो इक भारी । नहीं मुखसे जाए उचारी ॥
तेरे आए दरबार ॥ ३ ॥
यह कर्म महा अन्याई । तुम भयो कुष्ट दुख दाई ॥
हमें है सोच अपार ॥ ४ ॥
फैली दुर्गंध अती भारी । दुर्गंधित नगरी सारी ॥
भए व्याकुल नर नार ॥ ५ ॥
इस नगर रहा नहीं जावे । सब प्रजा महा दुख पावे ॥
शोक सागर मंझधार ॥ ६ ॥
कुछ करुणा चित में कीजे । अब आयस हमको दीजे ॥
चलें तज कर घर बार ॥ ७ ॥

१२

वीरदमन का राजा श्रीपाल से कहना ॥

चाल—यह कैसे बाल बिखरे हैं यह क्यों सूरत बनी गमकी ॥

प्रजा की धीर अय राजा बंधानाही मुनासिब है ।
बसे जिस तौर से परजा बसाना ही मुनासिब है ॥ १ ॥
रय्यत बिन नहीं शोभा कहेगा कौन फिर राजा ।
मेल राजा में परजा में बनानाही मुनासिब है ॥ २ ॥
प्रजा रहती है राजा के अमन आमान साए में ।
तुम्हें परजा का दुख मेटा मिटानाही मुनासिब है ॥ ३ ॥

१३

प्रजा की अर्ज़ी सुनकर राजा श्रीपालका सिंघासन से उठ खड़ा होना। प्रजा को धीर बंधाना और अपने चचा वीरदमन को राज सौंपकर आप वन में जाने को तय्यार होना ॥

चाल—(नाटक) दूटो हाने का कैसा वहाना हुआ ॥

महाराजा की आज्ञा को सिरपे धरूं महाराजा की ॥
अपनी परजाकी सब पीर छिनमें हरूं-महाराजा की ॥ टेक॥
लोसंभालो यह राज,रखियोपरजाकी लाज, रक्खोसरपेयहताज
में नगर तजके बनको पयाना करूं ॥ १ ॥
रखियो परजाकी कान, समझो पुत्र समान, प्रजा राजाके प्रान।
इनकी खातिर में मंजूर जाना करूं ॥ २ ॥
सुन, गया श्रीपाल, होगी माता वेहाल, उसका रखना खयाल।
सारा घर वार तेरे हवाले करूं ॥ ३ ॥
जो बचें मेरे प्रान, होके इन्द्र समान, फिर संभालूंगा आन।
वरना वनही में जाके रवाना करूं ॥ ४ ॥
सुनलो परजाके वीर, टुक धरो दिलमें धीर, ऐसे होना अधीर।
में अभी जाके वनमें ठिकाना करूं ॥ ५ ॥

१४

राजा श्रीपालको जाते हुय देखकर प्रजाका राजा को रोकना और अर्ज़ करना ॥

चाल—(गज़ल चलत) अब हिज्रमें रहना हमें मंज़ूर नहीं है ॥

महाराज का जाना हमें मंजूर नहीं है ॥

मंजूर नहीं है हमें मंजूर नहीं है ॥ महाराज० ॥ टेक ॥
आज्ञा हमें दीजे कि हम परदेशको जावें ।
बनोबास जाना आपका मंजूर नहीं है ॥ १ ॥
बिपता पड़ेगी हमपे जो सहलेंगे सारी ।
दुखपाना महाराज का मंजूर नहीं है ॥ २ ॥

१५

राजा श्रीपाल का फिर प्रजा को समझाना और आप बनोबास को
सातसौ कुष्टी बीरों को लेकर रवाना होना ॥

चाल—यह कैसे बाल बिखरे हैं यह क्यों सूरत बनी ग़म की ॥

दुखी परजामें सुख भोगूं यह हरगिज हो नहीं सकता ।
मुझे जानेदो मत रोको कि ऐसा हो नहीं सकता ॥ १ ॥
प्रजापे जान देदेना यही है धर्म राजाका ॥
तजूं मैं धर्मकी मर्य्याद ऐसा हो नहीं सकता ॥ २ ॥
हुकम जो दे दिया मैंने सुनो अबतो वही होगा ॥
बचन क्षत्रीका उलटा हो सो हरगिज हो नहीं सकता ॥ ३ ॥
जो अच्छा होगया तो फिर मैं आकर राज भोगूंगा ॥
मगर अबतो मेरा रहना यहां पे हो नहीं सकता ॥ ४ ॥
मैं जाता हूं खुशी रहना नहीं ग़म मेरे जानेको ॥
करममें जो लिखा होगा कमोबेश हो नहीं सकता ॥ ५ ॥

सीन ४

चम्पापुर नगर का परदा ।

१६

चम्पापुर की प्रजा का राजा श्रीपाल के वियोग में रोते हुवे नज़र आना
चाल—तूने फ़लक यह क्या किया हाय ग़जब सितम ग़जब ॥

तूने करम यह क्या किया हाय ग़जब सितम ग़जब ॥
वनोवास में राजा गया हाय ग़जब सितम ग़जब ॥ १ ॥
माताको रोती छोड़के राजसे मूंहको मोड़के ॥
हमरे लिये यह दुख सहा हाय ग़जब सितम ग़जब ॥ २ ॥
राजा हमारा प्रानथा सारी प्रजाका मानथा ॥
सूना नगर यह होगया हाय ग़जब सितम ग़जब ॥ ३ ॥

राज महल का परदा ।

१७

नोट—

(१) मालवा देश में उज्जैन नगरी एक बहुत बड़ा शहर था जिसमें राजा पहुपाल राज करता था ॥ इस राजा के निपुण सुन्दरी पट रानी थी और

सुरसुन्दरी बड़ी और मैनासुन्दरी छोटी दो पुत्री थीं ॥ मैनासुन्दरी अति सुन्दरी और सुशीला थी और राजा व रानी व सब दरबारी उसको अधिक प्यार करते थे ॥ मैनासुन्दरी को जैन मतकी श्रद्धा थी ॥ जब यह दोनो पुत्री आठ वर्ष की होगईं तो राजा ने इनको विद्या पढ़ने के लिये भेज दिया ॥

(२) सुरसुन्दरी एक पांड़े जीके पास पढ़ने लगी जब यह सब विद्या पढ़ चुकी तो पांड़े जी सुरसुन्दरी को लेकर राजा के दरबार में आते हुवे ॥

(३) मैनासुन्दरी ने प्रथम एक श्रीमती अरजकाजी के पास अनेक विद्या पढ़ी और फिर एक श्रीमुनी महाराज के पास धार्मिक विद्या पढ़ने लगी। जब यह समस्त विद्या पढ़ चुकी तो श्रीमुनी महाराज से आज्ञा लेकर वापिस अपने घर माता के पास आती हुई ॥

१८

मैनासुन्दरी का अपनी माता के पास आना और बात चीत करना ॥

मैना०-जयजिनेन्द्र,माताजी,आपके चरणार्विन्दको नमस्कार

माता—आवो बेटी मैनासुन्दरी राजदुलारी मेरे प्राणों से प्यारि (छाती से लगाना) ॥

मैना-माता जी मैंने श्रीमती अरजकाजी और श्रीमुनी महाराज की कृपासे श्री जैनधर्म के समस्त शास्त्रों को पढ़ लिया है ॥ आज अपने गुरूकी आज्ञा लेकर आपके चर्णों में आई हूं ॥

माता—धन्न हो बेटी जो तुमने ऐसी छोटी अवस्था में श्री जैन धर्म के शास्त्रों को पढ़ लिया ॥ तुम चिरकाल जीवो और संसारके सुख भोगो ॥

मैना॰-हेमाता पिताजी कहां हैं उनके दर्शन करने की अभिलाषा है ॥

माता॰-बेटी महाराजा दरबारमें हैं चलो मैं तुमको ले चलती हूं ॥

मैना॰-माताजी यदि आपकी आज्ञा हो तो मैं प्रथम श्रीमंदर जी में जाकर भगवान की पूजा कर आऊं तो मेरी समस्त विद्या सुफल हो, फिर आपके साथ दरबार में चलूंगी ॥

माता॰-बहुत अच्छा बेटी जाओ पूजाकी सर्व सामग्री लेजाओ ॥ (मैनासुन्दरी का चला जाना)

सीन ६
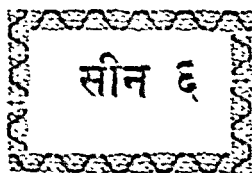
श्रीजिनमंदिर का परदा

१९

मैनासुन्दरी का भगवान की पूजा करना ॥

(चाल । पद्धरी छन्द ॥

जय जय जय ॥ निस्मर्यनाम, निस्सर्यनाम, निस्मर्यनाम ॥
जय सत पथ दर्शक निर्विकार ।

जन मन हरशक महिमा अपार ॥
जय अजर अमर जग तरन तार ॥
चित दृग बल सुख मंडित अपार ॥ १ ॥
जय परमशांत मूरत अनूप ।
तुम चरण नमत सब इन्द्र भूप ॥
जय जग भूपन चेतन सरूप ।
परमातम परम पावन अनूप ॥ २ ॥
जय सकल ज्ञेय ज्ञायक जिनंद ।
अरि दोप रहित आनंद कंद ॥
जय निज आनंदरस लीन धीर ।
दुख पाप हरण सुख करण वीर ॥ ३ ॥

दरवार का परदा

२०
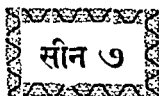
राजा पहुपाल का मंत्री सहित दरवार में बैठना ॥ पांडे जी का सुरसुन्दरी को लेकर दरवार में आना ॥

पांडे—महाराज की जयहो

राजा—आइये महाराज विराजिये आपके चर्णोंमें नमस्कार हो।

(पांडे का कुरसी पर बैठ जाना)

सुर०—पिता जी आपके चर्णारविन्द को नमस्कार हो ।

राजा—बेटी सुरसुंदरी मेरी प्यारी राजकंवारी चिरंजीव रहो।

(छाती से लगाकर कुरसी पर बिठाना)

पांडे—हे राजन मैंने आपकी पुत्री सुरसुंदरी को बड़े परि-
श्रमसे अनेक विद्या पढ़ाई हैं अब यह समस्त विद्या
पढ़ चुकी है आपके सामने हाज़िर है ।

राजा—हे महाराज आपने बड़ी कृपा की यह (एक थाली में
बहुत सी असरफियां लेकर (दान आपकी भेट है।

पांडे—(दान लेकर) महाराजा की जय हो और यह पुत्री
सुरसुंदरी मन वांछित राज के सुख भोगियो ।

(चला जाना)

राजा—हे राजदुलारी सुरसुंदरी कहो कौन कौन अपूर्व
वस्तू पुन्य से प्राप्त होती हैं ॥

सुर०—(दोहा)विद्या जोबन रूप धन, और पती का नेह॥
राजा पुन्य से मिलत हैं, मन वांछित सुख येह ॥

राजा—(दोहा) पुत्री जो वर मन बसो, सो मांगो इस आन।
साफ बता मोसे कहो, करो नहीं कुछ कान ॥

सुर०—(दोहा) कोशम्भीपुर राय का, पुत्र महा गम्भीर ।
सोही मेरे मन बसा, हरिवाहन बरवीर ॥

राजा—बेटी उसही वीर से करूं तुम्हारो व्याह ॥
सुख भोगो संसार में यही हमारी चाह ॥

२१

परियों का दरबार में आना और मैनासुन्दरी के आने की
मुबारकबाद गाना ॥

चाल—(नाटक) बादे बहारी आके पुकारी गुलकी सवारी आती है ॥

आज हमारी राजदुलारी मैना प्यारी आती है ॥
मानो प्यारी आनन्दकारी बादे बहारी आती है ॥ १ ॥
राजा की प्यारी राज कंवारी प्रान पियारी आती है ॥
छब है न्यारी जोबन वारी वह मतवारी आती है ॥ २ ॥
उठती जवानी में सुन जिन वानी पढ़कर आई जैन का शासन ॥
है सुखदानी धर्म निशानी सुनकर वानी खुश हो तन मन ॥३॥
मद भरे नैना कोयल बैना चन्दर बदना चन्दर आनन ॥
तारों में चन्दर मैना सुन्दर धर्म धुरंदर शील शरोमन ॥ ४ ॥
समकित धारा भर्म निवारा विद्या पाई फिर कर बन बन ॥
तन मन वारें धनको निसारें गुण उचारें उसका छिन छिन ॥५॥

२२

महारानी निपुण सुन्दरी का मैनासुन्दरी सहित दरबार में आना ॥
राजा व सब दरबारियों का खड़ा होना (वार्तालाप) ॥

सुर०—(खड़े होकर) माता जी को प्रणाम ॥

माता–(छाती से लगाकर) प्रसन्न तो है बेटी सुर सुन्दरी

सुर०—माता जी आपकी कृपा है ॥

मैना०—जयजिनेन्द्र ॥ पिता जी आपके महा आनन्दकारी चर्णारविन्द को बारम्बार प्रणाम है ॥

राजा—आवो बेटी मैनासुन्दरी मेरी प्यारी राजदुलारी। आज तुझको देख मेरे चितको हुवाहै आनन्द भारी

(मैना सुन्दरी को छाती से लगा कर प्यार करना और कुरसी पर बिठाना और रानी जी को सिंघासन पर बिठाना)

मैना०-हेपिताजी श्रीमती अरजिकाजी व श्रीमुनी महाराज जी की कृपासे मैं श्री जैन धर्मकी समस्त विद्या पढ़कर आज आपके चर्णों में आई हूं ॥ और श्री जिनेन्द्र भगवान का पूजन करके यह (कटोरी सामने करके) गंदोदक आपके लिये लाई हूं लीजिये मस्तक पर चढ़ाइये ॥

राजा—(गंदोदक की कटोरी लेकर राजा और रानी ने गंदोदक मस्तक पर चढ़ाया) बेटी मैनासुन्दरी इस गंदोदक की शास्त्रों में क्या महिमा है वर्नन करो

मैना०—बहुत अच्छा महाराज सुनिये ॥

२२

मैनासुन्दरी का गंदोदक की महिमा वर्णन करना ।

चाल—([illegible]) [illegible]

महाराज लाई हूं मैं । जलन्हवन श्रीजिनवर का ॥ टेक ॥

इंद्रादिक याको तरसें । परसत आनन्द रस बरसे ॥
यह गंदोदक सुखकारी । यानी है दुख परहारी ॥
हो जनम सुफल सुर नर का ॥ १ ॥
इसको जो अंग लगावे । कुष्टी सुन्दरता पावे ॥
अंधा संसार निहारे । यह पाप करम को जारे ॥
दे पद हरीबल और हर का ॥ २ ॥
जब जनम हुवा तिर्थंकर । सागर जल लाए भर कर ॥
सुरपत गागर कर धारे । श्रीजिनवर के सर ढारे ॥
हर्षा मन शची इन्दर का ॥ ३ ॥

२४

राजा का धनवाद देना और मैनासुन्दरी से दूसरा सवाल करना ॥

राजा—(शैर) धन है जो तेरा धर्म में ऐसा बिचार है ॥
सब राज पाट मेरा तेरे पे निसार है ॥ १ ॥
लौकीक विद्या कौन कौन सी पढ़ी तूने ॥
बतला सो सही सुन्ने का मेरा बिचार है ॥ २ ॥

२५

मैनासुन्दरी का जवाब ॥
चाल—छप्पय छन्द ॥

ब्रह्मज्ञान चातुरी, यान विद्या हय वाहन ॥
परम धरम उपदेश, बाहूबल जल अवगाहन ॥ १ ॥

सिद्ध रसायन करण, ताल लय तत स्वर गावन।
वरसङ्गीत प्रमाण, नृत्य वाजित्र बजावन ॥ २ ॥
व्याकर्ण पाठ मुख न्यायनय, ज्योतिष चक्र विचार कर।
वैद्यक विधान नर चिन्हता, पढ़ी विद्यादशचारवर ॥ २ ॥

२६

राजा का खुश होना और तीसरा सवाल करना ॥ [शैर]

खुशी से देताहूं बेटी बहुत धनबाद मैं तुझको।
धर्म अरु कर्म में क्या क्या हुआ वोभी बता मुझको ॥

२७

मैनासुन्दरी का जवाब (शैर)

चार अनुयोग की विद्या पढ़ी मैंने ध्यान करके।
रतन त्रय धर्म दश लक्षण समझ लिये हैं ज्ञान करके ॥ १ ॥
स्याद्वादांग की चरचा जो जिनमत की निराली है ॥
न्याय और तर्क षट दर्शन सभी देखे छान करके ॥ २ ॥
करम मीमांसा जिनमतकी है मशहूर दुनियां में।
पढ़ी है खासकर मैंने ठीक मनमें मान करके ॥ ३ ॥

२८

राजा का खुश होना और चौथा व पांचवां सवाल करना ॥ शैर

बतला तो बेटी दुनियां में मुशकिल है कौन चीज ॥
तो जगतमें सबसे अमोलक है कौन चीज ॥

२९

मैनासुन्दरी का जवाब ॥

चाल—यह कैसे बाल हैं बिखरे यह क्यों सूरत बनी गमकी ॥

ज्ञान दुर्लभ है दुनियां में धरम सबसे अमोलक है ॥
यही भगवान ने भाषा धरम सबसे अमोलक है ॥ १ ॥
रखो तन अपना धनदेकर बचाओ लाज तनदेकर ।
धरमपर वारदो सबको धरम सबसे अमोलक है ॥ २ ॥
धरमके सामने सब हेच राज और पाट दुनियां का ॥
धरमही सारहै जगमें धरम सबसे अमोलक है ॥ ३ ॥
धरमके वास्ते सीता किया परवेश अगनी में ।
रामतज राज बन पहोंचे धरम सबसे अमोलक है ॥ ४ ॥
धरमके वास्ते गर जान भी जाए तो देदीजे ।
समझ लीजे यकी कीजे धरम सबसे अमोलक है ॥ ५ ॥

३०

राजा का खुश होना और छठा सवाल करना [शेर]

है धन्यवाद बेटी तू है गुण भरी ॥
जो छोटी उमर में यह विद्या पढ़ी ॥ १ ॥
बहुत खुश हुआ मैं तुझे देखकर ॥
तू जा कर पसंद अब कोई ताजवर ॥ २ ॥

३१

पिता की बात सुनकर मैनासुन्दरी का लज्जा करना और
उदास होकर जवाब देना ॥

चाल [दुमरी] बिरी लेरे लेरे लेरे मेरे माथे का सिंगार

स्वामी बोलो बोलो बोलो जरा वाणी को संभार ॥ टेक ॥

क्या प्रश्न आपने किया तजी क्यों लज्जा सुखकार ॥
सुन बात आपकी होता है हृदयमें दुख भार ॥ १ ॥
है लज्जाही परधान श्रीजिन शासन के मंझार ॥
बेटी से पिताको लज्जा रखनी चाहिये हरबार ॥ २ ॥
जो फिरूं देखती आपवरूं कोई धन कुंवार ॥
मेरे लगे शील को दाग शील सतियों का है सिंगार ॥ ३ ॥

२२

राजा का जवाब [टेर]

बेटी तू करती किस लिये सोचो विचार है ।
क्या धर्म और शीलका इसमें विगार है ॥ १ ॥
कहदे तू साफ जो तेरे मनमें विचार है ॥
जा कर पसंद कोई तुझे अखतियार है ॥ २ ॥

२३

मैनासुन्दरी का जवाब

चाल—(मुहब्बत) पर हैंने बात दिचारे हैं पर क्यों हुक्म करी इनको ।

पिताजी आपका उत्तर मेरे से हो नहीं सकता ।
मैं अपने आप वर देखूं यह हरगिज हो नहीं सकता ॥१॥
पिताजी है बराबर ना सुनातिन आपकी बातें ।
कहूं यह आपकी बातें सती से हो नहीं सकता ॥ २ ॥
जो कुलवंती सती होती हैं लोका लाज रखती हैं ॥
वह अपने आप वर ढूंढें मो ऐसा हो नहीं सकता ॥ ३ ॥
सकल और कठने दी नन्दा सुनन्दा आदि ईश्वर को ।

वही मारग हमारा है सो उलटा हो नहीं सकता ॥ ४ ॥
न वर मांगा यही सुन्दर अरजिका हो गई दोनो ॥
तर्जू में रीति सतियों की सो ऐसा हो नहीं सकता ॥ ५ ॥

३४

राजा का जवाब (शैर)

सुरसुन्दरी ने जिस तरह मांगा है अपना वर ।
उसको पती दिया है कोशम्भी का ताजवर ॥ १ ॥
इसही तरह से तू भी किसीको पसन्द कर ।
मुलकों में देश द्वीप समंदर में ढूंढकर ॥ २ ॥

३५

मैनासुन्दरी का जवाब

चाल-(ग़ज़ल) यह कैसे बाल बिखरे हैं यह क्यों सूरत बनी ग़मकी ॥

पिताजी धर्म के प्रतिकूल मुझसे हो नहीं सकता ॥
जो सर चाहो तो लेलीजे मगर यह हो नहीं सकता ॥ १ ॥
जो सुरसुन्दरने वर मांगा कुगुर संगत का फल जानो ॥
मैं जिन शासन की वेता हूं मेरे से हो नहीं सकता ॥ २ ॥
मात और तात अच्छा देख वर कन्या को देते हैं ॥
फिर आगे भाग कन्याका कमोबेश हो नहीं सकता ॥ ३ ॥
जिसे चाहो उसे दीजे पिताजी आपकी मरजी ।
करममें जो लिखा होगा वह उलटा हो नहीं सकता ॥ ४ ॥
जगतमें जितने सुख दुख हैं वह सब कर्मों से मिलते हैं ।

जो मेटे कर्म की रेखा किसी से हो नहीं सकता ॥ ५ ॥
फिरूं घर ढूंढती मैं शीलमें दाग लगाता है ॥
लगाऊं दाग अपने शील को सो हो नहीं सकता ॥ ६ ॥

२६

राजा का उत्तर (शेर)

न कर बेटी मेरे से इस तरह इन्कार की बातें ।
नहीं लगती मुझे अच्छी तेरी तकरार की बातें ॥ १ ॥
पसंद करले किसी राजा को जाकर मानले कहना ॥
धरी रहने दे तू अपने शील सिंगार की बातें ॥ २ ॥

२७

मैनासुन्दरी का उत्तर ।

चाल—अब कैसे कहूं सजना म्हारी ।

मत बेटी पे रोष करो जी पिता ॥
शील धर्म तुम्हारे चरनन में ॥ कर करुना जी नेक पिता ॥टेक॥
आप का हुक्म बजालाने में कुछ आर नहीं ॥
लाज तजने को मगर राजा मैं तय्यार नहीं ॥
धर्म प्रतिकूल कोई बात नहीं मानूंगी ॥
सर मेरा चाहो तो लेलो जरा इन्कार नहीं ॥
मत नाहक रोष करो जी पिता ॥ मत० ॥ १ ॥
हे पिता आप जिसे चाहें उसे दे दीजे ॥
आप घर ढूंढने जाने को मैं तय्यार नहीं ॥
लाज है धर्म सती का इसे छोडूं क्यों कर ॥
धर्म के बदले में दुनिया की दरकार नहीं ॥

टुक नीति को सोच करो जी पिता ॥ मतं० ॥ २ ॥

३८

राजा का सातवाँ सवाल (दोहा)

अच्छा बेटी जो तुझे, यह नहीं बात सुहाय ॥
तो मैं तेरे वास्ते, बर ढूंढूं खुद जाय ॥ १ ॥
पर तुजो यह कहत है, सुख दुख करमन हाथ ॥
जो सुख मैं तोहे देत हूं, वह है किसके हाथ ॥ २ ॥

३९

मैनासुन्दरी का जवाब ॥

चाल—(ग़ज़ल) एक तीर फेंकता जा तिरछी कमान वाले ।-

फैला हुआ है राजा, करमों का जाल सारे ।
दरिया पहाड़ नारे क्या चांद सूर्य तारे ॥ १ ॥
त्रियंच नर सुरा सुर, ब्रह्मा ऋषी हरिहर ।
फिरते हैं सब चराचर, कर्मों के मारे मारे ॥ २ ॥
क्या आन कान वारे, क्या शाह शानवारे ।
करमों के आगे सबके, जाते हैं मान मारे ॥ ३ ॥
रावण ने हरनाकुश ने क्या क्या नहीं किया था ।
आखिर करम बली से, सबही गये हैं हारे ॥ ४ ॥
सुख और दुख का देना, कर्मों के हाथ में है ।
चलती नहीं किसी की, करलो यतन अपारे ॥ ५ ॥

४०

राजा का जवाब [शैर]

सुख तुझे मैंने दिया और तू कहे तक़दीर ने ।

क्या यही तुझको पढ़ाया है गुरु मुनिवीर ने ॥ १ ॥
करदिया हैरां मुझे उलटी तेरी तक्ररीरने ॥
कुछ नहीं तक़दीर बतलाया यही तदबीरने ॥ २ ॥

४१

मैनासुन्दरी का जवाब ॥
चाल—(सारंग) कोई चातुर ऐसी सखी न मिली ॥

राजा निन्दा गुरु की न कीजे जरा ।
ऐसी पाप की बातें मुझे ना सुना ।
करें चित्र विचित्र यह क्या क्या करम ।
तुझे करमों का राजा नहीं है पता ॥ १ ॥
मैंने पहले जनम शुभ कर्म किये ।
भोगे भोग सो घर तेरे जन्म लिया ॥
राजा मेरे करम में यही था लिखा ।
इसमें तूने किया क्या बात तो जरा ॥ २ ॥
पहले भवमें जो करती मैं पाप करम ।
किसी नीच के घर मेरा होता जनम ।
दुख पाती जो सहती मैं सीत गरम ।
क्या तू करता मदद मेरी दे तो बता ॥ ३ ॥
क्या तू सुख मोहे देनेका मान करे ।
राजा मानका करना नहीं है भला ॥
देखो मान किया गढ़लंक पती ।
भई कैसी गती क्या नहीं है सुना ॥ ४ ॥
देखो चक्रसभूमने मान किया ।

सो वह सागर बीचमें जाके मरा ।
मान करने का अच्छा समर है नहीं ।
मत मान करे मेरी मान कहा ॥ ५ ॥

४२

राजा का कोप करना और जवाब देना (शेर)

बस बस फ़जूल बात यह करती अक़ल नहीं ॥
इनसां के आगे कोई करम की असल नहीं ॥ १ ॥
करमों की क्या मजाल जो सुख दुख दें किसी को ।
इनसांके काम में है करम का दखल नहीं ॥ २ ॥
देखूंगा मैं भी तेरे करमके जहूर को ।
जल्दीही कुछ दिनों में अगर आज कल नहीं ॥ ६ ॥

४३

जवाब मंत्री का ॥

चाल—हमारे दर्द दिल तुमसे सकोड़ा हो नहीं सकता ॥

अगरचे बीच में मेरा बोलना ना मुनासिब है ॥
मगर इस वक्त चुपरहना भी मेरा ना मुनासिब है ॥ १ ॥
समझके बोलना कन्या मे है मर्य्याद शासन की ।
तुम्हें बेटी से यूं तकरार करना ना मुनासिब है ॥ २ ॥
करम बलवान है दुनिया में जय राजा समझलीजे ।
मानमें आके झगड़े का बढ़ाना ना मुनासिब है ॥ ३ ॥
किया था मान रावनने हुई थी क्या गती देखो ।
करमको छोड़कर जाना कुमारग ना मुनासिब है ॥ ४ ॥

कोप को दूर कर राजा सुमत धारो विचारो तो ।
कुमत को अपने हृदय में बसाना ना मुनासिब है ॥ ५ ॥

४४

जवाब राजा का (शैर)

मंत्री कायल नहीं हूं मैं किसी तक़दीर का ॥
दुनिया जो कुछ है नतीजा है सिरफ़ तदबीर का ॥ १ ॥
मैनासुन्दरी को हुवा निश्चय जो है तक़दीर का ।
यह सरासर है कसूर उसताद बद तदबीर का ॥ २ ॥
देखूंगा मैं भी बल इस मैना की तक़दीर का ।
मानती जो है नहीं दावा मेरी तदबीर का ॥ ३ ॥

४५

जवाब मैनासुन्दरी का

चाल (सारंग)—कोई चातुर ऐसा सखी ना मिली ॥

मेरे करमों को राजा तू देखेगा क्या ।
तुझे कर्म बिना राज कैसे मिला ॥
मुझे निश्चय है राजा कहूंगी यही ।
मुझे जो कुछ मिला है करम से मिला ॥ १ ॥
है पिता जी करम की विचित्र गती ।
चाहे छिनमें यह राजा को रंक करे ॥
इन करमों की रेल में मेल धरे ।
मुझे कोई भी ऐसा बशर ना मिला ॥ २ ॥
राजा राम का था दरबार लगा ।
उसे राजतिलक जब होने लगा

देखो राजा यह कर्म हैं कैसे बली।
वनोवास मिला है छतर ना मिला ॥ ३ ॥
श्री कृष्ण ने लाखों ही यत्न किये।
किसी तौर से द्वारका शहर बचे ॥
जब आगलगी किसुकी ना चली।
जल ढूंडा तो जल भी किधर ना मिला ॥ ४ ॥
सती सीता अगन परवेश हुवा।
तब देवों ने अगनी को नीर किया ॥
जब रावण सीता को लेके चला।
क्यों ना कोई भी सुर या असुर ना मिला ॥ ५ ॥
श्री आदि जिनेश्वर ज्ञानी बड़े।
जिनकी सेवा में इन्द्र धनेन्द्र खड़े ॥
जब आकरके करमों के बन्द पड़े।
बारा मास लों जल किसी घर ना मिला ॥ ६ ॥
राजा कर्म लिखा टाला टलता नहीं।
चाहे कोई अनेक उपाय करे।
यही निश्चय करो मत मान करो।
कभी मान का अच्छा समर ना मिला ॥ ७ ॥

४६

जवाब राजा का (शैर)

है सुता करती है क्या मुझको नसीहत उलटी।
मुझको लगती है तेरी सारी नसीहत उलटी ॥ १ ॥

४९

मैनासुन्दरी का जवाब देना और दरबार से चला जाना ॥

चाल—हाय अच्छे पिया यही देश बुलाओ हिन्द में जो बसरावत है

जोड़ूं हाथ पिता जी मैं तुम आगे—चरणों में सीस नमाव
जैसा जी चाहे करो आपकी मरज़ी साहेब ॥
सर जुदा तनसे करो आपकी मरज़ी साहेब ॥
खींच शूलीपे धरो आपकी मरज़ी साहेब ॥
या बनोबास करो आपकी मरज़ी साहेब ॥
छोड़ूं नाहीं पिताजी निश्चय करमका दुक्खोंसे नहीं घबरा
करममें दुखही लिखा है तो क्या करे कोई ॥
बने जो बापही दुश्मन तो क्या करे कोई ॥
जहां पे न्याय न होवे तो क्या करे कोई ॥
धर्म का नाम न होवे तो क्या करे कोई ॥
कीजो मुआफ़ पिताजी दोष हमारा कर प्रणाम मैं जाव

(चलाजाना)

जंगल का परदा

५०
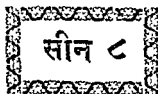
राजा श्रीपालका सातसौ कुष्टी वीरों के साथ उज्जैन नगरके जंगल में पहोंचना और अपने कर्मोंको निन्दा करना।

चाल—(नाटक) दिले नाशां को हम समझार जावेंगे ॥

देखें क्या क्या करम दिखलाए जाएंगे ।
जैसी करेंगे वैसी भरेंगे-अपने मनको यूंहीं समझाएजाऐंगे टेक
बापको सरसे मेरे तूने हटाया ज़ालिम ॥
अंगमें कुष्ट मेरे रोग लगाया ज़ालिम ॥
राज और पाट भी सब तूने छुड़ाया ज़ालिम ॥
मेरी माताको अलग मुझसे कराया ज़ालिम ॥
और जितना तेरा जी चाहे सताले ज़ालिम ॥
हमभी समतासे तेरे यह सदमे उठाए जाएंगे ॥देखें० ॥

५१

उज्जैनके राजा पहुपालका मंत्री सहित सैर करते हुए श्रीपाल के पास पहोंचना और श्रीपालसे बात करना (वार्तालाप)

राजा—अय प्रदेशी तू कहां से आया है, कैसा यह लशकर अपने साथ लाया है, क्यों तेरे तनको यह कुष्ट रोग लगाहुवा है किस कारण इस देशमें आना हुवा है ॥

श्रीपाल-(दोहा) राजा करमोंकी गती टाल सके नहीं कोय
कर्मोंके वशमें सभी होनीहो सो होय ॥ १ ॥
भ्रमत फिरें वनोवासमें दुखिया मैले भेश
विपताके दिन काटने आए तुमरे देश ॥ २ ॥

राजा—(शेर)फिकर इस कदर अपने दिलमें न कर ॥
तूइस देशको जानियो अपना घर ॥ १ ॥
मैं दूंगा तुझे वहुतसा मालोज़र ॥
दूं मैनासती अपनी लख्ते ज़िगर ॥ २ ॥

यहां ठैर कुछ देर आराम कर ॥
बुलाता हूं जल्दी तुझे जाके घर ॥ २ ॥

५२

मंत्री का राजा को कुष्टी के साथ मैनासुन्दरी का व्याह करने से रोकना और समझाना ॥

चाल—यह कैसे बाल बिखरे हैं यह क्यों सूरत बनी गमकी ॥

गजब करते हो राजा लाल सिंधुमें बगाते हो।
कलंकित करके कुल अपना लाज सारी गंवाते हो ॥ १ ॥
जुलम बेटीपे तो इतना नहीं करना रवा तुमको।
धरम और न्याय को क्यों आज पानीमें बहाते हो ॥ २ ॥
कहां वह सुन्दरी मैना कि जैसे चान्द पूनम का।
कहां यह नर महा कुष्टी नहीं दिलमें लजाते हो ॥ ३ ॥
जरा सोचो विचारो तो कहेगी क्या तुम्हें दुनिया।
तिलक अपयशका नाहक अपने मस्तक पर चढ़ाते हो ॥४॥

५३

राजा का मंत्री को नाराज़ होकर जवाब देना और उसका नगरको रवाना होना (शैर)

अय मंत्री ज़ुबान तुम अपनी को बंदकरो।
इस मामले में मेरे से ज्यादा न ज़िद करो ॥ १ ॥
मैनाका व्याह मैं इसी कुष्टी से करूंगा।
सुरपत भी अगर आवे तो हरगिज न टरूंगा ॥ २ ॥

जल्दी से चलके आज ही दरबार कीजिये।
सामान ब्याह कीजिये देरी न कीजिये ॥ ३ ॥

सीन ९

दरबार का परदा

५४
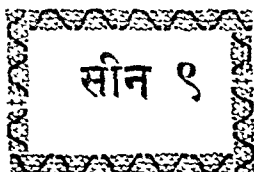
राजा पशुपाल और मंत्री का जंगल से लौटकर दरबार में पहोचना ॥
राजा का गुस्से में सिंघासन पर बैठना। परियों का गाना और
आपस में बात चीत करना ॥

चाल—यह कैसे बाल बिखरे हैं यह क्यों सूरत बनी गम की ॥

१ परी—भवें तनती हैं बल माथे पे है और तनके बैठे हैं।
किसी से आज बिगड़ी है कि वह यों तनके बैठे हैं।
२ परी—मेरी किसमत है गर सीधी वह सीधे होही जाएंगे।
चाहे वह मनके बैठे हैं चाहे वह तनके बैठे हैं।
३ परी—यूं बनके बैठना महफिल में उनका रंग लाएगा।
क़यामत बनके उट्ठेंगे भबूका बनके बैठे हैं।
४ परी—किसी के कहने करने से बुरा कुछ हो नहीं सकता।
हमें परवा नहीं हमसे अगर वह तनके बैठे हैं।

५५

राजा का दरबान को हुक्म देना (वार्तालाप)

राजा—अरे दरबान जाओ रानी जी से कहो कि राजा।

याद फ़रमाते हैं और सुरसुन्दरी व मैनासुन्दरी को भी दरबार में बुलाते हैं॥

दरबान—बहुत अच्छा महाराज अभी जाता हूं ॥

(चला जाना)

५६

दरबान का वापिस आना ॥ रानी जी का सुरसुन्दरी और मैनासुन्दरी के साथ दरबार में तशरीफ लाना ॥ राजा का सिंहासन से उठकर रानी जी को बाईं तरह सिंहासन पर बैठाना और सुरसुन्दरी का दाईं तरफ और मैनासुन्दरी का बाईं तरफ कुरसियों पर बैठाना ॥ राजा का मैनासुन्दरी से पूछना ॥

(वार्तालाप)

बेटी मैनासुन्दरी देख तू अब भी मेरी बात का जवाब करके विचार दे ॥ अपनी करमों की बात को दिल से निवार दे ॥ नहीं तो देख फिर तू पछतावेगी और अपने कर्मों के झूटे भरोसे-पर दुख उठावेगी ।

५७

मैनासुन्दरी का जवाब ॥

चाल—पहलू में यार है मुझे उसकी खबर नहीं ॥

राजा जी दिलको सख्त बनाना नहीं अच्छा ॥
बेटी को ऐसी बात सुनाना नहीं अच्छा ॥ १ ॥
है धर्म मेरा प्रान इसे छोड़ नहीं सकती ॥
बेकस को इस तरह से सताना नहीं अच्छा

निश्चय करमका लाख कहो मैं न छोडूंगी ॥
इस बातमें झगड़ेका बढ़ाना नहीं अच्छा ॥ ३ ॥
कर्मों में जो लिखा है वही पेश आएगा ॥
जिन वाणी में संशय कभी लाना नहीं अच्छा ॥ ४ ॥
दर्शन मलीन होके जीये भी तो क्या जीये
औलाद को गुमराह बनाना नहीं अच्छा ॥ ५ ॥

५८

राजा का क्रोध करना और जवाब देना ॥ (शेर)

मैना जो कहना मानती तू है नहीं मेरा ॥
जा करता हूं कुष्टी से अभी व्याह मैं तेरा ॥ १ ॥
वह कुष्टी बेनिशान है जंगल में पड़ा है ॥
है नाम श्रीपाल मुसीबत से भरा है ॥ २ ॥
सारी उमरको देख मुसीबत सहेगी तू ।
देखूंगा अपने कर्म पै कबतक रहेगी तू ॥ ३ ॥

५९

मैनासुन्दरी का जवाब ॥

चाल—सखी सावन बहार आई झुलाए जिसका जी चाहे ॥

मैं खुशहूं हौसिला अपना दिखाए जिसका जी चाहे ।
मेरी किस्मतका लिक्खा आझमाए जिसका जी चाहे ॥ १ ॥
पिताजी ने कहा जो कुछ मुझे मंजूर है वह ही ॥
अगर कुछ और दिलमें हो सुनाए जिसका जी चाहे ॥ २ ॥
मुझे निश्चय है जिनवाणी पे क्या धमकी दिखाते हो ।

अचल है मेरा मन मेरु हिलाए जिसका जी चाहे ॥ ३ ॥
मुक़द्दर में जो लिखाहै नहीं टालेसे टलता है ॥
किसी पहलूसे इसको आज़माए जिसका जी चाहे ॥ ४ ॥
करममें गर मेरे सुख है कोई दुखदे नहीं सकता ।
चाहे तदबीर सौ उलटी बनाए जिसका जी चाहे ॥ ५ ॥

६०

राजा और मैनासुन्दरी का सवाल जवाब [शेर]

राजा–बेटी मैं हूं हैरां तेरी तक़रीरके आगे ।
तक़दीर क्या करे भला तदबीर के आगे ॥ १ ॥
मैना०–रावणका कोट उड़गया महावीरके आगे ।
तदबीर क्या चली कहो तक़दीर के आगे ॥ २ ॥
राजा–लाखों के सीस कटते हैं शमशीर के आगे ।
कायर ज़रूर मरते हैं रनवीर के आगे ॥ ३ ॥
मैना०–माया उड़ी सुग्रीवकी रघुवीर के आगे ।
शक्ती भी चली हार लखनवीरके आगे ॥ ४ ॥
राजा–हाथीका वश नहीं चले जंजीरके आगे ।
मछली फंसे बंसी में माहीगीर के आगे ॥ ५ ॥
मैना०–जंजीर लागि करगई मुनीवीर के आगे ।
गिरधरकी कुछ चली ना जरद तीरके आगे । ६ ॥
राजा–मुशकिल आसान होती है तदबीरके आगे ।
तक़दीर पड़ी रहती है तदबीर के आगे ॥ ७ ॥

मैना०—सारी दलील रद करम तक़रीरके आगे ।
तदबीर कुछ नहीं चले तक़दीर के आगे ॥ ८ ॥

६१

राजा का जवाब ॥

चाल—(दरद में यार है मुझे उनको ख़बर नहीं)

मैना तुम्हारी ज़िद मेरे मनको नहीं भाती ।
समझाऊं किसतरह से समझ में नहीं आती ॥ १ ॥
सारी उमर को फिर तू महा दुख उठाएगी ।
कर्मों की बात जो तू नहीं दिलसे भुलाती ॥ २ ॥
तू देख तेरा व्याह उसी कुष्टीसे करूंगा ।
जिसके बदनसे कोसों तक दुर्गंध है आती ॥ ३ ॥
बचपनमें आके अबतो तू नादान भई है ॥
पछताएगी जो तू कही मनमें नहीं लाती ॥ ४ ॥
जंगलमें अकेली तू सदा ख्वार फिरेगी ।
क्यों अपने आप बैर मेरेसे तू बसाती ॥ ५ ॥
तक़दीर धरी रहेगी तेरी देख लीजियो ।
इस वक्त तेरे एक समझ में नहीं आती ॥ ६ ॥

६२

मैनासुन्दरी का जवाब ॥

चाल—(ख़्याल) कोई चातुर वैनां मरां ना मिलीं ॥

हे पिताजी हो धमकी दिखाते किसे ।

ऐसी बातें सुनाकर डराते किसे ॥
चाहे एक अनेक उपाय करो ।
होगा वहही जो विधनाने लेख लिखे ॥ १ ॥
रानी श्रीमति की सास रोस भई ।
वाकी मारन की तदबीर करी ॥
जब सतीने सरप अपने हाथ लिया ।
फूलमाल भई गलबीच पड़ी ॥ २ ॥
श्रीरामने सीतापे कोप किया ।
गिर अगनी में जाके यह हुक्म दिया ॥
जब सीता अगन परवेश किया ।
ठंडा नीर भया गुलज़ार खिला ॥ ३ ॥
देखो शीलवती वह सुभद्रा सती ।
वाकि जेठ जिठानी ने ताने दिये ॥
कच्चे सूत और छलनी से नीर भरा ।
शुभ कर्म जगे झट पाटखुले ॥ ४ ॥
सभा बीच द्रोपद का चीर गहा ।
कोई राजकंवर न सहाई हुआ ।
वाके कर्महो आके सहाई हुये ।
चीर बढ़ता गया सतशील रहा ॥ ५ ॥
सती अंजनाको घरसे निकाल दिया ।
किसी भाई न बंधूने साथ दिया ।
शुभकर्मों से आकरके मामा मिला ।
दुख दूर हुवा सुनराज किया ॥ ६ ॥

मेरे कर्म हैं राजा जी संग मेरे।
वर कुष्टी मिले कामदेव वने ॥
दुख देखूं नहीं सुख भोगूंगी मैं।
कर्म होते उदय नहीं देर लगे ॥ ७ ॥

६३

राजा का जवाब देना और दरवान को पंडित जी के बुलाने के लिये हुक्म देना ॥ (वार्तालाप)

राजा—अरी मैनासुन्दरी तेरा वड़ा दुष्ट स्वभाव है। तू अव भी अपने कर्मों की हटको नहीं छोड़े है। अच्छा मैं अभी तेरे कर्मों को देखूंगा कि तेरी क्या सहायता करते हैं (दरवान की तरफ़ देख कर) अरे दरवान जावो पंडित जी को हमारा प्रणाम दो और जल्दी दरवार में बुला लाओ ॥

दरवान—(अपना माथा धुनकर दिलमें हाय आज राजा को कैसी कुमत छाई है) वहुत अच्छा महाराज मैं अभी जाता हूं ॥ (चलाजाना)

६४

दरवान का वापिस आना ॥ पंडित जीका हाज़िर होना और राजा से वात चीत करना ॥ (वार्तालाप)

पं०—महाराज की जय हो।

राजा—आइये महाराज पधारिये चौंकी पर विराजिये।

पं०—(चौंकी पर बैठकर) आज महाराज ने कैसे याद फरमाया

राजा—महाराज आज बेटी मैनासुन्दरी का ब्याह करना है फ़ौरन महूरत निकाल दीजिये ॥

पं०—(चौंककर)आज ब्याह करना है ? महाराज ब्याह है कि गुडा गुडी का खेल है ! महूरततो आजका आप पहलेही निकाले बैठे हैं फिर मेरे बुलाने की कौन जरूरत थी।

राजा—महाराज खफा न हूजिये कोई जल्दी का महूरत निकाल दीजिये काम जल्दी का है ॥

पं०—हाय क्या ज़माना आया है महाराजों की बेटी का ब्याह और जल्दी का महूरत लोग महूरत निकलवाने में गड़बड़ तो आप मिचावें और जब ब्याह में कोई विघ्न हो जावे तो दोष पंडित जी के सर ॥ खैर हमें क्या जैसा कोई करेगा वैसा भरेगा ॥

६५

पंडित जी का पोथी खोलना और हाल पूछना ॥ (वार्तालाप)

पं०—महाराज किस नाम का कुमार है उसका कौनसा दयार है—अच्छा या बीमार है ॥

राजा—नाम श्रीपार है—न राजा है न साहूकार है-कुष्ट से लाचार है ॥

पं०—अरे राजा क्यों अपने वंशको कलंक लगाये है तेरे उल्टे दिन आए हैं जो तू अपनी राजदुलारी को कुष्टी के साथ ब्याहे है । देख अच्छा वर और अच्छा घर देखकर कन्या का देना माता पिता का धर्म कहा है ॥

कन्या को दुख देने से जन्म जन्ममें दुख भोगना पड़ेगी ऐसा शास्त्र में वर्णन किया है ॥

राजा—महाराज हमने जो विचार किया है वही होना है। इसमें आपको और कुछ नहीं कहना है ॥

पं०—(माथा धुनकर और कुछ अंगुलियों पर हिसाब लगा कर) महूरत तो आजका अती उत्कृष्ट है पर आपका यह कार्य महा निकृष्ट है ॥

राजा—महाराज आप इस कार्यमें तर्क न कीजिये। लीजिये आप अपनी दक्षना लीजिये। मैनासुन्दरी कहती है कि जो कर्मों में लिखा है वही होगा सो मैं इसी कुष्टीसे इसका व्याह करके इसके कर्मों को देखूंगी ॥

६६

पंडितजीका जवाब देना और नाराज होकर दरबारसे चला जाना

चाल—कत्ल मत करना मुझे तेगो तबर से देखना।

गर्भमें राजा तुझे इतना न आना चाहिये।
धर्मका भी तो तुम्हें कुछ खौफ खाना चाहिये ॥ १ ॥
मानले राजा हमारी फिर भी समझाते हैं हम।
अपनी बेटीको नहीं कुष्टीसे ब्याहना चाहिये ॥ २ ॥
मैनासुन्दरी ने कहा जो कुछ बजा है ठीक है।
इसकी बातों पे तुम्हें श्रद्धान लाना चाहिये ॥ ३ ॥
कर्म से सुख दुख मिले सच बात है क्या झूठ है।

सत धरम को छोड़ कर उलटा न जाना चाहिये ॥ ४ ॥
दक्षना लेंगे नहीं पापी तुम्हारे हाथ की ।
ऐसे पापी की सभा में भी न आना चाहिये ॥ ५ ॥

(चला जाना)

६७

मंत्री का राजा से फिर अर्ज करना और समझाना ॥

चाल—(वियोगनो) कटी गुनाहों में उम्र सारी इलाही तोबा इलाही तोबा ।

अय राजा दिलमें खयाल कीजे जो काम कीजे विचार कीजे।
सितम जुलम इस क़दर न कीजे ज़रा तो दिलमें विचार कीजे॥
(दोहा) राजा हमारी बात को, सुनलीजे धर कान ।
अबतक कुछ बिगड़ा नहीं, कहा हमारा मान ॥
विनश जाए वह मंत्री, जो मन शंका लाए ।
विनश जाए वह स्त्री, आज्ञा से टर जाए ॥
फरज समझ कर अरज करूं हूं धरम को हिरदय में धार लीजे
सती को अपने गले लगावो दिलासा दे करके प्यार कीजे॥१॥

(दोहा) जो कोई राजा सुने नहीं मंत्री की बात ।
राजा निश्चय जानियो, राजपाट सब जात ॥
बात विभीषण की नहीं, सुनी जो रावण राय ।
छिनमें लंका जलगई, आप मरा रण मांह ॥
विपुल धरम में डूबा जो कोई पड़ा विपत में निहार लीजे ।
जो इतने पर भी न मानो राजा तो तुमको है अखतियार कीजे

६८

राजा का कोप करके मन्त्री को जवाब देना (शैर)

बस बस ज़ुबां दराज़ का तू पास छोड़दे ।
वरना वज़ीर जीने की अब आस छोड़ दे ॥

६९

मन्त्री का जवाब ॥

चाल—(ग़ज़ल) इलाजे दर्दे दिल तुमसे मसीहा हो नहीं सकता ॥

समझ गए हमभी अय राजा तेरी तक़दीर फिरती है ॥
किसी की कुछ नहीं चलती है जब तक़दीर फिरती है ॥ १ ॥
यह जो करती है बेशक अपनी ही तक़दीर करती है ॥
मुक़द्दरमें बिगड़ना हो तो क्या तदबीर करती है ॥ २ ॥
मुक़द्दरकी दुरंगी भी अजब तासीर है करती ॥
कभी करती है खुश वह और कभी दलगीर करती है ॥ ३ ॥
बहुतसा हमने समझाया मगर तू ही नहीं समझा ॥
तुम्हारा दोष क्या करती है जो तक़दीर करती है ॥ ४ ॥
जो होना होगा सो होगा मगर राजा तेरी बातें ॥
हज़ारों रंज़ोग़म इस दिलके दामनगीर करती है ॥ ५ ॥

७०

राजा का गुस्से में मन्त्री को हुक्म देना । मन्त्री का श्रीपाल को बुलाने को चला जाना और पर्दा गिरना ॥ (वार्तालाप)

राजा—(गुस्से में आकर) मंत्री बस बस बन्द ज़ुबान करो, मत मुझे ज्यादा हैरान करो फौरन ब्याह का मंडप तय्यार करो, श्रीपाल को हाज़िर दरबार करो ॥

मंत्री—बहुत अच्छा महाराज (चलाजाना)
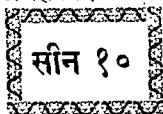
सीन १०

व्याह के मंडप का परदा

७१

मैनासुन्दरी के व्याह के मंडप का परदा नज़र आना ॥ राजा, रानी, सुरसुन्दरी व मैनासुन्दरी और सब दरबारियों का मंडप में बैठे हुवे नज़र आना मन्त्री का श्रीपाल कुष्टी के साथ मंडप में हाज़िर होना श्रीपाल को चौकी पर बिठाना। रानी और सब दरबारियों का कुष्टी को देखकर अफ़सोस करना और रानी का राजा से फिर अर्ज़ करना ॥

चाल—हाय अच्छे पिया यही देश सुनालो हिन्द में जी घबरावत है।

राजा ज़ुल्म तुम्हारा देखूं मैं क्योंकर नैनोंमें जलभर आवत है ॥

देख औलाद को तो अपने ही मां बाप सिवा ॥
जगमें कोई भी नहीं और सहारा होता ॥
ज़ुल्म यह आपका मैं आंख से देखूं क्योंकर ॥
था यह बहतर न मुझे यहां पे बुलाया होता ॥

राजा यह दुख मुझसे देखा न जाए काहेकोजी तड़पावत है ॥१॥

चूक और भूल भी हो जाती है इनसानों से ॥
नेको बद दुनियांमें कहिये नहीं क्या क्या होता ॥
कोप भी आजाया करता है कभी इनसां को ॥
पर नहीं ऐसी तरह आग बगूला होता ॥

राजा मैनाका तो कुछ दोष नहीं है काहेको दुखदखावत है ॥२॥

मैं खतावार हूं बेटी भी खतावार मेरी ॥
तुमही अच्छे सही इस बातका झगड़ा क्या है ॥
मुआफ महाराज खता कीजे मेरी बेटीकी ॥
नहीं औलादसे नादानीमें क्या क्या होता ॥
राजा राणी तुम्हारी दोकर जोड़े चरणोंमें सीस झुकावतहैं ॥३॥

७२

माता और सब दरबारियों को रोते हुये देखकर मैनासुन्दरी का खड़े होकर सबको समझाना और तसल्ली देना ॥

चाल-(ग़ज़ल) यह कैसे बाल बिखरे हैं यह क्यों सूरत बनी ग़मकी ॥

दरो दीवारसे आती है क्यों आवाज़ मातमकी ।
खुशीमें किसलिये चारों तरफ़ छाई घटा ग़मकी ॥ १ ॥
मैं खुश हूं अपनी शादीसे नहीं अरमान इतना भी
की जैसे वर्ग सोसनपे पड़ी हो बूंद शबनम की ॥ २ ॥
चाहे रोगी है कुष्टी है दरिद्री है भिखारी है ।
मेरे नज़दीक हीरे की कनी है मेरी खातमकी ॥ ३ ॥
यही रघुवर यही गिरधर यही सूरज यही चन्दर ।
मेरी नज़रों में है मनमथकी सूरत मेरे बालमकी ॥ ४ ॥
तुम्हारा दोष क्या राजा यह सब क़िस्मतकी बातें हैं ।
किसी की कुछ नहीं चलती है जब तक़दीर आ चमकी ॥ ५ ॥
वज़ीरों किसलिये रोते हो क्यों अफ़सोस करते हो ।
सरे तसलीम खम है जो करे मरज़ी है हाकिम की ॥ ६ ॥

अरी माता मुझे मंजूर है मरज़ी पिताजी की ॥
आपने किसलिये इसवक्त अपनी चश्म पुरनम की ॥ ७॥
ठीक है बापकी तदबीर क्यों दलगीर होती हो ।
मेरे संग है मेरी तकदीर कुछ यह तो नहीं कमकी ॥ ८ ॥

७३

राजा का जवाब देना और मैनासुन्दरी का हाथ श्रीपाल को पकड़ाना और कन्यादान करना और श्रीपाल का मैनासुन्दरी को अंगीकार करना ॥

राजा—(शेर) बस अबतो हम किसी की जरा भी न सुनेंगे।
जो दिलमें आगया है वही करके टेंगे ।
(वार्तालाप) अय कुष्टी श्रीपाल हम इस कन्याका
व्याह तुम्हारे साथ करते हैं इसको अंगीकार करो ।

श्रीपाल—मैं इसको अंगीकार करता हूं (श्रीपालका मैना सुन्दरीको लेकर चलने को तय्यार होना)

७४

मैनासुन्दरी को आते हुये देखकर वज़ीर का मैनासुन्दरी को तसल्ली देना और रंज करना ॥

चाल—कृपा मत करना मुझे तेरी नज़र से देखना ॥

माहे रोशन कर्म क्यों मनहूस अख़तर बन गया ॥
नर्म दिल महाराजका क्यों सख्त पत्थर बन गया ॥ १ ॥
गुलबदन मैनासती था नाज से पाला तुझे ॥
हा चमन से दूर जंगल में तेरा घर बन गया ॥ २ ॥
बनती पटराणी किसी राजाके जा महलों में तू ॥

किस तरह कुष्टी महा रोगी तेरा वर बन गया ॥ ३ ॥
धीर धर बेटी दशा यकसां कभी रहती नहीं ॥
धर्म को जिसने रखा बदतर से बरतर बन गया ॥ ४ ॥
पुत्र बिना मैनासती सब राज सूना हो गया ।
आजसे दरबार जो बहतर था अबतर बन गया ॥ ५ ॥

७५

मैनासुन्दरी का वज़ीर को जवाब देना ॥
चाल—यह कैसे बाल बिखरे हैं यह क्यों सूरत बनी गम की ॥

चमन से अबतो मैना ने उठा लिया आशियां अपना ॥
संभालो अय वजीर अय बादशाह हमसे मकां अपना ॥ १ ॥
मेरी क़िसमत की खूबी है बना सय्याद है वहही ॥
जिसे मैं बालपन से जानती थी बाग़बां अपना ॥ २ ॥
हमारी तर्फ़ से उजड़े बसे यह राज या नगरी ॥
उठालिया आज से हमने चमन सेती निशां अपना ॥ ३ ॥
नहीं अब महल की ख्वाहिश तमन्ना है न गुलशन की ॥
बनाऊंगी किसी जंगल में जा करके मकां अपना ॥ ४ ॥
देखलिया ग़ोरकर हमने कि मतलब का जमाना है ॥
न कोई मात पितु अपना न भाई आशना अपना ॥ ५ ॥
मेरा जलता है जी बेकस मेरी माता की हालत पर ॥
कि कबसे रोरही है खोरही आरामो जां अपना ॥ ६ ॥
सबर अब कीजिये माता सिवा इसके नहीं चारा ॥
नहीं पैदा हुई मैना यही करले गुमां अपना ॥ ७ ॥

७६

सुरसुन्दरी और मैनासुन्दरी की बातचीत ॥

चाल—(रागनी) अटारियों पै बैठा कबूतर आधी रात ॥

सुर॰—हाहारी मैना कैसे सहेगी दुख भार।
मैना॰—नहीं नहींरी बहना समता धरूंगी सुखकार।
बीचारली मैं होगा जो लिक्खा है ललार ॥टेक॥
सुर॰—हाहारी मैना कुष्टी मिला है भरतार।
मैना॰—नहीं नहींरी बहना चन्दबदन मनहार। बीचार॰ ॥१॥
सुर॰—हाहारी मैना छोड़ चली परिवार।
मैना॰—नहीं नहींरी बहना झूटा है सारा घरबार बीचार॰ ॥२॥
सुर॰—हाहारी मैना बाबल ने दीयो दुख भार।
मैना॰—नहीं नहींरी बहना यूंहीथा करम हमार। बीचार॰ ॥३॥
सुर॰—(छाती से लगाकर) हाहारी मैना फिरना मिलेगी करूं प्यार
मैना॰—नहीं नहींरी बहना जिउंतो मिलूंगी कईबार। बीचार॰ ४

७७

मैनासुन्दरी को जाते हुए देखकर माता का रुदन करना
और मैनासुन्दरी से कहना ॥

चाल—(सोहनी) चल बसे कहां भ्राता मेरे हाय लछमन पैयतन ॥

कहां चलीतू मेरी प्यारी मैनासुन्दर गुलबदन।
मेरी प्राण प्यारी अय सीम तन मेरी हाय बेटी गुलबदन ॥१॥
माता रुदन तेरी करे तुझ बिन जिया कैसे धरे।

मर जाएगी करके रुदन मेरी हाय सुन्दर गुलबदन ॥ २ ॥
खोटा करम तैं क्या किया कुष्टी जो वर तुझको मिला।
तूने धारा था मेरे क्यों जनम मेरी हाय सुन्दर गुलबदन ॥ ३ ॥
मेरी लाडली मैना सती जिनधर्म लीन और गुणवती।
घर छोड़ होगई बेवतन मेरी हाय सुन्दर गुलबदन ॥ ४ ॥

७८

मैनासुन्दरी का अपनी माता निर्पुहसुन्दरी को तसल्ली देना ॥
चाल—(नाटक) कोई जानेना भरे जाके मजीवन लाओना ॥

ग़मखाए ना तेरा मुझसे लखा दुख जायना ॥
काहे रोवे जरावे सतावे जिया ॥ ग़म ॥ टेक ॥
मुझको मालूम न था ऐसी हँसाई होगी ॥
सारे घरबारसे मातासे जुदाई होगी ॥
अब सिवा सब्रके माता नहीं चारा कोई ॥
ध्यान जिनराज धरो ग़मसे रिहाई होगी ॥
दुख पाए ना, जी जलाए ना ॥ तेरा हमसे० ॥ १ ॥
इस जहां में न कोई यार यगाना देखा ॥
ग़ौर कर देखा तो मतलबका ज़माना देखा ॥
न कोई मात पिता बन्धु किसी का कोई ॥
अपना समझूंथी जिसे वह भी विगाना देखा ॥
कलपाय ना, भरमाए ना ॥ तेरा हमसे० ॥ २ ॥
अब नहीं फायदा रोने से फ़िक्र जानेदो ॥
प्यार कर मुझको ज़रा थाम जिगर जानेदो ॥

बाप की जिद मेरे कर्मों की परीक्षा होगी ॥
बस मैं जाती हूं बनोवास मुझे जानेदो ॥
सुध खोए ना, बस रोए ना ॥ तेरा हमसे० ॥ ३ ॥

७९

रानी और सुरसुन्दरी व सब दरबारियों को रोते हुवे देखकर राजा का दिल भर आना और मैनासुन्दरी से कहना (शैर)

अरी मैना सुन्दर यह क्या हो गया ॥
ग़ज़ब हो गया है सितम हो गया ॥ १ ॥
हे इज्जत मेरी खाक में मिलगई ॥
मेरा राज सारा तबाह हो गया ॥ २ ॥
दिखाउंगा मुंह अपना दुनिया में क्या ॥
हमेशा को मैं रूसियाह हो गया ॥ ३ ॥
पड़ा अक्ल पर क्या यह परदा मेरे ॥
जो बेटी से नाहक़ खफ़ा हो गया ॥ ४ ॥

८०

मैनासुन्दरी का राजा को जवाब देकर श्रीपाल के साथ मंडप से रवाना होना और जंगल को चला जाना और ड्रोप सीन गिरना ॥
चाल—ई बहारे बाग़ दुनिया चन्द रोज़ ॥

मुझसे क्या पूछो हो यह क्या हो गया ॥
जैसा किसमत में लिखा था हो गया ॥ १ ॥
सुख बहुत भोगा तुम्हारे राज में ॥
अबतो जंगल में निकासा हो गया ॥
रंज की अफ़सोस की क्या बात है ॥

आपके जीका विचारा होगया ॥ ३ ॥
होगई उम्मीद पूरी आपकी ॥
इमतहां इसमें हमारा होगया ॥ ४ ॥
रंज गर है तो मुझे इस बात का ॥
जा बजा चरचा तुम्हारा होगया ॥ ५ ॥
धीर बंधवाना हमारी मातकी ॥
रोते रोते पहर सारा होगया ॥ ६ ॥
माफ़ करदेना पिताजी भूलसे ॥
दोष गर कोई हमारा होगया ॥ ७ ॥
अबतो जाती हूं पिता आज्ञा करो ॥
नेग टेहला ब्याहका सारा होगया ॥ ८ ॥
फिर कभी आकर मिलूंगी आपसे ॥
गर करम सीधा हमारा होगया ॥ ९ ॥ (चलाजाना)

इति न्यामतसिंह रचित मैनासुन्दरी
नाटक का पहिला ऐक्ट समाप्तम्

राज और पाट तो छूटा सो खैर जानेदो ।
अबतो जीनेके भी हैं पड़गये लाले हमको ॥ ६ ॥
दुष्ट बालमको दिया मुझको निकाला घरसे
और किस कष्ट में डालेगा तू जालिम हमको ॥ ७ ॥

८२

मैनासुन्दरी का कोढ़ीपत के पास बैठना और श्रीपालका मने करना ॥
चाल—(ग़ज़ल) ख़ाके दर्द दिल तुमसे मनोहर हो नहीं सकता ॥

तुम्हे अय प्राण प्यारी यहां पे आना ना मुनासिब है ॥
मेरी खातिर हजारों दुख उठाना ना मुनासिब है ॥ १ ॥
कुसंगतसे बदी नेकों के दिलमें आही जाती है ।
मेरे संग बैठना उठना तुम्हारा ना मुनासिब है ॥ २ ॥
मेरा तन कुष्टसे व्याकुल महा दुर्गंध आती है ।
हाथ कोमल मेरे तनको लगाना ना मुनासिब है ॥ ३ ॥
अशुभ कर्मोंका है जब तक उदय मेरे शशी वदनी ।
मेरे नजदीक तेरा आना जाना ना मुनासिब है ॥ ४ ॥
मुसीबत में पड़ा मैं तो यही कर्मोंकी मर्जी है ।
और को आगमें खुदको झोंकना ना मुनासिब है ॥ ५ ॥

८३

मैनासुन्दरी का उत्तर
चाल—(ग़ज़ल) [illegible] ॥

आप जिनका लिया उनका निभाना ही मुनासिब है ॥
कर्मने जो लिखा है आजमाना ही मुनासिब है ॥

करूंगी क्या बचा करके प्राण अपने बताओ तो ॥
पतीके वास्ते आंको गंवानाही मुनासिब है ॥ २ ॥
लाज फेरोंकी रखनी है पास आनेसे मत रोको ।
सतीका धर्म जो कुछ है दिखानाही मुनासिब है ॥ ३
दुखी तुमहो मैं सुख भोगूं यह हरगिज हो नहीं सकता
मुसीबत जो पड़े मुझपे उठानाही मुनासिब है ॥ ४ ॥
दूर जबलग न कष्ट होगा कहो जीना मेरा क्या है ॥
तेरी सेवामें तन मनको लगानाही मुनासिब है ॥ ५ ॥
मुसीबत चार दिनकी है पिया इतने न घबराओ ॥
मुसीबत में धीर मनको बंधानाही मुनासिब है ॥ ६ ॥
शील है रूप और जोबन शीलसे है मेरी शोभा ।
शील शृंगार तन मनमें सजानाही मुनासिब है ॥ ७ ।
मुसीबतमें पिया मेरे धाम बिन को नहीं अपना ।
मगन तजके धरममें जी लगानाही मुनासिब है ॥ ८ ॥

८४

भीमराजका फिर मैनासुन्दरीका समझाना ॥
[illegible] धन्य धन्य है हमारो भाग सुन्दर नार अलबेली

धन धन है हमरो अवतार सुन्दर नार अलबेली ॥
मत हन मेरा मनमें डोले । क्यों अमृतमें विष घोले ॥
तू सुकुमार सुन्दर रेली ॥ धन धन० ।
(दोहा) तू महलों की लाडली मैं कुटी दुख पूर ।
कहना मेरा मानले रहना हमसे दूर ॥ १ ॥

नाजानूं कबलग सहूं दुख कर्मों के हाथ ।
अय वैरी दुख पाएगी मत बैठो हम साथ ॥ २ ॥
हां हां हां गुणवाली । ओहो हो भोली भाली ॥
नई वेली सी नार नवेली ॥ धन धन० ॥

८५

मैनासुन्दरी का जवाब देना और श्रीपाल को धर्म में लगाना
और तसल्ली करना और मैनासुन्दरी का सिद्धचक्र की
पूजा करने का विचार करना ॥

चाल-हाय अच्छे पिया छोटो देश बुलाजा हिन्द में जी घबरावत है ॥

स्वामी धीरज धारो शोक निवारो क्यों इतना घबरावत हो ।टेक।
उपाय लाख करो चाहे कोई नर नारी ॥
गती करमकी किसीसे टरे नहीं टारी ॥
अशुभ करमका उदय जब किसीके होता है ।
न काम आवें कोई तात भ्रात महतारी ॥
स्वामी कौनकिसीका बंधू पियारा काहेको जी भरमावतहो १ ॥
मिले जो सिंध केरी नाग ग्राह दुखदाई ।
हो रोग कुष्ट बदनमें या बंदके माहीं ॥
अगनमें सिंधु महावन पहाड़ जंगलमें
हों बिजलियोंकी चमक जल पड़े घटा छाई ।
स्वामी होता है एक धर्म सहाई क्यों निश्चय नहीं लावत हो २।
द्वेष रागको तजकर भरमको दूर करो ।
धरमकी शर्ण गहो और मनमें धीर धरो ॥

१ हाथी

मैं सिद्ध चक्रका हृदयमें ध्यान करतीहूं ॥
सुयज्ञ रचती हूं इसदम प्रभुको याद करो ॥
स्वामी कुष्ट तुम्हारो दूर करूंगी काहेको मन कलपावत हो ।३।

८६

श्रीपाल का जवाब

चाल—इलाजे दर्दे दिल तुमसे मसीहा हो नहीं सकता ॥

हुवा निश्चय मेरे मनको मुसीबत जाने वाली है ॥
मुझे इस दर्दे ग़मसे जल्द फ़ुरसत होने वाली है ॥ १ ॥
सती अहसान यह तेरा उमर तक मैं न भूलूंगा ॥
तेरे हाथों से प्यारी मुझको राहत होने वाली है ॥ २ ॥
मेरे सीधे दिन आएहैं मिली तुझसी सती मुझको ॥
श्री अरिहंत की मुझपे इनायत होने वाली है ॥ ३ ॥
तेरे कहनेसे अय प्यारी यकीं अब होगया सबको॥
कोई दममें हकूमत कर्म रुख़सत होने वाली है ॥ ४ ॥
अभी जाओ मेरी प्यारी मिटादो कुष्ट बीमारी ॥
तेरे सत शीलकी दुनियामें शोहरत होने वाली है ॥ ५ ॥

८७

मैनासुन्दरी का भगवान को अस्तुति करना और सिद्ध चक्र की पूजा करने को रवाना होना ॥

चाल—(नाटक थमाच) गगरिया मोरी फोरी रे बरजोरी से ॥

प्रोहणया मोरी तारेंगे स्वामी महावीर ॥
परम हितकारी-में जाऊं वारी वारी ॥ जी प्रोहणया० ॥ टेक

आज नाथ तेरा शरणा लूंगी--नित नित करूंगी बड़ाई ।
तुम नैय्या तारो मोरी--मैं सेवा सारूं तोरी ॥ जी मोहणया० ॥
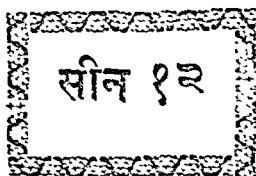
श्रीजैन मंडपका परदा

८८

नोट—मैनासुन्दरी का यतनें श्रीजैन मंडप तय्यार करना और सिद्ध
चक्र का यंत्र स्थापन करना और श्रीपाल व सब कुष्टियों का
मंडप से बाहर बैठे हो नज़र आना ॥

८९

मैनासुन्दरी का सिद्ध चक्र का यंत्र स्थापन करना और उसकी पूजा करना ।

नोट—एक ऊंची चौकी पर सिद्ध चक्र यंत्र स्थापन करना चाहिए
और ४ पंडितों को बैठकर ऊंचे स्वर से हवन कराना चाहिए ॥
संपूर्ण पद नहीं लिखा है यह केवल नमूना है ॥

सिद्धान्प्रसिद्धान् वसुकर्म मुक्तान् ।
त्रैलोक्य शीर्षे स्थितचिद्विलासान ।
संस्थापये भाव विशुद्धिदातृन् ।
सन्मंगलं प्राज्य समृद्धयेहम् ॥ १ ॥

९०

अथ निस्तारक मंत्राः (आहुति देना)

सत्यजाताय स्वाहा ॥ १ ॥
अर्हज्जाताय स्वाहा ॥ २ ॥
षट कर्मणे स्वाहा ॥ ३ ॥
ग्रामपतये स्वाहा ॥ ४ ॥
अनादिश्रोत्रियाय स्वाहा ॥ ५ ॥
स्नातकाय स्वाहा ॥ ६ ॥
श्रावकाय स्वाहा ॥ ७ ॥
देव ब्राह्मणाय स्वाहा ॥ ८ ॥
सुब्राह्मणाय स्वाहा ॥ ९ ॥
अनुपमाय स्वाहा ॥ १० ॥
सम्यग्दृष्टि निधिपति वैश्रवणाय स्वाहा ॥ ११ ॥

नोट—अन्त में जल धारा देकर यज्ञ समाप्त करना ॥

९१

मैनासुन्दरी का गंधोदक लेकर श्रीपाल और सातसौ वीरों का कुष्ट दूर होनेको प्रार्थना करना और सब पर गंधोदक छिड़कना और सबका एकदम अच्छा होना और जयजयकार करना ॥

चाल—अजब नहीं अकसीर हमारी खाकको चाहे ज़र करदे ॥

अजब नहीं तासीर धरम की खाकको चाहे ज़र करदे ॥
चींटि से अखतर सबसे बरतर नोकर को अफ़सर करदे ॥ १

अपरमपार धरमकी महिमा रातको चाहे सेहर करदे ॥
सीता सती के अगन कुंडको जल भरकर सरवर करदे ॥ २ ॥
सेठ कंवरको डसा सांपने छिनमें उसका विष हरदे ॥
पड़ा गलेमें सांप सती के फूलमाल सुन्दर करदे ॥ ३ ॥
जो कोई विमुख धरमसे होवे छिनमें ज़ेरो ज़बर करदे ॥
चक्रसभूमकी तरह डुबाकर बीच समंदरके धरदे ॥ ४ ॥
रावणकी जों जलाके लंका नरकमें उसका घर करदे ॥
पापी के धन दौलत गौहर जौहर को पत्थर करदे ॥ ५ ॥
सेठ सुदर्शनको सूलीसे बचा तख्त ऊपर धरदे ॥
वही धरम इस मैनासती के पतीपे नज़र महर करदे ॥ ६ ॥
पूरण यज्ञ हुवा है मेरा मुझमें यही असर करदे ॥
गंदोदकसे इन सबही को कुष्ट हटा नोभर करदे ॥ ७ ॥

(मैनासुन्दरी का गंदोदक छिड़कना-सबका जय जयकार करना)

९२

श्रीपाल और सब वीरों का एकदम अच्छा होना और
मैनासुन्दरी की स्तुति करना ॥

चाल—इलाजे दर्द दिल तुमसे मसीहा हो नहीं सकता

ज़बां से तो अदा अहसां तुम्हारा हो नहीं सकता ॥
करें किस मूंहसे गुण वर्णन तुम्हारा हो नहीं सकता ॥ १ ॥
धनंतर है तो तूही है मसीहा है तो तूही है ॥
कोई दुनियामें बस सानी तुम्हारा हो नहीं सकता ॥ २ ॥
तेरे अहसान को प्यारी उमर तक हम न भूलेंगे ॥

सिवा तेरे कोई हामी हमारा हो नहीं सकता ॥ ३ ॥
तू है सच्ची सती सच्चा धरम तेरा करम तेरा ॥
हमें बिन आपकी किरपा सहारा हो नहीं सकता ॥ ४ ॥

९३

इन्द्र महाराज और इन्द्राणी व देवताओं का आना और मैनासुन्दरी व श्रीपालकी जय जयकार करना और दोनों पर फूल बरसाना ॥

चाल—(नाटक) महाराज गावें अब हम ॥

धन्यबाद गावें अब हम । बरसावें फूल छम छम ॥ धन० ।
हीरोंका ताज दम दम । करे सीस ऊपर हरदम ॥
श्रीपाल और मैनानारी । यानी प्यारा प्यारी ॥
आपस में खुश रहें दाइम ॥ धन्य० ॥ १ ॥
आफत पड़ती थी भारी । अब दूर हुई है सारी ॥
है धन धन मैनासुन्दर ॥ गावें जश सुर नर इन्दर ॥
भारत का सत रहे क़ायम ॥ धन्य० ॥ २ ॥

९४

मैनासुन्दरीका भगवानकी स्तुति करना और पर्दा गिरना

चाल—(नाटक) ला ला ला ला भर भर जाम पिला गुलज़ाला बनादे मतवाला ॥

जय जय जय जय, श्रीजिन ध्यान धरो सुखकारी
सदाही हितकारी ॥ टेक ॥ वह शर्णसार है-महिमा अपार
भव तारन तार है-दुख हरणहार है ॥ जय जय० ॥ १ ॥

मेरे यज्ञको रचा-पाति कुष्टको हरा-महिमा धरम दिखा-
मेरी लाज को रखा ॥ जय जय० ॥ २ ॥
जिन धर्मको गहो-निश्चय इसे करो-संसारसे तिरो-
शिवनार जा वरो ॥ जय जय० ॥ ३ ॥
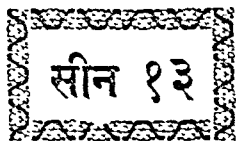
(चम्पापुरके महलका परदा)

९५

नोट—एक दिन चम्पापुर में श्रीपालकी माता कुन्दप्रभा ने मुनि
महाराज से श्रीपाल का हाल पूछा और श्रीपालके पास
जाने की राजा वीरदमन से आज्ञा ली ॥

९६

माताका श्रीपाल के वियोग में रोते हुवे नज़र आना। और उज्जैन नगर की
तरफ श्रीपालकी तलाश में रवाना होना ॥

चाल—(नाटक भैरवीं) देखूंगी मेरे कन्हा का मुखड़ा ॥

देखूंगी मेरे बेटेका मुखड़ा। प्यारा प्यारा प्यारा प्यारा ॥
प्यारारे मेरे बेटेका मुखड़ा ॥ टेक ॥
बन बन फिरूंगी ढूंढ करूंगी ॥
छोड़ूंगी राज महलोंका बसरा ॥ देखुंगी० ॥ १ ॥
जबसे गया कछु खबर न आई ॥
देगया मोहे बरसोंका दुखड़ा ॥ देखुंगी० ॥ २ ॥

पति मरा-सुत बनको सिधारा ॥
कैसे टिके कहो मेरा यह जियरा ॥ देखुंगी० ॥ ३ ॥

सीन १४
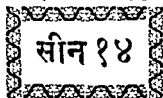
उज्जैनके जंगल में श्रीपाल के महल का परदा

९७

श्रीपाल की माता का श्रीपाल के महल में पहोंचना । श्रीपाल का मातासे मिलना और पाओं में गिरना । माता का श्रीपालको गले लगाना और सिंघासन पर बैठना और मैनासुन्दरीका सासके पांवों में पड़ना और सासका आशीर्वाद देना और रुयका बात चीत करना ॥

माता-(दोहा) बेटी मैनासुन्दरी बढ़े तुम्हारा भाग ।
चिरजीवो तुम बालमा रहियो सदा सुहाग ॥ १ ॥
अंतेवर सेवा करें बढ़े राज चिरकाल ॥
सदा नेह तुमसे करे कोटी भट श्रीपाल ॥ २ ॥

मैना०-(दोहा) हे माता तुम देखकर मिलो स्वर्गका राज ॥
पाओं पसारे आपके जनम सुफल भयो आज ॥ १ ॥
दोनों कुल उजल भए बढ़ा सुमनमें राग ।
दर्शन पाए आपके धन्य हमारे भाग ॥ २ ॥

माता-([illegible]) बेटा कोटीभट वीर सुखी तो है तेरा शरीर

श्री०—माता जबसे आप का दर्शन पाया सब दुख दूर हुवा स्वर्ग का सुख पाया ॥

माता—बेटा कैसे मिटा तेरे कुष्ट का मलाल सुनातो सही मात को हाल ॥

श्री०—हे माता मेरे कुष्ट के मिटानेवाली यह सती मैना-सुन्दरी है जो आपके चर्णों में खड़ी है यही मेरे लिये धनंतर है यही मसीहा है इसी ने मुझको मौत से बचा अच्छा किया है ॥

माता—और वह सातसौ वीर ?

श्री०-उन सबकी भी इसी की कृपा से दूर हुई है सब पीर।

माता—बेटा ऐसा क्या जतन बनाया जो छिनमें सबका कुष्टरोग दूर हटाया ॥

९८

श्रीपालका जवाब॥

चाल- (ग़ज़ल) छोड़े दर्द दिल तुमने मसीहा हो नहीं सकता ॥

सती ने जिस घड़ी बीमार देखा इक नजर हमको।
दया दिलमें हुई पैदा कहा रक्खो सबर हमको ॥ १ ॥
रचा मंडप करी सिद्धचक्र की पूजा जतन करके ॥
जो छिड़का लाके गंदोदक हुवा ऐसा असर हमको ॥ २ ॥
कि थे जितने महा कुष्टी उन्हें नीरोग किया इकदम ॥
मिसल सोने के तन आने लगा अपना नजर हमको ॥ ३ ॥

करूं किस मूंह से गुण बर्णन यह सतियों में श्रोमणि है।
हमारे भाग अच्छे हैं मिली यह नारवर हमको ॥ ४॥

९९

मैनासुन्दरी का जवाब ॥

चाल—(ग़ज़ल) पहलो में क्योंकर कहूं तेरे ख़रीदारों में हूं ॥

कौन कहता है मुझे मैं नेक अतवारों में हूं।
मैं खतावारों में हूं बल्के गुनेहगारों में हूं ॥ १ ॥
मत करो तारीफ़ मेरी दोष लगता है मुझे।
मैं तुम्हारी चर्ण रज तेरे परिस्तारों में हूं ॥ २ ॥
फ़ायदा जो कुछ हुवा है आपके इक़बाल से।
वरना मैं तो हूं सियाहकारों में दुखयारों में हूं ॥ ३ ॥
बाप ने घर से निकाली जगमें रुसवाई हुई।
मैं तो ग़मख्वारों में हूं किसमत से लाचारों में हूं ॥ ४ ॥

१००

सासका मैनासुन्दरीको धन्यवाद देना ॥ (वार्तालाप)

धन्य है सती मैनासुन्दरी तूने धर्म का फल प्रगट कर दिखाया, मेरे बेटे और सातसौ वीरों का कुष्ट हटाया, सतियों का मर्तबा बढ़ाया, अपने इमतिहान को पूरा कर दिखाया। दुनिया में धर्मवंती और शीलवंती का नाम पाया ॥

सीन १५
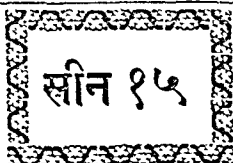
श्रीपाल के महलका परदा

१०१

नोट—श्रीपाल और मैनासुन्दरी व कुन्दप्रभा वहीं उज्जैन के जंगल में सुखसे रहने लगे ॥ एक दिन रातको श्रीपाल और मैनासुन्दरी का महल में सोना और श्रीपाल को नींद न आना। मैनासुन्दरी का श्रीपाल से हाल पूछना ॥

१०२

मैनासुन्दरी का श्रीपाल से नींद न आने का कारण पूछना।

चाल—इलाजे दर्दे दिल तुमसे मसीहा हो नहीं सकता ॥

उचाटी किस लिये है क्यों उदासी मूंह पे छाई है।
वजे क्या है जो अबतक आपको नहीं नींद आई है ॥ १ ॥
किसी ने क्या खबर कुछ आपके घरकी सुनाई है ॥
जिसे सुनकर तुम्हारे दिलमें व्याकुलताई आई है ॥ २ ॥

१०३

श्रीपाल ॥

न छेड़ो तुम हमें प्यारी तुम्हें मेरी दुहाई है।
मेरेसे कुछ नहीं पूछो मेरे क्या जीमें आई है ॥ १ ॥

नहीं कोई खबर समझो हमारे घरसे आई है ।
तुझे बतला नहीं सकता कि क्यों नहीं नींद आई है ॥ २

१०४

मैनासुन्दरी ॥

कहाहै आपको राजाने क्या कुछ आज बतलादो ॥
आपने किसलिये ग़मगीन यह सूरत बनाई है ॥ १ ॥
तुम्हारी देखके हालत मेरे दिल बेक़रारी है ॥
पिया सच हाल बतलादो कि क्या दिलमें समाई है ॥ २ ॥

१०५

श्रीपाल ॥

प्राण प्यारी कहा राजा ने है कुछ भी नहीं मुझको ॥
नहीं परजा मेरी प्यारी कोई फ़रयाद लाई है ॥ १ ।
न मैं बीमार हूं प्यारी न मैं दीवाना हूं प्यारी।
तेरेसे कह नहीं सकता कि क्या दिलमें समाई है ॥ २ ॥

१०६

मैनासुन्दरी ॥

कहीं परदेश जानेका किया क्या आपने मनशा ॥
हुई है क्या किसी दिलदारसे तुमरी जुदाई है ॥ १ ॥
मेरे तुम प्राण प्यारे हो छुपाओ भेद मत मुझसे ।
तुम्हें मेरी क़सम कहदो साफ़ जो दिलमें आई है ॥ २ ॥

१०७

श्रीपाल ॥

सिवा तेरे नहीं दिलदार दुनियां में कोई मेरा ।

ज़ुबां पर किस लिये तू आज ऐसी बात लाई है ॥ १ ॥
सुनेगी हाल गर मेरा मलिन होवेगा मन तेरा ।
मुझे ख़ामोश रहने दे इसी में कुछ भलाई है ॥ २॥

१०८

मैनासुन्दरी

अगर तुम जानते हो प्राण प्यारी आपनी मुझको ।
तो फिर क्यों आपने यह बात मेरे से छुपाई है ॥ १ ॥
बजा लाऊंगी सर आंखों से कहदो आपके मनकी ।
मैं सच कहती हूं मत समझो हंसी करने को आई है ॥ २ ॥

१०९

श्रीपाल का हाल बताना ॥
चाल—रुलाके दर्द दिल तुमने मनोहर हो नहीं सकता ॥

सती सुन किसलिये तू दिलको यों बेज़ार करती है ।
मेरे से किसलिये इस बात पे तकरार करती है ॥ १ ॥
सुनाता हूं हाल अपना मगर रखना इसे दिल में ।
अगर तू इस क़दर इस बात पे इसरार करती है ॥ २ ॥
जमाई राजा का कहती है सब दुनिया मुझे प्यारी ।
नाम मां बाप का मेरे नहीं इज़हार करती है ॥ ३ ॥
न मेरे नाम को जाने न मेरे देश को जाने ।
यह गुमनामी मुझे रुसवा सरे बाज़ार करती है ॥ ४ ॥
मिटा जब नाम मेरे वंश का जीना मेरा क्या है ।
यही है बात जो जीको मेरे बेज़ार करती है ॥ ५॥

११०

मैनासुन्दरी का जवाब ॥

चाल—(कव्वाली) कोई चातुर ऐसी सखी न मिली मोहे पीका

राजा आपने है जी यह बात कही ।
है यह सांच ज़रा ऐतराज़ नहीं ॥
बड़े स्यानों ने है यही बात कही ।
सुसराल बसे रहे लाज नहीं ॥ १ ॥
जैसे भगनी के घर कोई वीर रहे ।
कोई सूरमा बिन हथियार लड़े ।
धन धान बिना कोई दान करे ।
कुछ शोभा नहीं, रहे लाज नहीं ॥ २ ॥
मांग राजा से चतुरंग सैन लहो ।
घर चलने का वेगी विचार करो ॥
सुसराल में राजा जी अब ना रहो ।
यहां न राज जमें, रहे लाज नहीं ॥ ३ ॥

१११

श्रीपाल का जवाब ॥

चाल—(दादरा) कहीं जाने का कैसा इरादा हुआ ॥

कहीं जाने का मेरा इरादा हुआ ॥ कहीं जाने का ॥

मेरे जानेका ग़म कुछ न कर तू ज़रा॥ कहीं जानेका ॥टेक॥
मांगे दल, हो नाराज। सरे कोई ना काज। मेरी जावेगी लाज।
लेके सुसरे का दल जो पयाना किया॥ कहीं० ॥ १ ॥
ज़रा सुनदेके कान। मेरे प्राणोंकी प्राण। सुख भोगो महान।
सारा घरबार तेरे हवाले किया॥ कहीं० ॥ २ ॥
दीजो चहूं संघको दान॥ रखियो माताका मान॥ करियो
पूजा विधान। जिससे हैं कुष्ट सबका रवाना किया। कहीं०॥३॥
मेरा दिल तेरे पास॥मत होना निरास॥रखियो मिलनेकी आस॥
मेरे दिलमें है तूने ठिकाना किया॥ कहीं० ॥ ४ ॥

११२

मैनासुन्दरी और श्रीपाल का बात चीत करना॥

चाल—(क़वाली) कोई चातुर ऐसी सखी ना मिली॥

मैना०—स्वामी यह तो मुझे समझादो भला।
कब आवोगे वेगी बतादो ज़रा।
मैंने जबसे है जानेका नाम सुना।
मेरे दिलको तो आता सबरही नहीं॥ १ ॥
श्रीपाल—प्यारी ऐसी न मनमें अधीर बनो।
टुक ध्यान करो मन धीर धरो॥
आऊं बारा बरस दिन आठमको।
देखो मेरा बचन कभी झूठी नहीं॥ २ ॥

मैना०—पलवारा रहूं बिन दर्श पिया।
भर आवे हिया मेरा तड़पे जिया ॥
कैसे बारा बरस में रहूंगी पिया।
मेरे मरनेका क्या तुझे डर ही नहीं ॥ ३ ॥

श्रीपाल—प्यारी मोहसे भव भवमें दुक्ख सहे।
बिन मोह हते नहीं ज्ञान लहे ॥
मत मोह करे मत दुक्ख भरे।
मोह करनेका अच्छा समर ही नहीं ॥ ४ ॥

मैना०—प्यारे बात हंसी की न समझो इसे।
ज़रा देकरके कान अब सुनलो इसे ॥
रहो घरमें या लेजाओ संग आपने।
पिया बिन मेरा होगा गुज़र ही नहीं ॥ ५ ॥

११३

श्रीपालका जवाब ॥

चाल—[गुजल कव्वाली] इलाजे दर्दे दिल तुमसे मसीहा हो नहीं सकता।

तुझे लेजाऊं संग अपने सो यह तो हो नहीं सकता ॥
बिना उद्यम रहूं घरमें सो यह भी हो नहीं सकता ॥ १ ॥
मुझे जानेदे मनगके खुशीसे दे मुझे आज्ञा ॥
तुझे नागज कर जाऊं सो यह भी हो नहीं सकता ॥ २ ॥
बिना उद्यमके निष्फल है जनम इंसानका समझो ॥
बिना उद्यम उदय कर्मोंका भी फल हो नहीं सकता ॥ ३

है सुसती मां ग़रीबी तंगदस्ती बेतमीज़ीकी ॥
विना उद्यम किये धन धान हासिल हो नहीं सकता ॥ ४ ॥
इसी कारण हुवा मंशा मेरा परदेश जानेका ।
टलूं अपने इरादेसे सो ऐसा हो नहीं सकता ॥ ५ ॥

११४

मैनासुन्दरी का जवाब ॥
चाल-कहां लेजाऊं दिल दोनों जहां में इसकी मुशकिल है ॥

खुशीसे जाइये बालम तुम्हे जाना मुवारिक हो ।
फेर बारा बरसमें लौटकर आना मुवारिक हो ॥ १ ॥
न भूलो पंच परमेष्टी सदा रखना ध्यान दिलमें ।
व्रत सिधचक्र जिन पूजा मुवाकि हो मुवारिक हो ॥ २ ॥
मिलेंगी आपको परदेशमें लाखों राज कन्या ।
हमें मत भूलना राजा गमन तुमको मुवारिक हो ॥ ३ ॥

११५

श्रीपाल का जवाब ॥
चाल नाटक-अलबेला छैला ऐसा लावेंगे हो रंगीला ॥

अलबेली सुंदर ऐसे ना बोलो हो हठीली ॥
टुक ध्यानकर—कुछ ज्ञानकर ॥ अलबेली० ॥
जिन यज्ञ रचानेवाली अरी सुन सुन सुन ॥
मेरा कष्ट हटानेवाली अरी सुन सुन सुन ॥
कोई नहीं दूषण—सतियों में भूषण ॥
सत मारग दिखानेवाली अरी सुन सुन सुन ॥

मेरी धीर बंधानेवाली अरी सुन सुन सुन ॥
तोहेना जीयासे भुलाऊं परमाणकर-मेरी मानकर।

११६

मैनासुन्दरी का जवाब ॥
चाल-रलाजे दर्दे दिल० ॥

कुसंगत से वदी नेकोंके दिलमें आही जाती है ॥
वदोंके पास रहनेसे शरारत आही जाती है ॥ १ ॥
वरस सोलाकी ऊपर नारसे बातें नहीं करना ।
जब आंखें चार होती हैं मुहब्बत आही जाती है ॥ २ ॥
विना दिये कुछ नहीं लेना अदत्तादान चोरी है ।
पराया देखकर धनको तवीयत आही जाती है ॥ ३ ॥
दूत कपटी दगावाजों से भी रहना संभल करके ।
पिया परदेश में जाकरके दुर्मत आही जाती है ॥ ४ ॥
न आए तुम जो वादेपे तो मैं लेवूंगी जिन दिक्षा ।
झूंठ वादे के होने से कदूरत आही जाती है ॥ ५ ॥

११७

श्रीपालका जवाब देना और उसी वक्त रातको रवाना होने को तय्यार होना ॥
चाल (कानड़ा)-घर जानेदे छोड़दे मोरी बय्यां ॥

हट जाने दे छोड़ दे ऐसी बतियां ॥
प्रेम धरत तोसे विनती करत हूं ॥
वार वार समझय्यां ॥ हट० ॥ १ ॥

कोटी भट ना वाके ठरेंगे ॥
टर जावें निश दिन पतियां ॥ हट० ॥ २ ॥
बारा बरस में आन मिलूंगा ॥
अष्टमकी प्यारी रतियां ॥ हट० ॥ ३ ॥

११८

श्रीपालको जाते हुवे देखकर मैनासुन्दरी का दिल भर आना और मूहपर अंचल डालकर रोना और कहना ॥

चाल नाटक-(सिंध भैरवीं) हाय सय्यां पडूं मैं तोरे पय्यां सतायो काहे मझीका ॥

प्यारे सय्यां पडूं मैं तोरे पय्यां न जावो प्यारे कहीं को ॥
पिया प्यारे साजनपे जाऊं वारी-हां हां हां हां ॥
कहीं जानेकी प्यारे क्यों विचारी ॥
विचारी मोरे सय्यां-क्यों धारी मन सय्यां ॥
पलपलयां-तलमलयां-बेकलयां-होरहियां ॥ प्यारे० ॥
प्यारे सांवरया मैं तो जाने न दूंगी हां ॥
मोहे काहे सताए-मोहे काहे जराए ॥
जी जलाए-कलपाए-दुख दिखाए-तरसाए ॥ प्यारे० ॥

११९

श्रीपाल का जवाब ॥
चाल—इलाजे दर्द दिल०

समझमें कुछ नहीं आता तू क्यों बेज़ार होती है ॥

१ शब्द ।

डालकर मुंहपे अंचल किसलिये बेज़ार रोती है ॥ १ ॥
खुशीसे पहिले दी आज्ञा मुझे परदेश जानेकी ॥
अभी क्या होगया प्यारी जो यूं बेज़ार रोती है ॥ २
बतादो साफ तुम हमको असल जो बात है मनकी ।
तेरे रोने से अब तबियत मेरी बेज़ार होती है ॥ ३ ॥

१२०

श्रीपाल व मैनासुन्दरी के सवाल व जवाब ॥

चाल--(नाटक) जीया तरसे बदरिया बरसे हमारे दिन कैसे कटेंगे बहारके

मैनासुन्दरी-

जीया तरसे बदरिया बरसे हमारे दिन कैसे कटेंगे बहार के ॥
कैसे पी बिन रहूंगी जीया मारके ॥ जीया० टेक ॥
नीर बरसेगा व कड़केंगीं बिजिलियां घनमें ॥
आप बिन कैसे अकेली मैं रहूंगी बनमें ॥
संग लेचलिये मुझे वरना समझलो मनमें ॥
मैं नहीं जीती मिलूं प्राण तजूंगी छिनमें ॥
तुम्ही सोचो ज़रा तो विचारके ॥ जीया० ॥ १ ॥

१२१

श्रीपाल—

हित करले सुमत हीये धरले पियारी दिन नीके कटेंगे बहारके ।
शील संजमको रखियो संभारके ॥ हित० (टेक)
वन पहाड़ों में कहीं दरियामें चलना होगा ॥
भूख अरु प्यास गरम शीतका सहना होगा ॥

भूमिमें सोना बनोवासमें रहना होगा ॥
शशी वदनी कहो कैसे तेरा चलना होगा ॥
जरा देखो तो मनमें विचारके ॥ हित० ॥ २ ॥

१२२

मैनासुन्दरी—

भूख और प्यासकी तकलीफ सहन करलूंगी ॥
बनमें दरियामें पहाड़ोंमें गमन करलूंगी ॥
भूमि सोनेको मिलेगी तो वहीं पड़लूंगी ॥
अपने रहनेका पिया आप जतन करलूंगी ॥
तेरी सेवा करूंगी चितधारके ॥ जीया० ॥ ३ ॥

१२३

श्रीपाल—

प्यारी बैठी रहो घरमें बखुशी राज करो ॥
धनका सुख भोगो यहां धर्मका कुछ काज करो ॥
सातसौ वीर हैं सेवा में अटल राज करो ॥
मैं बरस बारमें आजाऊंगा तुम राज करो ॥
हट कीजे न मनको बिगार के ॥ हित० ॥ ४ ॥

१२४

मैनासुन्दरी—

इस तेरे गजको और दरको सब आग लगे ॥
फौजको माल खजानेको तेरे आग लगे ॥

आप बिन कौन रहे घरमें यह घर आग लगे ॥
वर्ष बारा किसे इक छिनमें बिरह आग लगे ॥
किसे देते हो धोका संवारके ॥ जीया० ॥ ५ ॥

१२५

श्रीपाल—

मात को छोड़ तेरे संग करूंगा जो गमन ॥
किस तरह दुनियां में दिखलाऊंगा मूंह गुंचेदहन ॥
बीच राजों के जो बैठूंगा तो आवेंगी लजन ॥
लोग दुनियां में हंसेंगे यह सुनावेंगे बचन ॥
गया माताको छोड़ संग नारके ॥ हित० ॥ ६ ॥

१२६

मैनासुन्दरी—

राम बनोबास गए संग सियाको लेकर ॥
मात कोशल्याने भेजी उसे आज्ञा देकर ॥
मैं भी आजाती हूं बस सासकी आज्ञा लेकर ॥
उज्र अब क्या है चलो संगमें मुझको लेकर ॥
कहूं चरणों में मस्तक पसारके ॥ जीया० ॥ ७ ॥

१२७

श्रीपाल—

हम अगर दोनों गए मात मरेगी रो रो ॥
हूंगा बदनाम बिगड़ जाएगा मेरा पर भो ॥

संग लेजानेकी अब बात मेरेसे न कहो ॥
मानले कहना मेरा, प्यारी न पत खो ॥
बस मैं जाता हूं दोनोको छांडके ॥ ८ ॥
(श्रीपालका रवाना होना)

१२८

मैनासुन्दरी का श्रीपालको जातेहुये देखकर उनका दामन पकड़ना और रोकर कहना ॥

चाल नाटक—(चमन) कजरोटी-चुरा चाहा पिया मोसे ॥

कर चलेजी—कैसा धोका किया मोसे कर चलेजी ॥ टेक ॥
चलूंगी संगमें तुमको जरा न दुख दूंगी ॥
करूंगी सेवा तुम्हारी बनों में सुख दूंगी ॥
हवाले सासके घरबार फौजोमाल करूं ॥
उसे मनालूंगी मैं जा चरणमें सीस धरूं ।
मेरे अरमानकी कलियां कतर चलेजी । कैसा० ॥ १ ॥
क्या साम दाम दंड भेद भय दिखाते हो ॥
बनोंका कष्ट दिखा क्या मुझे डराते हो ॥
न एक मानूंगी मैं चाहे आप लाख कहें
चलूंगी संगमें बातोंमें क्या बनाते हो ॥
मुझे विरहन बनाके किधर चलेजी । कैसा० २ ॥

१२९

श्रीपाल का नाराज होना और मैनासुन्दरी से अपना दामन छुडाना और गुस्से में जवाब देना ॥

चाल—(नाटक) तुम कौन तुम कौन हो साहिब आए कहां से किससे है पहिचान ॥

नादान नादान हो प्यारी हो मतवारी । किसलिये हो परेशान ॥ नादान० ॥

यह झगड़ा यह झगड़ा कैसा लाया है तुमने कर दिया है हैरान ॥ नादान० ॥

दोहा-पल्ला जो दामन का मेरा पकड़ा रुकी मेरी गती ॥

क्यों अपशगुन मुझको किया परदेश जाते है सती ॥

हां हां हां जोबनवाली—ओहो हो भोली भाली ॥

तुमहो कोई बड़ी हटवाली । मेरा दिल तुमने किया परेशा

ओ मतीवान ॥ नादान० ॥

१३०

मैनासुन्दरी का नाराज होकर दामन छोड़ना और जवाब देना ॥

चाल—(नाटक) जाओजी जाओ बड़े दान के दिलाने वाले ॥

जाओजी जाओ झूठी वात के बनाने वाले ।
दिलके जलाने वाले । ठेढ़ी सुनाने वाले ।
नादां बनाने वाले । आखों में आने वाले ॥
क्यों मरोड़ दामन हाथ मे छुड़ाने वाले ॥ जाओ० ॥ टेक ॥
झूठा ही प्यार घरबार यह संसार देगा ॥

कोई ना यार वफ़ादार ना हितकार देखा ॥
कर्म गती है न्यारी । काहु न जाए टारी ॥
सुनकर बातें तिहारी । चोट लगी है भारी ॥
मैं दुखयारी–अबला नारी–किसमत मारी–रोते गारी ॥
क्यों बालम तरसाने वाले ॥ जाओ० ॥

१३१

श्रीपाल का मैनासुन्दरी को राज़ी करना और समझाना ॥
चाल—चलती चरखा चंचल चातुर सुन्दर नार अलबेली ॥

सुन तू समता मनमें धार सुन्दर नार अलबेली ॥
क्यों लोचन भर भर रोवे । क्यों जान पियारी खोवे ।
मुख पूनम चान्द उजारी ॥ सुन० ॥ टेक ॥
दोहा—तू सतियों में श्रोमणी तू है परम सुजान ।
शील धुरंधर तू सही तू है गुणकी खान ॥
हां हां शुध हिरदे वारी । तू कष्ट निवारण हारी ॥
तू है मेरी प्राण प्यारी ॥ सुन० ॥ १ ॥
दोहा-जो बालम परदेश जा अंचल पकड़े नार ।
बुरा सगुन ताहे होत है देखो सोच विचार ॥
ताते मैं बैन उचारी । तैं क्यों उल्टी मन धारी ॥
ओहो हो भोरी भारी ॥ सुन० ॥ २ ॥

१३२

मैनासुन्दरी का राज़ी होना और जवाब देना ॥
चाल—क्लावे दर्द दिल० ॥

पिया गर तुम नहीं ठैरो न अपने संग लेजाओ ।

खैर मरज़ी तुम्हारी है मैं अपने आप सहलुंगी ॥ १ ॥
जहां जी चाहे वहां जाओ मैं नहीं रोकूं मगर सुनलो।
न आए तुम जो आठों को तो मैं जिन दिक्षा लेलुंगी ॥ २

१३३

श्रीपालका जवाब ॥
चाल—इलाजे दर्द दिल०

निभाऊंगा वचन अपने न करतू सोच कुछ दिलमें।
आन सिधचक्र की मुझको इसी दिन लौट आऊंगा ॥ १
अगर तू दिक्षा ले लेगी मेरी प्यारी यकीं समझो।
कि पहले तेरी दिक्षा से मैं अपने जी से जाऊंगा ॥ १ ॥

मैना०—(वार्तालाप) अय प्राणनाथ दासी की ...
प्रार्थना है कि आप अपने संग कुछ फ़ौज (रक्षक
अवश्य लेजावें। और इस बातको निश्चय
समझें कि यदि बारा बरस में अष्टमी के
आपका शुभागमन नहीं होगा तो आपकी
अभाग्य दासी अवश्य जिन दिक्षा ले लेगी।

१३४

श्रीपाल का मैनासुन्दरी को तसल्ली देना और बारा बरस मे
अष्टमी के दिन आने का वादा करना ॥
(चाल नाटक ....) ... यहां कौन दुख के लिये लाया मुझको

बस अकेला कहीं परदेश को मैं जाऊंगा ॥
अपनी क़िस्मत को फ़क़त संग में लेजाऊंगा ॥ १ ॥
रंज जाने का मेरे कुछ भी न करना मनमें।

यहांपे खुश रहना व जिन धर्मको रखना मनमें ॥ २ ॥
इन भुजाओंकी कसम खाके यह कहता हूं मैं ॥
ठीक पत्थरकी समझ लेना जो कहता हूं मैं ॥ ३ ॥
बरस बारामें दिन आठोंको मैं आजाऊंगा ।
गर न आया तो उसी दिन कहीं मरजाऊंगा ॥ ४ ॥
मैं तो बस डाल कमंद यहां से अभी जाताहूं।
तुम्हें भगवान भरोसेपे छोड़ जाता हूं ॥ ५ ॥

१३५

(श्रीपालका भगवानको याद करना और महलसे कमन्द डालकर उतरना और अकेला परदेश में चला जाना ।)

चाल—(नाटक) मेरी माने जो माने क्या डर है ॥

प्रभु चरणों में तेरे यह सर है-तुझ भरोसेपे मेरा सफ़र है ॥
हां सबको छोड़ जाता हूं-किस्मतको लिये जाता हूं ॥
आगे जा-चल दिखा-काम बनाके जल्दी आ ॥
देखूं किस्मत में क्या क्या असर है ॥ तुम भरोसे० ॥
(कमन्द डालकर चला जाना और परदा गिरना)

इति न्यामतसिंह रचित मैनासुन्दरी
नाटक का दूसराऐक्ट समाप्तम्

तीसरा ऐक्ट

श्रीपाल का विद्या सिद्ध करना, धवल सेठ से मिलना, चोरों को जीतना, सहस्र कूट चैत्यालय को खोलना, रैणमंजूषा को ब्याहना, धवल सेठ का रैणमंजूषा पर आसक्त होना और श्रीपाल को दरिया में डालना।

जंगलका परदा

श्रीपालका वत्सनगर में पहोंचना ॥ नन्दन वन और चम्पक वन की सैर करना एक वृक्ष के नीचे एक वीर को वस्त्राभूषन पहने हुये मंत्र जपते हुये और मंत्र सिद्ध न होने से क्रोध करते हुये देखना और श्रीपालका वीरसे हाल पूछना (वार्तालाप)

श्री०-अय मित्र यह कैसा मंत्र जप रहे हो और आपका चित्त क्यों चपल हो रहा है ॥

वीर-(चौंककर और दोनों हाथ जोड़कर) मेरे गुरुने एक मंत्र दिया है ॥ जिसको मैंने जपना प्रारम्भ किया है परंतु न मेरा मन स्थिर होता है न यह मंत्र सिद्ध होता है आप सहनशील हैं इस मंत्रको आराधें और कृपा करके मेरे इस कामको साधें ॥

श्री०—अय मित्र हम रस्ते चलते मुसाफिर हैं। विद्या साधन की क्रिया को क्या जानें ॥

वीर—(हाथ जोड़कर) अय स्वामी आप मुझको अभयदान दें एकवार इस मंत्रको आराधें आपकी कृपा से जरूर यह विद्या मुझको सिद्ध होगी ॥

श्री०—(मंत्र जप कर और विद्या सिद्ध करके) अय मित्र यह लो आपकी विद्या सिद्ध होगई ॥

वीर—(श्रीपालके पाओं पकड़ कर) अय मित्र आपको धन्य है आप मुझे आज्ञा दें मैं घरको जाता हूं ॥ इन सब विद्याओं के आप मालिक हैं मैं आपके चर्णों में सर झुकाता हूं ॥

श्री०—अये वीर मैंने रस्ते चलते अपने दिलका इमातहान कियाहै, आप अपनी विद्या संभालें इनमें मेरा हक्क्याहै

वीर—(सब विद्या लेकर) अय स्वामी मैं आपका सेवक हूं आपने मेरा वड़ा उपकार कियाहै जो वड़ी वड़ी विद्या हैं वह आप रक्खें और जो विद्या आप मेरे योग्य समझें वह अपने हाथ से मुझे दें ॥

श्री०-अय मित्र यह सब विद्या आपकी हैं इनमें मेरा कोई भी हक नहीं है ॥

वीर-(हाथ जोड़कर) आप यह दो विद्या एक शत्रु निवारण और दूसरी जल तारणी तो जरूरलें और आप कुछ दिन यहां आराम करें ॥

श्री०—(दोनों विदा लेकर) अच्छा आपकी मरज़ी। हे मित्र मैं यहां ठैर नहीं सकता मुझे आगे जा[illegible] है (रवाना हो)
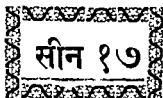
बाग़का परदा ॥

१३७

नोट-कोशंमीपुर नगर में राजा रथवाहन राज करता था और उस नगर में सेठ नामी एक साहुकार था, यह साहुकार पानसौ जहाज़ भरकर [illegible] का सामान और आठ हज़ार फ़ौज़ लेकर व्यौपार के लिये परदेश को [illegible] हुवा। जब भृगुकछपुर पट्टन के करीब पहोंचा तो उसके जहाज़ [illegible] अटक गए, सो, धवल सेठ को एक वीर ने बतलाया कि [illegible] पुरुष को बली देने से यह जहाज़ चलेंगे॥ धवल सेठ भेट लेकर भृगुकछपुर पट्टनके राजा के पास गया और एक पुरुष बलीके वास्ते मांगा। राजा ने सिपाहियों को हुक्म दिया कि कोई पुरुष तलाश करके सेठ जी को दे दो।

१३८

श्रीपाल का भृगुकछपुर पट्टन में पहोंचना और एक उपवन में एक वृक्ष के नीचे सोजाना सेठ जी के महाजन और सिपाहियोंका शहर और वन में किसी योग्य पुरुषकी तलाश करते हुवे नज़र आना और उसी वन में पहोंचना जहां श्रीपाल सोया हुआ है। और सबका आपस में बातें करना ॥ (वार्तालाप)

महाजन (आपस में) ओहो यह तो भला मनुष्य है इसी से काम सरगा ॥

सिपाही–फिर इसको उठाएगा कौन यह तो किसीसे भी नहीं पकड़ा जाएगा ॥

महाजन–(श्रीपालकी तरफ जो इनकी बातें सुनकर नींद से जाग उठा था देखकर और हाथ जोड़कर) हे महाराज हम आपकी सेवा करनेको आएहैं आप को देखकर हमारे हृदय में सनेह उत्पन्न होता है हे स्वामी हमसे यह पाप नहीं हो सकता ॥

श्रीपाल—अय महाजनों कैसा पाप । तुम्हारा क्या मतलबहै हमको साफ साफ समझाओ और तुम अपने दिल में मत डरो ॥

महाजन–हे महाराज एक धवल सेठ नामी साहुकार है। उसके सागरमें जहाज अटक गए हैं एक योग्य पुरुषका बलीदान देनेका विचार है सब जगह तलाश किया कोई योग्य पुरुष नहीं मिला। अगर खाली जाते हैं तो सेठजी हमको मरवा देगा या जोधा भेज कर हमको पकड़ लेगा और दुख देगा सो आपकी शर्ण आए हैं ॥

१२९

श्रीपाल का जवाब

चाल—(नाटक) मोहनियाँ जी मानों क्या डर है ॥

धारो धारोजी धीरज क्या डरहै। मोहे मरनेका नहीं खतर है ॥

चाहो तो संग जाता हूं—भ्रम सबका मिटा आता हूं ॥
वहां पे जा–बल दिला–दुख मिटा के जल्दी आ ॥
चलदूंगा आगे सफ़र है–कहदो जो कुछ कि तुमको फ़िकर है

१४०

महाजनों का जवाब ॥
चाल—पनघट पर हो रही भीर सांसपर घड़ा धरे पनिहारी ॥

हम सबपर पड़रही भीड़ हिये में दया धरो बलधारी ॥ टेक ॥
टुक उठकर हमसंग चलिये, नाथ हम सबका कष्ट निवारीजी
तुम सब जन पर उपकारी, सेठ तुम निरख परख हित धारोजी॥१॥

१४१

श्रीपाल का खड़ा होना और महाजनों से कहना और उनके साथ रवाना होना ॥
चाल—इलाजे दर्दे दिल० ।

मेरी किस्मत में क्या लिक्खा है इसको आजमाउंगा ॥
तुम्हारे पे पड़ा जो दुख उसे जाकर हटाउंगा ॥ १ ॥
किसी दिन तो था कोटी भटका बल मेरी भुजाओं में ॥
घटा है या बढ़ा है आज इसको आजमाउंगा ॥ २ ॥
अपूरब बात यह मुझको मिली है आज दुनिया में ॥
शुबा में अपनी आंखों से देख जीका मिटाउंगा ॥ ३ ॥
करम से आज सन्मुख हो लड़ूंगा जाके दरिया पे ॥
चलो कुछ रंजोग़म दिलमें नहीं अपने में लाउंगा ॥ ४ ॥
(सबका रवाना होना)

सेठजी के डेरेका परदा

१४२
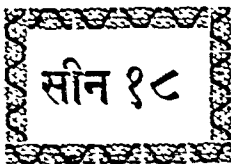
श्रीपाल और सब महाजनों का धवल सेठके पास पहोंचना
और महाजनों का सेठजी से कहना ॥ (वार्तालाप)

महाजन–सेठजी मनका सोच दूर करो देखो आपके भाग्य से यह कैसा लक्षणवंत पुरुष मिलगया है ॥

सेठजी–(श्रीपालकी तरफ़ देखकर और खुश होकर) बहुत अच्छा चलो दरियाके पास चलो बाजे बजवाओ मंगलाचरण गावो अनेक प्रकार का दान करवाओ इस पुरुषको स्नान कराओ अंगमें चन्दन लगाओ वस्त्राभूषन पहनाओ जलदेवी की पूजा करावो और बली चढ़ाओ ॥

(सबका चला जाना)

दरियाका परदा

१४३
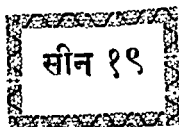
श्रीपाल को घेरे हुवे सबका दरियापे आना और बाजोंका बजना श्रीपालको वस्त्राभूषण पहनाकर सेठजीके सामने लाना ॥ एक वीर का श्रीपाल को बलिदान देनेके लिये तलवार खेंचना और श्रीपाल का सेठसे कहना ॥

चाल—(इन्दरसभा) अरेलाल देव इस तरफ जल्द आ ॥

सुनो सेठजी कर इधर को निगाह ॥
कहो तो है क्या मुद्दआ आपका ॥१॥
है मंशा कि प्रोहण चले आपका ॥
या है मुद्दआ बस मेरे क़त्लका ॥ २ ॥

१४४

सेठका जवाब ॥

चाल (बमाच)-औसे राजा दशरथ के पुत्र चार ॥

देखो देखो जी सुभट सुन्दर कुमार ॥ टेक ॥
ना तुमसे कछु बैर हमारा ॥ ना तुम मारनका विचार ॥ १ ॥
निकले प्रोहण पड़े भंवरमें ॥ कारज है यह ही हमार ॥ २ ॥

१४५

श्रीपालका जवाब ॥

चाल-(नाटक) किस्मत सदपर लाती आफ़त ॥

मूरख बन्दे हियेके अंधे ध्यान हियेमें धर कर देख ॥
जीव हतेसे कहो तो कैसे चलेंगे प्रोहण हित कर देख ॥
कितने तेरे वीर सुरमा जोधा क्षत्री गिण कर देख ॥
जो मैं अपना बल परकाशूं छिनमें मारूं लड़ कर देख ॥
तेरी किसने मत हरी तेरी मौत आ लगी ॥
मैं कोटीभट बली ॥ देता मुझे बली ॥
कुछ मनमें कर शरम ॥ अय पापी बेधरम ॥
ले शर्ण जिन धरम ॥ तज पापका भरम ॥ धरकर० ॥

१४६

सेठजीका हाथ जोड़कर जवाब देना ॥ (दोहा)

दया जो हमपर कीजिये, तुमहो गुण गम्भीर ॥
हाथ जोड़ विनती करूं, मुआफ करो तक़सीर ॥

१४७

श्रीपालका जवाब देना और सेठजीको धमकाना ॥

चाल—(नाटक) ऐसे तुमने देरे मेरे मैंने ला दो देखे माते ॥

तू है कैसा पाजी लोभी पापी नरकों जाने वाला ।
परका जीवन हरनेवाला ॥ सबको पापी करने वाला ॥
पर धन ऊपर मरनेवाला ॥ धर्म उठाकर धरने वाला । कैसा०
तुमसे ऐसे पापी लालच में जो आते हैं जो आते हैं ॥

वह मरके सीधा नरकों माहीं जाते हैं वह जाते हैं ॥
जावो जावो यहांसे जाओ, मतना अपना मूंह दिखलाओ
पत्थर सेती सर टकराओ, जैसा करना वैसा पाओ ॥
तुझे मारूं इसी दम, अभी भेजूं द्वारे जम ॥
महा पापी बेशरम ॥ तू है लोभी नर अधम ॥
अरे मूरख पाजी दुष्टी पापी परकी हिंसा करने वाला ॥

१४८

धवल सेठ और सब महाजनोंका अर्दास करना ॥

चाल—अपनी हमें भक्ती का शुभ दीजो दान ॥

अपनी हमें करुणाका अब दीजो दान ॥ टेक ॥
तू दयावान हितकारी । तू शीलवंत गुणधारी ॥
बचावो हमरे प्राण ॥ अपनी० ॥ १ ॥
अब मनका रोस निवारो । टुक करुणा चितमें धारो ॥
तू कोटीभट बलवान ॥ अपनी० ॥ २ ॥
तू दुक्ख मिटावनहारा । अब करो सभी निस्तारा ॥
शरणली तुमरी आन ॥ अपनी० ॥ ३ ॥

१४९

श्रीपाल का दया करना और महाराज चढ़नेका हुक्म देना और अपने राजों से ग्रहाज़ चलाना और सबका जय जयकार बोलना ॥

चाल नाटक-(मैरवीं कंओल) क्या पिताकी प्रीतिने यह गावी सर।

करन दयाके वेगीसे सब आवो उरा-सब आवो उरा ॥
भगवत बिचार करूं-श्रीदान उद्धार करूं ॥

पावों से उभार धरूं-सबको यहांसे पार करूं ॥
ओ अभिमानी-है हैरानी-बलदेने की मनमें ठानी ॥
थी नादानी-आगे ऐसी मत करो नादान ॥
अब तन मन धनसे जिनवरके गुण गावो सदा—
गुण गावो सदा ॥ भरम० ॥
(जहाजका चलना और सबका जय जयकार बोलना)

१५०

नोट-मंत्री ने धवल सेठ से कहा कि अगर श्रीपाल को अपने साथ ले चलें तो अच्छा है यह कोई पुण्यवान पुरुष है रास्ते में इससे अनेक प्रकार की सहायता मिलेगी सेठजीने इस राय को पसन्द किया और जहाज़ को वापिस श्रीपाल के पास लाये और उससे साथ चलने के लिये अर्दास करते हुये ॥

सेठजी-हे स्वामी आपने हमारे प्राण बचाये हैं आप महा परोपकारी हैं आप हमारे साथ चलें और जो चाहें सो लें
श्रीपाल-हे सेठ अगर तू दसवां हिस्सा मालका देवे तो मैं तेरे साथ चलूं ॥
सेठजी-हे स्वामी हमारे से जो बनसके सो मांग लो ॥
श्रीपाल-सुनो सेठ दसवें हिस्से से कम नहीं लेंगे ॥
सेठजी-अच्छा कंवरजी आपको दसवां हिस्सा ही देंगे आप हमारे संग चलें ॥ हे कंवरजी मेरे कोई पुत्र नहीं है और मैं आपको अपना धर्मका पुत्र बनाता हूं आप मेरे सब मालके मालिक है और मैं

आपसे कभी दगा नहीं करूंगा आपसे प्रण हूं आप अंगीकार करें ।

श्रीपाल-अच्छा पिताजी चलो में अंगीकार करता हूं ॥

(श्रीपाल और सबका जहाज़ पर सवार होना और रवाना होजाना ॥ परदा गिरना)

सीन २०
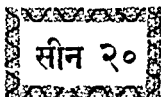
दरियाका परदा

१५१

रास्ते में एक लाख चोरोंका आना और मल्लाहोंका पुकारना ॥ सब लोगों का हाहाकार मिचाना ॥ (वार्तालाप)

मल्लाह-चोर आवत हैं सब खबरदार होजाओ ॥

महाजन-(रोते हुवे) हाए कौन बिपत आई कर जावें और कैसे प्राण बचावें ॥ हायरे ॥

धवल सेठ-मत घबराओ फ़ौरन फ़ौज तय्यार करो लड़ाई का सामान करो ॥

१५२

अब फौजका तय्यार होकर आना और धवल सेठका फौज लेकर लड़ाई जाना । और लड़ाई करना और चोरोंसे हारकर वापिस भागना और चोरों धवल सेठको बांधकर ले जाना और महाजनों का सिर पटकना । श्रीपाल का

हाल देखकर हंसना और महाजनों का श्रीपाल के पास आना और अर्दास करना (दोहा) ॥

सुनों कंवर जी सेठ को, बांधले गए चोर ॥
जाय छुड़ावो वेगही, जो हो तो बल जोर ॥

१५३

श्रीपाल का जवाब देना और लड़ाई के लिये रवाना होना ॥
चाल—(नाटक) बहादुर जंगी सारे नंगी मियान करो शमशीर ॥

अय तब्बारो साहूकारो ज़रा धरो मन धीर ॥
अबही चलकर सन्मुख लड़कर दूर करूं सब पीर ॥
चोर लुटेरे, भील हकेरे क्या गूजर क्या हीर ॥
देव अरी गण भूत परी जिन डारूं दममें चीर ॥ अय० ॥

१५४

श्रीपाल का चोरों को जीतना और धवल सेठ को छुड़ाना और चोरों को बांधकर लाना और सेठजी से कहना ॥ (वार्तालाप)

श्रीपाल—कहो पिताजी इन चोरों को मारूं या छोड़ूं ॥
सेठजी—अय मंत्रियो आपकी क्या राय है ।
१ मंत्री—इनको क़त्ल करवादो ॥
२ मंत्री—अजी आग में जलादो ॥
३ मंत्री—नहीं नहीं हाथ पाओं काट डालो ॥
४ मंत्री—अजी बस सबको समुद्र में डुबादो ॥
५ मंत्री—नहीं नहीं इनकी खाल में भुस भरवादो ॥
सेठजी—हां इनको अनेक दुख देकर मार डालो ॥

१५५

श्रीपाल का दया करना और कहना ॥

चाल—पहलू में यार है मुझे उनकी खबर नहीं ॥

दुनिया में कोई जीव सताना नहीं अच्छा।
सुनिये पिताजी जुल्म दिखाना नहीं अच्छा ॥ १ ॥
हृदय में अपने जीव दया को विचारिये।
देखो किसी का खून बहाना नहीं अच्छा ॥ २ ॥
अपने किये का आप नतीजा उठाएंगे।
करुणा का भाव दिलसे हटाना नहीं अच्छा ॥ ३ ॥
है जगमें दया सार दया मूल धरम का।
भूले से दिलको संग बनाना नहीं अच्छा ॥ ४ ॥

१५६

सेठजीका जवाब (वार्तालाप)

बहुत अच्छा कंवरजी जो आपकी मरज़ी हो सो कीजिये॥

१५७

श्रीपाल का चोरों को छोड़ना और चोरों से कहना (वार्तालाप)

अये मित्रो तुमको जो दुख हुवा इसमें हमारी का
नहीं खता, आपने हम पर धावा किया और हमारे पि
को बांधा इस कारण मुझे भी तुमको बांधना पड़ा अ
आप मेरा अपराध क्षमा करें क्रोध भाव को तजकर
भाव धारण करें और हमारे मित्र बनें।

१५८

चोरों का श्रीपालको महिमा दर्शन करना और बहुतसा माल देकर चला जाना और जहाज़ों का रवाना होना ॥

चाल—हुआ सुत राम दशरथ के बहादुर हो तो ऐसा हो ॥

मिले श्रीपाल कोटीभट बहादुर हो तो ऐसा हो ॥
जीत लिया लाख चोरों को दिलावर हो तो ऐसा हो ॥ १ ॥
दया दिलमें विचारी है खता सारी मुआफ़ करदी ।
बचादी जान सारोंकी सखी गर हो तो ऐसा हो ॥ २ ॥
नज़रहै आपकी यह माल सो मंजूर कर लीजे ।
दयाधारी तू बलधारी ताजवर हो तो ऐसा हो ॥ ३ ॥
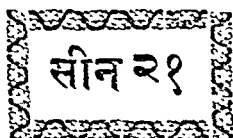
हंस द्वीपका परदा

१५९

नोट—हंसद्वीप में राजा कनककेतु राज करता था और उसकी रानी का नाम कंचनमाला था ॥ चित्र विचित्र दो लड़के व सती रैनमंजूषा एक पुत्री थी ॥ एक दिन राजाने श्रीमुनि महाराजसे पूछा कि मेरी पुत्री रैनमंजूषा का कौन पति होगा मुनि महाराजने जवाब दिया कि जो कोई पुरुष सहस्रकूट चैत्यालय के मन्दिर किवाड़ खोलेगा वह तेरी पुत्री का वर होगा। राजाने सहस्रकूट चैत्यालय पर पहरा लगाया और हुक्म दिया कि जिस वक्त कोई पुरुष इस मंदिर के किवाड़ खोले फौरन खबर दीजावे ॥

१६०

हंसद्वीपका परदा नजर आना धवल सेठ और श्रीपालके जहाजों का हंसद्वीप में पहोंचना और श्रीपालका श्री जैन मंदिरजी के दर्शन करने को जाने के लिये सेठजीसे आज्ञा मांगना ॥

श्रीपाल-हे पिताजीमैं श्रीजैन मंदिरजीके दर्शन को जात

सेठजी-अच्छा पुत्र जाओ जल्दी आजाना ।

(श्रीपाल का रवाना होना)
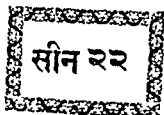
सहस्रकूट चैत्यालय का परदा

१६१

सहस्रकूट चैत्यालयका परदा नजर आना और श्रीपालका मंदिर के दरवाजे पर पहोंचना और किवाड़ बंद देखकर दरवानों से हाल पूछना ॥ (वार्तालाप)

श्रीपाल—अय दरवानों यह किसका मंदिर है ॥

दरवान—हे महाराज यह श्री जैन मंदिर है और सहस्रकूट चैत्यालय नाम है ॥

श्रीपाल—यह बन्द क्यों है क्या किसी व्यंतर या देव इसको कील दिया है या किसीने कलंक दिया है

दरवान–महाराज इसके वज्रमई किवाड़ हैं सो इसको कोई खोल नहीं सकता है और कोई वात नहीं है ॥

श्रीपाल—अच्छा इसको हम खोलेंगे ॥

दरवान—अजी महाराज आप जैसे अनेक आ चुके ॥

श्रीपाल—अच्छा तुम सव हट जाओ मैं भी अपनी ताक़त आजमाऊंगा ॥

दरवान–महाराज यह वज्रमई किवाड़ कौन खोल सकता है आप अपना रास्ता लें काहे का व्यर्थ परिश्रम करते हो॥

१६२

श्रीपाल का जवाब देना ॥

चाल—(गज़ल) यहां फैले बाल बिखरे हैं यहां क्यों सूरत बनी गमकी ॥

विना खोले किवाड़ इसके नहीं मैं यहां से जाऊंगा ।
भुजा अपनी का बल मैं आज यहां तुमको दिखाऊंगा ॥ १ ॥
प्रभू का नाम ले करके हाथ जिसदम लगाऊंगा ।
संग हो वज्र हो कुछ हो तोड़ एकदम बगाऊंगा ॥ २ ॥
समझते क्या हो तुम मुझको है कोटीभट नाम मेरा ।
हटो सारा भरम दिलका तुम्हारा मैं मिटाऊंगा ॥ ३ ॥

१६३

दरवानों का दूर होना और श्रीपाल का [illegible] और फिर [illegible] पढ़कर किवाड़ खोलना और भीतर [illegible] जाना और [illegible] दर्शन करना और जयजयकार करना ॥

श्रीपाल—अच्छा आपकी मरजी आप यहां के राजा हैं आपकी आज्ञाका पालन करना मेरा धर्म है॥

(सबका चला जाना)

सीन २३

राजा के महलका परदा

१६६

राजा का श्रीपालको साथ लेकर दरबार में पहुँचना और रैनमंजूषा का श्रीपालके साथ ब्याह होना और सबका मिलकर मुबारकबाद गाना। और श्रीपालका रैनमंजूषा को लेकर चला जाना और परदा गिरना।

चाल—(दादरा) मुबारकबादी गाओ सारी सब शादी की॥

मुबारक बादी गाओ शादी दूल्हा दुल्हन की।
राज दुलारी की देखो प्यारी प्यारी सूरत नियारी॥ दूल्हा०
देख [illegible] सारे [illegible] में छूट मिला है शादी का।
तन मन धन सब कुरबान करा।
कलियां खिलतीं हँसतीं गलियां। दूल्हा दुल्हन की।

सीन २४

दरिया और जहाजका परदा ॥

१६७

श्रीपालका रैनमंजूषा को लेकर हंसद्वीपसे रवाना होना और रास्ते में एकदिन श्रीपालका रैनमंजूषासे जहाज़ में चलते चलते बातचीत करना

चाल—(इन्द्रसभा) अरे लालदेव इस तरफ आना जरा ॥
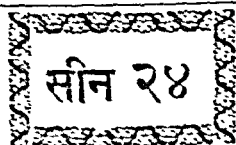
सुनो प्यारी मेरी तरफको निहार ॥
पिताने तुम्हारे किया क्या विचार ॥ १ ॥
समझ में नहीं आती कुछ मेरे बात ॥
कि क्यों तुमको परणी विदेशी के साथ ॥ २ ॥

१६८

रैनमंजूषा का अफसोस करना और कर्मों की निन्दा करना ॥ दोहा ॥

राजा हमरे तात ने जो कुछ किया विचार ॥
सो हमको प्रमाण है लीना मस्तक धार ॥ १ ॥
कन्या को पितु मातकी आज्ञा है सुखकार ॥
जिन शासन की आन है सतियों का शृंगार ॥ २ ॥
परदेशी निर्धन दुखी चाहे रूप कुरूप ॥
मेरे तो हो पती हरि यह काम स्वरूप ॥ ३ ॥

१६९

श्रीपालका रैनमञ्जूषा को अपना हाल बताना और उसकी तसल्ली करना
चाल नाटक—(संकीर्ण मैत्र्यौ) वेदोंपे विश्वास लामोरे भाइयो

वातों पे विश्वास तू मेरे लाइयो ॥
राजा महान हूं—कोटी बलवान हूं ॥ वातों पे० ॥
मैंनासुन्दर राणी है—चम्पापुरी रजधानी है ॥
भारतवर्ष के पुरुषों ने शमशीर मेरी मानी है ॥
हँसने की वातोंपे प्यारी ना जाइयो ॥ वातों पे० ॥
दोहा—वीर दमनका पुत्र हूं, कुन्दप्रभा है मात ॥
धर्म पिता मम जानियो, धवल शाह विख्यात ॥ १ ॥
कुछ कारण ऐसो भयो, कर्म गती बलवान ॥
राज चचाको सोंपकर, आ पहोंचा इस थान ॥ २ ॥
तू अपने सब मनका संदेह मिटाइयो ॥ वातों पे० ॥

१७०

रैनमञ्जूषा की तसल्ली होना और खुश होकर जवाब देना ॥
चाल—[गजल] इलाजे दर्दे दिल० ॥

मेरे धन भाग हैं राजा पती तुझसा मिला मुझको ॥
सियाको राम रुकमणको हरी और तू मिला मुझको ॥ १ ॥
थे पहले तो बहुत संदेह सुनो राजा मेरे मनमें ॥
मिटा दिये आपने सारे हाल अपना सुना मुझको ॥ २ ॥
विना जाने कहा जो कुछ खता सब मुआफ करदीजे ॥
आप राजा हैं कोटी भट न था पहले पता मुझको ॥ ३ ॥

नहीं अब स्वर्गकी ख्वाहिश तमन्ना है नहीं धनकी ॥
आपके देख के दर्शन सुनो सब कुछ मिला मुझको ॥ ४ ॥
झुकाती हूं मैं सर अपना प्रभू के सार चरणों में ॥
करूं धनवाद तन मनसे पती तुझसा मिला मुझको ॥ ५ ॥
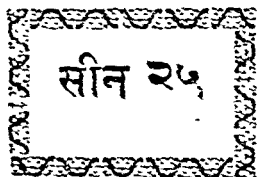
सीन २५

टापूका परदा

१७१

धवल सेठका एक दिन रैनमंजूषाको देखना और आसक्त होना और उसके वियोग में बीमार होना और मूर्छा आना श्रीपालका सेठको सचेत करना और हाल पूछना ॥ (वार्तालाप)

श्रीपाल—हे पिताजी आज आपका क्या हालहै क्या आपको किसी व्यंतरने सताया या समुद्रकी लहरने घबराया।

सेठ०—हे पुत्र मुझे बायकी बीमारी है पांच दस वर्ष में कभी कभी यह बीमारी हो जाती है आप न घबरावें आराम करें ॥ (श्रीपालका चला जाना)

सुमतप्र० मंत्री—सेठजी अब आपका क्या हाल है। आपकी बीमारी बढ़ती जातीहै कोई दवाई कारगर नहीं होती जो आप फरमावें वही इलाज करें हम सब आपकी आज्ञा पालन करने को तय्यार हैं ॥

१७२

सेठका जवाब ॥

चाल—(गुज़ल) इलाजे दर्द दिल० ॥

हकीमों से इलाज अबतो हमारा हो नहीं सकता ॥
वह अच्छा कर नहीं सकते मैं अच्छा हो नहीं सकता ॥ १ ॥
रैनमंजूषापे मेरा हुआ है आज दिल मायल ।
बिना उसके मिले समझो गुजारा हो नहीं सकता ॥ २ ॥
करो तदबीर कुछ ऐसी मिले वह नाज़नी मुझसे ॥
दवाई लाख तुम करलो सहारा हो नहीं सकता ॥ ३ ॥
अभी मरजाऊंगा समझो शुबा मत मेरे मरने में ॥
अगर जल्दी से इसका कोई चारा हो नहीं सकता ॥ ४ ॥

१७३

सुमत प्रकाश मंत्री का जवाब ॥

चाल—इलाजे दर्द दिल०

इलाजे दर्द दिल हमसे तुम्हारा हो नहीं सकता ॥
हम अच्छा कर नहीं सकते तू अच्छा हो नहीं सकता ॥ १ ॥
सती है पाक दामन है वह कोटीभटकी रानी है ॥
[illegible] को उसके यहां लानेका यारा हो नहीं सकता ॥ २ ॥
[illegible]को बन्द कर लीजे इसीमें कुछ भलाई है ॥
जतन चाहे सो करो मनका बिचारा हो नहीं सकता ॥ ३ ॥
खबर इस बातका कानों में गर श्रीपालके पहोंचे ॥
हमारा और तुम्हारा फिर गुजारा हो नहीं सकता ॥ ४ ॥

१७४

धवल सेठका जवाब॥ (शैर)

मंत्री रहने दे बस तू अपने इस उपदेश को ॥
मैं तो दुशमन जानता हूं ऐसे खैर अंदेश को ॥ १ ॥
कर कोई तदबीर जल्दी उसको दे मुझसे मिला ॥
वरना जा यहां से चला नाहक मेरा मत दिल जला ॥ २ ॥

१७५

सुमतप्रकाश मंत्री का जवाब॥
चाल—(नाटक) दिले नाशां को हम समझाए जाएंगे ॥

तुझे नेकी का रस्ता बताए जाएंगे ॥
मानो न मानो यह मंशा तुम्हारी ॥
न समझाने से हमतो बाज आएंगे ॥ तुझे० ॥
वह श्रीपाल की रानी है समझ तो जाहिल ॥
पाक दामन है सती शील में पूरी कामिल ॥
धर्म सुत तूने श्रीपाल बनाया जाहिल ॥
है गजब पुत्र बधू पे है तेरा दिल माइल ॥
सारी दुनिया क्या कहेगी तुझे पापी जाहिल ।
न यह पापों के फंदे ओ अंधे हटाए जाएंगे ॥ तुझे० ॥

१७६

सेठजी का सुमतप्रकाश मंत्री पर कोप करना और सुमतप्रकाश मंत्री को बुलाना ॥ (वार्तालाप)

सेठ०—अय नमक हराम मंत्री तुम मेरे सामने से चले

जावो और कुमतप्रकाश मंत्री तू कहां है फ़ौरन हाज़िर हो ॥

कुमतप्र०—सेठजी साहिब मैं हाज़िर हूं। किस तरह किया याद, कुछ कीजिये इर्शाद, फ़रमाइये दिलका हाल, दिखाऊं अपना कमाल ॥

सेठ०—हां हमको भी तेरी चालाकी और होशियारी पे भरोसा है मगर मेरे कामको ज़रा दिलोजान से करियो ऐसा न हो कि नाकामयाबी हो ॥

कुमतप्र०—अजी आप फ़रमाइये आपके इर्शाद करने की देर है वरना उसके पूरा करने में क्या हेर फेर है ॥

सेठ०—मगर मेरा काम ज़रा मुशकिल है ॥

कुमतप्र०बंदा भी आसान करने के क़ाबिल है ॥

सेठ०—देखो कभी डर न जाना ।

१७७

कुमतप्रकाश मंत्री का अवाब ॥

चाल—(नाटक) मैं भारत का परकाला हूं ॥

मैं भारत का परकाला हूं । मैं किस्मे हरने वाला हूं ॥
फंदा फांसा हीला झांसा । लाखों हिकमत वाला हूं ॥ टेक ॥
बदमाश बदचलन का पढना है मैंने माना ॥
गर हूं उनों का दादा शैतान का हूं नाना ॥

धोका फरेब देकर करके अजब बहाना ॥
दावा यही है मेरा क़ाबूमें सबको लाना ॥
हरदम मेरे पोबारे, कुल स्याने मुझसे हारे हैं ॥
बदमाशी झगड़ेकी हंडियां में बेढब गर्म मसाला हूं ॥ मैं० ॥

१७८

सेठजी और कुमतप्रकाश की बात चीत ॥

सेठ०—शाबाश अय कुमतप्रकाश क्या कहूं इश्क़ का बीमार हूं इसीसे लाचार हूं रैनमंजूषाका आशिक़े ज़ार हूं बज़ानो दिल ख़रीदार हूं ॥

कुमत०—(हैरान होकर) राम राम यह किस का नाम लिया मैंने हाथों से दिलको थाम लिया अजी सेठजी क़ाइम रहे आपकी शौकत व शान यह अर्मान नहीं कुछ आसान ॥

सेठ०—अजी फिर कुछतो तदबीर बताइये ॥

कुमत०—क्या कहूं दिल तह वो बाला है तुमने कुछ अजब शशोपंज में डाला है ।

सेठ०—नहीं नहीं डरनेकी कौन बातहै तुममें बड़ी करामातहै

कुमत०—रैनमंजूषा श्रीपाल कोटीभट की रानी है बड़ा सती शीलकी निशानी है इसकी निसबत ऐसा ख़्याल करना अपनी जान आफ़तमें फंसानी है ॥

सेठ०—तुम कुछ फ़िक्र मत करो एक बार मेरी क़िस्मत आज़माई करो अपनी होशियारी का इम्तिहान करो ।

१७९

कुछ सोचकर कुमतप्रकाश का जवाब देना ॥
चाल—(नाटक) तुम्हे दूंगा मैं थाकी छवरया जान ॥

तेरा दूंगा बना काम आजकी रात ॥
मुझे सूझी है कैसी अनोखी यह बात ॥
मैं हूं चंचल–बनाऊं लाखों अल छल ॥
मिटादूं सारे हल चल–शैतानका काम हूं ॥ तेरा०
मल्लाह से मिलकर–उनको लालच देकर ॥
झूठा शोर मचावें—मोहण डूबे जावें ॥
बंग श्रीपाल चढ़ाऊं—रस्से काट बगाऊं ॥
वह नीचे गिरकर–सागर पड़कर–झटपट मरकर—
सब कुछ करकर ॥ दूंगा बना० ॥

१८०

सेठजी का जवाब (वार्तालाप)

सेठ—वाह वाह क्या बेनज़ीर तदबीर है अय कुमत प्रकाश मल्लाहों को फ़ौरन हाज़िर करो।

कुमत०—बहुत अच्छा मैं अभी हाज़िर करता हूं
(चला जाना)

१८१

कुमतप्रकाश मल्लाहोंका पवन सेठको फिर समझाना ॥
चाल—(मज़मून) एक तीर फैंकता जा [illegible] कमान वाले

कैसा हुवा है सारे दुनियामें नाम तेरा।
सबमें बड़ा हुवा है सेठों में काम तेरा ॥ १ ॥

निर्मल है वंश तेरा उत्तम है धर्म तेरा ।
राजों महाराजों में गिनते हैं नाम तेरा ॥ २ ॥
है आपकी सिठानी गुणवन्त खूबसूरत ।
परनार से कहो तो है कौन काम तेरा ॥ ३ ॥
वह कोटीभट की रानी पुत्री समान जानो ।
हो जाएगा वगरना वदनाम नाम तेरा ॥ ४ ॥
खोटी नजर सती को देखा तो देख लेना ।
एकदम विगड़ जावेगा लशकर तमाम तेरा ॥ ५ ॥
गर अब भी मान जावो मनसे कुमत [illegible] ।
यूं ही बना रहेगा यह खासो आम तेरा ॥ ६ ॥

१८२

धवलसेठ का जवाब [illegible]

सुनो अय मंत्री किसी शकलसे मिलादो [illegible]
फिराक में उसके वरना मेरी जान [illegible]

१८३

[illegible]

फिराक में किसके खोरहा है, तू [illegible]
जो सेठ मानो हमारा कहना [illegible]
वह पाक दामन है शील[illegible] [illegible]
तेरे लिये है जहरे कातिल [illegible]
हटाके अपने तू मनसे [illegible]

जो चाहता है बचाना नादां, अय सेठ अपनी तू जान शीरीं ॥३
धर्म का बेटा बनाया तूने, है कोटीभटको न भूल मूरख ॥
वह उसकी रानी है तेरी बेटी, सामान मान यह बात शीरीं ॥४
तुम्हारे हक़में यही भला है तेरे मरज की यही दवा है ॥
सतोंके चर्णों को धोके पीले, समझके आबे हयात शीरीं ॥५

१८४

घवल सेठ का जवाब (शेर)

हट छोड़दे छोड़ूं नहीं तू यूं कहे मैं यूं कहूं ॥
बदतर है वह बदतर है यह तू यूं कहे मैं यूं कहूं ॥ १ ॥
यह काम खोटा तू कहे अच्छा है यह मैं यूं कहूं ॥
क्योंकर बात तेरी सुनूं तू यूं कहे मैं यूं कहूं ॥२
मैं तो कहूं वह नाज़नी और तू कहे वह नागनी ॥
वह ज़हर है अमृत है वह तू यूं कहे मैं यूं कहूं ॥ ३ ॥
दारू हमारे दर्द की मंत्री तू कर सकता नहीं ॥
तेरी मेरी बनती नहीं तू यूं कहे मैं यूं कहूं ॥ ४ ॥

१८५

मुनरप्रकाश मंत्री का जवाब ॥
चाल—हमारे दर्द दिल० ॥

सती के दिल दुखाने का समर अच्छा नहीं होगा ॥
पराई नार लाने का असर अच्छा नहीं होगा ॥ १ ॥
सुता सुननार अरु भगनी अनुज नारी बराबर है ॥
इन्हें मत देखना खोटी नज़र अच्छा नहीं होगा ॥२ ॥

ज़बरदस्ती दग़ाबाज़ीसे चाहे आप जो करलें ॥
नतीजा ऐसी बातोंका मगर अच्छा नहीं होगा ॥ ३ ॥
ज़रा श्रीपाल कोटीभट का भी दिलमें खौफ़ कीजे ॥
अगर उसको खबर होगी तो फिर अच्छा नहीं होगा ॥ ४ ॥
बदीसे बाज़ आजावो हमारा मान लो कहना ।
सेठजी इस शरारतका समर अच्छा नहीं होगा ॥ ५ ॥

१८६

धवल सेठका जवाब ॥
चाल—(ग़ज़ल) इलाजे दर्दे दिल•

नतीजा इश्क़ का क्या है सो अच्छा हम भी देखेंगे ॥
बलासे जान जाएगी तमाशा हम भी देखेंगे ॥ १ ॥
पाक दामन शीलवंती बताते हो जो तुम उसको ।
रखेगी कब तलक हमसे वह परदा हम भी देखेंगे ॥ २ ॥
नहीं मरनेका ग़म मुझको न रुसवाई का डर मुझको ॥
करेगा क्या वह कोटीभट सो अच्छा हम भी देखेंगे ॥ ३ ॥
चाहे वह नागनी है ज़हरे क़ातिलहै सुनो मंत्री ॥
एक बार उस परीरुका नज़ारा हम भी देखेंगे ॥ ४ ॥
नसीहतकी बात अब किसीकी हम नहीं सुनते ॥
जो होना होगा सो होगा नतीजा हम भी देखेंगे ॥ ५ ॥

१८७

कुतवकार का मल्लाहोंको लेकर वापिस आना और सेठजी व मल्लाहोंका बात चीत करना ॥

मल्लाह—हजूर हम सब मराजिया हाज़िर हैं कहा हुक्म है

सेठजी—देखो जैसे कुमतप्रकाश मंत्री तुमको आज्ञा करे वैसा ही करो हम तुमको बहुत इनाम देंगे और राजी करेंगे ॥

मल्लाह—बहोत अच्छो महाराज ऐसोही होगा ॥

(मल्लाहों का चला जाना)

सीन २६

दरियाका परदा

१८८
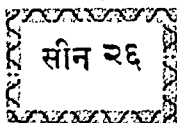
परदे के बाद जहाजोंका चलते हुये मगर मारना और मल्लाहों का पुकारना ।

मल्लाह—दौड़ियो दौड़ियो कोऊ बड़ो भारी मगरवो टकरात है शेठणियो डूबन जात है दौड़ियो दौड़ियो ॥

मल्लोग—(दौड़कर मल्लाहों के पास जाकर) अरे क्या होगया क्या आफत आगई ॥

मल्लाह—अरे कोऊ बरन पर बेगी चढ़ो श्रेठणियो डूबत जात है ॥

कुमत०—(श्रीपाल से) कुंवरजी महाराज आप जल्दी चलें जहाज डूबते हैं और रक्षा करें ॥

श्रीपाल—अरे क्या होगया है ॥

कुमत०—महाराज हमें कुछ पता नहीं ॥

श्रीपाल—(खड़ा होकर) अच्छा चलो (मल्लाहों के पास जाकर) अरे क्या शोर है क्या आफ़त है ॥

मल्लाह—महाराज मोहणियो डूबत जात है कोऊ वेगी चढ़ो वरतको ठीक करौ हमन से यो काम नहीं बनत है ॥

१८९

श्रीपालका सबको तसल्ली देना और दरत पर चढ़ना ॥

चाल (नाटक)—मेरी मानो जी मानो क्या डर है ॥

ज़रा ठैरो जी ठैरो क्या डर है-नहीं समझो कि कोई ख़तर है ॥
ऊपर को अभी जाताहूं-रस्सेको संवार आता हूं ।
अभी जा-हाथ लगा-काम बनाके जल्दी आ ॥
दिलमें न कोई फ़िकर है ॥ नहीं समझो० ॥

१९०

नोट-श्रीपालका [illegible] पर चढ़ना । [illegible] का [illegible] और श्रीपालका समुद्र में गिरना और [illegible] चढ़ना और [illegible] [illegible] ।

(पर्दा गिरना)

इति न्यामतसिंह रचित मैनासुन्दरी
नाटक का तीसरा एक्ट समाप्तम् शुभम्

मैना सुन्दरी नाटक

चौथा ऐक्ट

रैणमंजूषा का श्रीपाल के व्योग में विलाप करना, धवल सेठ का रैणमंजूषा को सताना, देवताओं का आकर सती का शील बचाना, श्रीपाल का समुद्र से पार होना। और गुण-माला से ब्याह करना ॥

१९५

मिसफ़ूरा का आभूषन उतारकर फेंकना और विलाप करना ॥

चाल—तिरी लेरे लेरे मेरे माथे का सिंगार ॥

सब तारो तारो तारो मेरे हाथों का सिंगार ॥
हाथों का सिंगार मेरे माथे का सिंगार ॥ सब० ॥ टेक ॥
कंठी बेसर बींदी बेना गल मोतियन हार ॥
क्या मोहन माला सुंदर कुंडल नेवर झंकार ॥ सब० ॥ १ ॥
लो सीस मुकट हथफूल करो चुंदरी का तार तार ॥
मेरे बालम डूबे जलमें मेरा जीना धिक्कार ॥ सब० ॥ २ ॥
मेरे करकी मेंहँदी दूर करो लगे अगन अंगार ॥
मस्तक की बींदी तारो डारो करके तीन चार ॥ सब० ॥ ३ ॥
क्या करूंगी राज और पाट करूं क्या सारा घर बार ॥
मेरा लुटगया छिनमें राजगया मेरे सरका सरकार ॥ सब० ॥ ४ ॥

१९६

सखियों का आना और समझाना ॥

चाल—यह कैसे बाल बिखरे हैं यह क्यों सूरत बनी गमकी ॥

कौन जाने कि किसमत में तुम्हारे क्या लिखा होगा ॥
बुरा हो या भला होगा जो लिक्खा है वही होगा ॥ १ ॥
खुशी कोई दुखी कोई यह सब करनी के फल जानो ॥
किया है जैसा फल उसका किसी दिन बदला होगा ॥ २ ॥

खुशी में हो गया है ग़म सदा यह भी न रहने का ॥
सबर मनमें करो रानी जो कुछ होगा भला होगा ॥ ३ ॥
विपत में हे सती जिन धर्म ही होता सहाई है ॥
लहो जिनराज का शरना इसीसे दुख जुदा होगा ॥ ४ ॥

१९७

रैनमंजूषा का जवाब ॥
चाल—यह कैसे बाल बिखरे हैं० ॥

प्रभू जाने सखी पहले जनम में क्या किया होगा ॥
किसी का धन हरा होगा किसी को दुख दिया होगा ॥ १ ॥
किसी पर पुरुष पर मैंने चलाया होगा मन अपना ॥
पती का या हुकम मेरे कभी मनसे टरा होगा ॥ २ ॥
करी होगी कभी निन्दा धरम जिनराज की मैंने ॥
या कोई जीव जल अगनी में मेरे से पड़ा होगा ॥ ३ ॥
किसी का अङ्ग उघारा या किया होगा नियम खंडन ॥
वचन झूठा कोई मूँह से कभी मैंने कहा होगा ॥ ४ ॥
लगाया होगा मैंने दाग़ अपने शील संजम में ॥
किसी का गुण मिटाया या कोई औगुण कहा होगा ॥ ५ ॥
करी होगी जुदाई या किसी नर नार मे मैंने ॥
दग़ाबाज़ी से या मैंने किसी को दुख दिया होगा ॥ ६ ॥
आज वह ही करम मेरे उदय आया पती मेरा ॥
गिरा जाकर समंदर में तड़पता या मरा होगा ॥ ७ ॥

१९८

सुमनप्रकाश मंत्री का आना और समझाना ॥
चाल—यह कैसे बाल बिखरे हैं० ॥

शुभाशुभ है सती जगमें सभी करमों से होते हैं ॥
आज दिल शाद होते हैं वह कल कर्मों को रोते हैं ॥ १ ॥
राम लछमन सती सीता किसी दिन राज भोगें थे ॥
वही एक दिन बनों में जा दुखी बेज़ार होते हैं ॥ २ ॥
सिया के वासते एक दिन राम रावण से लड़ते थे ॥
आज बनोबास देत हैं राम नाराज़ होते हैं ॥ ३ ॥
पवंजय को किसी दिन अंजना की बू न भाती थी ॥
वही जोगी से जाके रात को गमख्वार होते हैं ॥ ४ ॥
प्रभू का नाम ले रानी बस अब करले सबर मनमें ॥
धरम ही सार है जगमें इसी से पार होते हैं ॥ ५ ॥

१९९

रैनमंजूषा का जवाब ॥
चाल—(ग़ज़ल) यह कैसे बाल बिखरे हैं० ॥

सबर कैसे करूं मंत्री सबर आता नहीं मनको ॥
नहीं क़ाबू में मन मेरा टिकाऊं किस तरह मनको ॥ १ ॥
करेगा कौन जाके राज चम्पापुर बनाओ तो ॥
उजड़ गया बंश सुमेर का बंधाऊं धीर क्या मनको ॥ २ ॥
बसन्त बाग में मिलने की कही थी मैनासुन्दर से ॥
कहूंगी क्या उसे जाकर बताओ तो मेरे मनको ॥ ३ ॥

वाट देखे है मां कुंदप्रभा श्रीपाल आने की ॥
 वह मर जाएगी सुन करके बतावो क्या करूं मनको ॥ ४ ॥
चलाया पांव से मोहण वजर मई पाट जा खोले ॥
 कहां वह वीर कोटीभट दिखाऊं क्या मेरे मनको ॥ ५ ॥

२००

सुमतप्रकाश मंत्री का वैराग का उपदेश देना और तसल्ली करना ॥
चाल—(कवाली) कोई चातुर ऐसो मलो न मिलो (म्हारा)

प्यारी दुनियां है सागर दुखों से भरा ॥
यामें सुख कहीं आता नजर ही नहीं ॥
यामें मोहका जाल पड़ा है सती ॥
 जामें जीव फंसे हो खबर ही नहीं ॥१॥
कौन माता पिता कौन बंधू सुता ।
कैसे भाई बहन कैसे दारा पती ॥
इस दुनियां के नाते हैं झूटे सभी ।
 सच पूछो तो रहने का घर ही नहीं ॥ २ ॥
नदी नांव संजोग से आके मिले ।
जैसे पेड़ पे पंछी बसेरा करे ॥
जब भोर भई सब बिछड़ के चले ।
 सङ्ग चलने का कोई ज़िकर ही नहीं ॥ ३ ॥
रानी स्वारथ की है सारी दुनियां लखो ।
यामें भूल के कोई न नेह करो ॥
सूखे दरिया पे नर पशु पंछी कोई

देखो करता है आके गुज़र ही नहीं ॥ ४ ॥
चाहे फ़ौज पयादे हज़ारों रहो ।
चाहे महल क़िले में जा बंद करो ।
चाहे जंतर मंतर लाखों पढ़ो ।
मौत टारी किसी से भी टर ही नहीं ॥ ५ ॥
धन दौलत राज खज़ाना सभी ॥
कोई अन्त समय काम आवे नहीं ॥
आ मुसीबत में कोई सहाई करे ।
ऐसा कोई भी सुर या असुर ही नहीं ॥ ६ ॥
ऐसा जान के प्यारी विचार करो ।
दुख शोक तजो समता को भजो ॥
मोह माया को मन सेती दूर करो ।
मोह करने का अच्छा समर ही नहीं ॥ ७ ॥
जिनराज भजो मन धीर धरो ।
तप संजम शील सिंगार करो ॥
धर ध्यान निज आतम कर्म हरो ।
बिन धर्म के होगा गुज़र ही नहीं ॥ ८ ॥

२०१

जिनमुद्रा का मनन करना और धर्म में जी लगाना और भगवान की स्तुति करना ॥

चाल—यह कैसे बाल बिखरे हैं० ॥

तू ही तारन तरन जिनराज दुख हारी विपत हारी ॥
तू सारे विश्व का ज्ञाता तू ही शिव मगका नेतारी ॥ १ ॥

हितू तुझ सा नहीं कोई हुवा निश्चय मेरे मनको ॥
तुही उरझीका सुरझय्या तुही जग जीव हितकारी ॥ २॥
पवंजयको मिली अंजना लगाया ध्यान जब तेरा ॥
रामसे आ मिली सीता तोड़ लंकाका गढ़ भारी ॥ ॥ ३ ॥
पड़ी है नाव मंझधारी नहीं कोई मददगारी ॥
खिवय्या मेरी कशतीका तू ही मैं तुझपे बलिहारी ॥ ४ ॥
देख महिमा तेरी स्वामी तेरा शरना मैं लेती हूं ॥
मिलेगा पी हमारा भी भरोसा है मुझे भारी ॥ ५ ॥
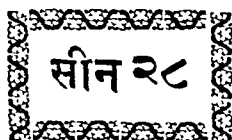
(समुद्र के किनारे का परदा)

२०२

नोट—जिस वक्त श्रीपाल समुद्र में गिरा मूल मंत्रका जाप करता हुआ अपने भुजाओं से समता भाव धारण करके समुद्र में तैरने लगा ॥

२०३

श्रीपालका समुद्रको पार करके कुमकुम द्वीप में पहोंचना और भगवान का धनवाद् गाना और एक वृक्ष के नीचे सो जाना ॥

चाल-(नाटक) मेरे ग़मका तराना सुनिये फ़िसाना अय शाहे जीशान ।

तेरा धनवाद गाऊं-सरको झुकाऊं-अय मेरे भगवान ।
तू हितकारी-दुखपर हारी-है सुखकारी-अय मेरे भगवान । तेरा०

४ सि०—भुजाओं की तरफ़ देखो नहीं बलकी कोई सीमा ।
यह शायद भीम या महावीरने अवतार धाराहै ॥

२०६

श्रीपालका चौंककर उठना और सिपाहियोंसे हाल पूछना ॥
चाल—(इन्दर सभा) मानूरहूं शोखी से शरारत से भरी हूं ॥

तुम कौन हो और किस लिये इस जा पे आए हो ।
क्यों इस क़दर घबराए हो मनमें लजाए हो ॥ १ ॥
क्यों देखते हो मेरी तरफ़ क्या विचार है ॥
भेजा किसी ने या किसीकी इन्तज़ार है ॥ २ ॥
खोफ़ो खतर का कुछ नहीं दिलमें गुमां करो ॥
जो बात है वह साफ़ मेरेसे अयां करो ॥ ३ ॥

२०७

सिपाहियों का हाल बताना और एक सिपाहीका राजाको
ख़बर करनेके लिये रवाना होना ॥
चाल—अपनी हमें भक्ती का कुछ दीजे दान ॥

कारण यहां आनेका सुनिये सरकार ॥ टेक ॥
यह कुमकुम पट्टन भारी ॥ सब सुखी प्रजा नर नारी ॥
जैन मारग परचार ॥ १ ॥
भूमंडल है भूपाला । पटनार नार बनमाला ॥
रती रम्भा उनहार ॥ २ ॥
ताके एक राज कुमारी । गुणमाला राज दुलारी ॥
शील जोबन शृंगार ॥ ३ ॥

जो पुरुष तेरे दर्श आवे ॥ वह गुणमाला को ब्याहे ॥
कही मुनि अवधि विचार ॥ ४ ॥
हम राज हुकम अनुसारे ॥ रहते हैं यहां रखवारे ॥
सुनो तुम राज कंवार ॥ ५ ॥
तुम महा पुन्य अधिकारी । आए चीर समन्दर भारी ॥
चलो वरो राज दुलार ॥ ६ ॥

२०८

[राजा भूमण्डलका आना और श्रीपालसे बात करना और श्रीपालका राजा के साथ जाना ॥

चाल—(इन्दर सभा) मेरे लाल देख इस तरफ़ जल्द आ ।

सुनो धीर गम्भीर हे गुण विशाल ॥
किया देशको मेरे तुमने निहाल ॥ १ ॥
हैं धनभाग आए मेरे दिन भले ॥
आज आपके हैं जो दर्शन मिले ॥ २ ॥
चलो धाम मेरे करम कीजिये ॥
नहीं दिलमें अपने शरम कीजिये ॥ ३ ॥
मेरे मनकी चिन्ता जो है सब हरो ॥
मेरी राज कन्या को चलकर वरो ॥ ४ ॥

(सबका चला जाना)

सीन २९

दरबार का परदा ॥

२०९
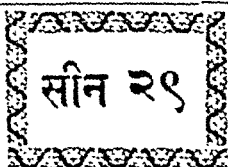
श्रीपालकी गुणमालासे शादी होना और परियों का मुबारकबाद गाना ॥
चाल नाटक-(मुबारकबादी)

आज प्यारी देखो गुलशन में आई बहार ॥ टेक ॥
आए समंदरको तिर करके राजा ॥
है कोई नागकुमार ॥ कुमार ॥ प्यारी० ॥ १ ॥
गुणमाला सुन्दर है राज दुलारी ॥
हाँ चान्द सूरज निसार ॥ निसार प्यारी० ॥ २ ॥
खुश रहो प्यारा पियारी यह दोनो ॥
जग में हो महिमा अपार ॥ अपार प्यारी० ३ ॥
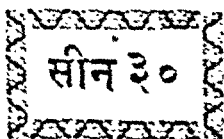
सीन ३०

महल का परदा ॥

२१०

श्रीपाल गुणमालाके साथ [illegible] , [illegible] गुण-
माला का आपसमें हाथ [illegible] और बात चीत करना ।

चाल—उमराव थारी बोली प्यारी लागे महाराज (रागनी राजपूताना)

महाराज मेटो मेरे मनकी चिन्ता महाराज ॥
महाराज जी, जी महाराज ॥ टेक ॥
कहां तुम्हारा राज है कौन मात परिवार ॥
कौन पिता किस वंशमें लीना है अवतार ॥
महाराजहो तुम किस नगरीके वासी महाराज । महाराज जी०१
क्योंकर छोड़ा राजको क्यों आए इस देश ॥
किस कारण घरबारको छांड़ चले परदेश ॥
महाराज क्योंकर होगए वनके वासी महाराज । महाराजजी०२
क्योंकर सिंधू में पड़े क्योंकर निकसे आप ॥
भेद बतावो बालमा मनका संशय जाय ॥
महाराज मैं तुमरे चर्णन की दासी महाराज । महाराजजी०३

२११

मोहनका जवाब ॥ दोहा ॥

सुन सुन्दर टुक कान दे, तोसे कहूं विचार ॥
जल पितु पंकज मात है, सागर वंश अवतार ॥ १ ॥
बड़वानल प्रबल तरंग, मम बंधु परिवार ॥
तिन सबको में छोड़कर, आ पहोंचा तोर द्वार ॥ २ ॥
कहूं अगर में और कुछ, मानि न जाने कोय ॥
है पेट्टी मेरा पता, सुनि सुन्दर जिय जोय ॥ ३ ॥

२१२

गुणमालाका जवाब ॥

चाल (नाटक) वहीं जावो मन भावो जिसपर हो प्यार वहीं जावो ॥

क्षमाकीजे जी कीजे—गुस्सा निवार क्षमा कीजे ॥
क्यों छल वैन सुनाते हो—अल छल वात वनाते हो ॥
हँस हँस जान जलाते हो ॥ क्षमा० ॥
मैंने तो आपको अपनाही समझ रक्खा है ॥
तुमने लेकिन मुझे एक ग़ैर समझ रक्खा है ॥ १ ॥
राज़ दिल मेरे से जो तुमने छुपा रक्खा है ॥
आप खुल जाएगा इस वात में क्या रक्खा है ॥ २ ॥
वात करनाही अगर दोप समझ रक्खा है ॥
तो ख़ैर मुआफ़ करो रंजमें क्या रक्खा है ॥ ३ ॥ क्षमा० ॥

२१३

श्रीपालका हाल बताना ॥

चाल (कव्वाली) मजा सावन बहार का है कुदरत जिसका जी चाहे ॥

सुनाऊं हाल दिल अपना तेरे दिलका शुबा निकले ॥
ज़रा सुन ध्यान देकरके सुनानेका मज़ा निकले ॥ १ ॥
नगर चम्पाका राजा हूं नाम श्रीपाल है मेरा ॥
करम वश राजको तजकर चले उज्जैन जा निकले ॥ २ ॥
वहां मैना सती सुन्दर राज कन्या मिली मुझको ॥
उसे भी छोड़कर आगे चले एक वनमें जा निकले ॥ ३ ॥
साथ एक सेठके आगे चले हंसद्वीप में पहोंचे ॥
मिली सती रैनमंजूषा जो जिन मंदिरमें जा निकले ॥ ४ ॥

करम गरदिश ने फिर मुझको गिराया लाके सिन्धू में ॥
भुज.से पार कर सागर तुम्हारे दरो आ निकले ॥ ५ ॥

२१४

भीलनका हाल सुनकर गुलामअलीका खुश होना और भीलनको लेजाना ॥
चाल (नाटक) [illegible] मुझे किसीको दोगी [illegible] ॥

आज मेरे जीका है संशय मिटाया ॥ टेक ॥
संशय मिटाया भरम मिटाया ।
दोनों मेरे मनकी कलीको खिलाया ॥ १ ॥
तुझसा न बलवान दुनिया में कोई ।
किसमतसे ऐसा पती तुझको पाया ॥ २ ॥
दिन रात सेवा करूंगी तुम्हारी ॥
सर अपना चरणों में तेरे झुकाया ॥ ३ ॥
हो चलो राज सम्पतको भोगो ॥
आनन्द चारों तरफ आज छाया ॥ ४ ॥

(दोनो का चला जाना)

सीन ३१

जहाज़ का परदा ॥

२१५

[illegible] (गीत)
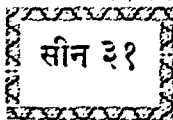
मैनसूरकी फुरकत में निकली मेरी जान ॥

है कोई ऐसा यार हमारा बेग मिलावे आन ॥ १ ॥
अरे कहां है कहां गया है सुनो कुमत परकाश ॥
भूल गया क्या बात हमारी रहा नहीं क्या ध्यान ॥ २ ॥

२१६

विदूषक का आना और गाना (शैर)

अय मूरख क्या बात विचारी काम नहीं आसान ॥
हो जावो होशयार विदूशक भी है पहोंचा आन ॥ १ ॥
कितना तेरा हेगा हांडा लश्कर और सामान ॥
इस रसते में सब लूटजागा रोवेगा नादान ॥ २ ॥
है बरफी लड्डु जलेबी खाओ सेठ हरआन ॥
रैनमजूषा से क्या लेगा खो बैठेगा जान ॥ ३ ॥
कहते हैं हम तेरे भलको सुनले देकर कान ॥
जो तू मेरा कहा न माने होवेगा हैरान ॥ ४ ॥

२१७

कुमतप्रकाश मंत्री का दो दूतियों को लेकर आना और सेठजी व विदूषक व कुमतप्रकाश का बात चीत करना (वार्तालाप)

कुमत०—सेठ जी मैं हाजिर हूं गम न कीजिये जल्दी
इन दोनों दूतियों को रैनमंजूषा के पास
भेजिये अपनी दिली मुराद हासिल कीजिये
विदू०—सेठ जी हम भी हाजिर हैं ज़रा होश में आओ
ऐसे खुशामदी लोगों की बातों पे न जाओ ॥

ऐसा न हो कहीं दही के धोके कपास खाजाओ रैनमंजूषा महा सती है अगर आप उसपर बद ख्याल लाएंगे ॥ तो लेने के देने पड़ जाएंगे।

सेठ०—अरे विदूशक यह कैसी बे महल क़ीलो क़ाल है॥

विदू०-सेठजीअदकाम महालहै मुझे तेरी बरबादीकाख्यालहै

सेठ०-(दूतियों की तरफ देखकर अरी दूतियों तुम जल्दी रैनमंजूषा के पास जाओ अपना कमाल दिखाओ

दूती—बहुत अच्छा हम अभी जाती हैं। उड़ती चिड़िया को दाम में फंसाती हैं। आपका गुंचए दिल खिलाती हैं।

विदू०—अच्छा तो फिर हम भी जाते हैं देखो क्या नया गुल खिलाते हैं ॥ (चला जाना)

सीन ३२
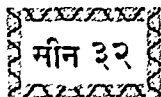
जहाज़ में रैनमंजूषाके महलका परदा

२१८

दूतियों का रैनमंजूषा के पास पहुँचना और बातें मिलाना ॥

वाक्य—(स्थापना) जहाज़ में रैन का और इन्दर सभा साम ॥

१ दूती-है सुखी दुखी जगत में, दोनों मांस मवेर ॥
चाहे जतन सो कीजिये, मग न आवे फेर ॥

२ दूती-होना था सो होगया, अब जाने दो बस ख़ैर ॥
रहो सहो खाओ पियो, करो बाग़ की सैर
१ दूती शील सो जबतक पालिये, है जबलग सरदार ॥
तु अब निर अंकुश भई, देख करो भरतार ॥
२ दूती--बिछुड़ सब कोई मिलतहैं, जोबन मिले न जाय ।
पुत्री जोबन खोय मत, फिर पाछे पिछताय ॥
१ दूती--धवल सेठ गुण खान है, है वह चतुर सुजान ।
रूपवंत धनवंत है, सकल देश परधान ॥
२ दूती-श्रीपाल इस सेठका, था चाकर दरबान ॥
जो मानो तो सेठ को, जाय वरो इस आन ॥

२१९

रैनमंजूषा का कोप करना और दूतियों को निकाल देना ॥
चाल—[नाटक] देखे देखे बहुत छलावे हमने लाखों देखे भाले ॥

ऐसी तुमसी ऐरी गैरी मैंने लाखों देखी भाली ॥
दूती बनकर आनेवाली—बातों में फुसलाने वाली ॥
नरकोंमें ले जानेवाली—कुलके दाग़ लगानेवाली । तुमसी०॥
मेरे पतिके धरम पिता कहलाते हैं कहलाते हैं ॥
क्या सुसरा बनकर मुझसे रमना चाहते हैं वह चाहते हैं ॥
जाओ जाओ यहांसे जाओ॥मतना अपना मुंह दिखलाओ॥
जीभ तुम्हारी यह जल जाओ ॥ जो ऐसी बातें सिखलाओ ॥
देखे तुमरे छल—मुझे क्या देती हो झुल ॥

मेरा क्षत्रीका है कुल—मेरा शील है अटल।
हां जाओ जाओदेखीभालीआईशीलडिगानेवाली। तुमसी॰ ॥

सीन ३३

जहाज़ का परदा

२२०

बुर्दिवीका वारिस घराम सेठके पास आना और हाल सुनाना ॥
गाना—यह कैसे बाल बिखरे हैं॰
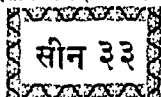
वह है पूरी सती क़ाबूमें लाना सख्त मुशकिल है ॥
कि जैसे आगको पानी बनाना सख्त मुशकिल है ॥ १ ॥
यह है ताक़त सितारे आसमां के तोड़ लावें हम।
मगर उससे नज़र जाकर मिलाना सख्त मुशकिल है ॥ २ ॥
हमारी बात सुनकर सख्त पत्थर मोम होजावे।
मगर उस गुलको तो बातें सुनाना सख्त मुशकिल है ॥ ३ ॥
निकालें बालकी हम खाल चलकर चाल चतुराई।
मगर यह चाल उस जापे चलाना सख्त मुशकिल है ॥ ४ ॥
बिगड़ गई देखकर हमको पड़े माथेपे बल उसके
चढ़े चितवनके बल उसके हटाना सख्त मुशकिल है ॥ ५ ॥

२२१

विदूषकका आना और सेठजीसे बात चीत करना।

विदू॰—क्यों हमने क्या कहाया। सेठजी यह काम मुशकिल है।

में फिर कहताहूं मुशकिल है काम यह सख्त मुशकिलहै ।

सेठ०–अच्छामें खुदजाताहूं । दसवीस सहेलियों को संगले जाताहूं । उस गुलवदनको क़ाबूमें लाता हूं ।

विदू०—देख में तुझे फिर समझाताहूं । पहली बात याद दिलाता हूं । कूवें में गिरनेसे बचाता हूं । नेकी का रास्ता दिखाता हूं ॥

सेठ०—बस बस हम किसीकी बातको खयालमें न लाएंगे । एक बार अपनी क़िसमतको जरूर आजमाएंगे ।

विदू०—बेहया लगती है तुझको यह नसीहत उल्टी ॥
खैर मालूम हुवा अब तेरी क़िसमत उल्टी ॥

सेठ०—क्या खबर यह मेरी क़िसमत है चढ़ी या उल्टी ॥
अब तो लगती है नसीहत मुझे सबकी उल्टी ॥
लाऊंगा उसको पढ़ा करके में पट्टी उल्टी ॥
देखना फिर मेरी होजायगी क़िसमत सुल्टी ॥

विदू०–तेरी क़िसमतने पढ़ी सेठजी पट्टी उल्टी ॥
देखना होएगी क़िसमत तेरी कैसी सुल्टी ॥
उस सतीने जो तुझे कोपसे वहां देख लिया ॥
उसी दम होजायगी क़िसमत तेरी उल्टी पुल्टी ॥

सेठ०–क्या पड़ी तुमको अगर है मेरी क़िसमत उल्टी ॥
हम नहीं सुनते तेरी बात यह उल्टी सुल्टी ॥

२२२

विदूशकका जवाब ॥

चाल—(नाटक) आली दरबार है महफिल सरदार है ॥

देखो कामीको लाज नहीं । काहूसे काज नहीं ॥
बोलनकी साज नहीं । मूरख गंवार है ॥ १ ॥
चाहे निज मात हो । बेटी की बात हो ॥
भगनी के साथ हो । करता विकार है ॥ २ ॥
मद्राका पान करे । वेश्याका ध्यान करे ।
जूवेकी बान धरे । चोरी विचार है ॥ ३ ॥
पर नारीसे काम है । झूठा कलाम है ॥
सबका गुलाम है हरदम बेज़ार है ॥ ४ ॥

२२३

सेठजीका जवाब (शैर)

बस विदूशक रहनेदे तू अपने इस उपदेशको ॥
चाहते हैं हम नहीं बस ऐसे खैर अंदेशको ॥ १ ॥
मैं नहीं मानूंगा बस आज यह बातें तेरी ॥
ऐसी बातों से बिगड़ती है तबीयत मेरी ॥ २ ॥

२२४

सुमतप्रकाश मंत्री का समझाना ॥

चाल—सखी सावन बहार आई झुलाए जिसका जी चाहे ॥

सताता है जो सतियोंको वह जगमें ख्वार होता है ॥
यहां होता है बेइज्जत वहां बेज़ार होता है ॥ १ ॥
जो कामी पुरुष होता है कभी नहीं चैन पाता है ॥

बाद मरनेके उनका नर्क में घर बार होता है ॥ २ ॥
सुनो कामीसे हर इन्सां बदिल बेज़ार होता है ॥
दुखी होताहै वह बदनाम सब परिवार होता है ॥ ३ ॥
वही नर देखता है बद निगाहसे देख सतियों को ॥
जिसे मरकरके जाना नर्कमें दरकार होता है ॥ ४ ॥
सेठजी मानलो कहना शरारतसे बाज़ आओ ॥
वगरना आज यह सारा तबाह घर बार होता है ॥ ५

२२५

सेठजीका जवाब (शैर)

किसीकी हम नहीं मानेंगे क्यों तकरार करते हो ॥
नसीहत करके नाहक़ जी मेरा बेज़ार करते हो ॥

२२६

सुमतनकाद सखी का सिर समझाना ॥

चाल—इश्क मत करना मुझे [illegible] देखना ॥

पाप बुद्धी छोड़दो साहिब भमूके वास्ते ॥
पाप करना है नहीं अच्छा किसीके वास्ते ॥ १ ॥
पाप रावणने किया सीताको हरके लेगया ॥
आप दुशमन बन गया सारे कुटुमके वास्ते ॥ २ ॥
मान ले कहना मेरा मत पापपे बांधे कमर ॥
क्यों डबोता है सभोंको दुष्करमके वास्ते ॥ ३ ॥
उस सतीका सत कोई हरगिज़ डिगा सकता नहीं ॥
किस लिये [illegible] है तू नाहक [illegible]के वास्ते ॥ ४ ॥

पाप करनेका समर अच्छा कभी मिलता नहीं ॥
मैं तुझे कहता हूं यह तेरे भलेके वास्ते ॥ ५ ॥

२२७

सेठजीका जवाब ॥ (शैर)

चाहे जो कुछ हो मगर एक बार वहां जाऊंगा मैं।
लाख समझाओ मुझे खातिरमें नहीं लाऊंगा मैं १ ॥
बस मैं अब जाता हूं क़िसमत आज़माने के लिये ॥
उस परीको जालमें अपने फंसानेके लिये ॥ २ ॥

(रवाना होना)

२२८

विदूषकका जवाब ॥ (शैर)

अच्छा हमभी जाते हैं कुछ गुल खिलाने के लिये ॥
ऐसी बदकारी का फल तुझको दिखाने के लिये ॥

(रवाना होना)

सीन ३४
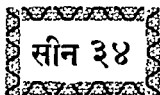
(रैनमंजूषाके महलका परदा)

२२९

सेठजीका रैनमंजूषाके जहाज़में पहोचना और सहेलियों को रैनमंजूषाके पास भेजना। सहेलियोंका रैनमंजूषाको बाग़की सैर करने के लिये कहना ॥

चाल—(नाटक) चलो दिल मिल दिलबर ॥

चलो मिलकर दिलवर खुशतर हम सब वारियां ॥

है नारियां-हम नारियां ॥ यह अजब गुलकारियां—
प्यारियां-क्यारियां-सारियां ॥
बनो बांकी छबीली मतवारियां ॥
हां बनो बांकी छबीली मतवारियां ॥
नुकीली-अलबेली-सहेली-सहेली दिलदारियां । चलो मिलकर०
सब कलियां खिलियां बाग़ में क्या प्यारी ॥
जाई जुई चम्पा चम्बेली ॥ ताल किनरयां गुलकारी है न्यारी ।
गावें बुलबुल बाग़ में री । आओ आओ महारानी-सेठानी
हमारी हो प्यारी ॥ चलो मिलकर० ॥

२३०

रैनमंजूषा का सहेलियों को जवाब देना और सबका चला जाना ॥
चाल—(क़व्वाली) हमीं सावन बहार भाई सुनार जिसका जी चाहे ॥

तुम्हें गुलशन की सूझे है यहां बेज़ार बैठी हूं ॥
न छेड़ो तुम मुझे जाओ कि मैं बीमार बैठी हूं ॥ १ ॥
हँसी का है नहीं मौक़ा नहीं यह छेड़ अच्छी है ॥
करो मत दिल्लगी मुझसे कि मैं ग़मख्वार बैठी हूं ॥ २ ॥
अभी मर जाऊंगी मैं गिरके दरिया में देख लेना ॥
पिया के रंज में मरने को मैं तय्यार बैठी हूं ॥ ३ ॥
अगर मैं आह मारूंगी लगेगी आग दरिया में ।
यह सब जल जाएगा ठंडा जली अंगार बैठी हूं ॥ ४ ॥

२३१

धेड़सीका सुत रैनमंजूषा के पास पहोंचना और कहना ॥

चाल—[नथानी] जाजे दर्द दिल० ॥

न कर यूं रंजोगम प्यारी गई बातों को जानेदे ॥
मरा उसका नहीं आता छोड़दे आस जानेदे ॥ १ ॥
सुनाऊं हाल मैं श्रीपाल का जिसपै तू मरती है ॥
लिया था मोल मैंने वह मेरा चाकर था जाने दे ॥ २ ॥
छोड़ अब रंजकी बातें जवानी की हैं यह रातें ॥
तू रानी मैं तेरा राजा न घबरा मनको जानेदे ॥ ३ ॥
पती मुझको समझ अपना तेरे बिन कल नहीं मुझको ॥
नहीं बस उठके घर आजे न कर इंकार जानेदे ॥ ४ ॥

२३२

रैनमंजूषा का उत्तर ॥

चाल [illegible] ॥

कहा मत बेशर्मी को तू ओ बदकार जानेदे ॥
न धर मनमें इरादा पापों का ओ बदकार जानेदे ॥ १ ॥
[illegible] दिल मेरे बल्लभ का हमारा भी पिता कहिये ॥
न कर बेशर्मी से यह बातें ओ बदकार जानेदे ॥ २ ॥
[illegible] परनार दुनिया में सुना है जैन शासन में ।
जाता है नर्क में [illegible] ओ बदकार जानेदे ॥ ३ ॥
[illegible] ।
न [illegible] बदकार जानेदे ॥ ४ ॥

सताना जी जलाना देख सतियों का नहीं अच्छा ॥
कोई उतपात होजागा अरे बदकार जानेदे ॥ ५ ॥
तू पापी है नीच नर है निशाचर है पशू सम है ॥
न कर तकरार मेरे से अरे बदकार जानेदे ॥ ६ ॥

२३३

रैनमंजूरा व सेठ की बातचीत ॥

सेठ—पानसा प्रोहन मेरे सारे भरे जरो माल से ॥
भोगती सुख क्यों नहीं कमबख्त मेरे माल का ॥
रैन०—दोस्ती से जरके हो जाता है इनसां रूसियाह ॥
देख होता है सियाह दीवारो दर टकसाल का ॥
सेठ—अय प्यारी बार बार इंकार न कर मेरे दिलको बेजार
न कर रजामंदी का जवाब दे तकरार न कर ॥

२३४

रैनमंजूरा का जवाब ॥

चाल—(नाटक) आली दरबार है महफिल सरकार है ॥

वही एक जवाब है जो सबमें नेक जवाब ॥
नार हूं पराई हूं—दुख हुख उठाई हूं ॥
कर्म की सताई हूं—दुखमें हूं आप से ॥ १ ॥
मुसीबत में आई हूं—राजा की जाई हूं ॥
सतगुण कहलाई हूं-बचती हूं पाप से ॥ २ ॥
तेरे बेटे की नार हूं-जी से बेजार हूं ॥
सतियों में नार हूं-डरती हूं आप से ॥ ३ ॥

शील का शृंगार हूं—शुभ गुण का हार हूं ॥
ऐसी कैसी धार हूं-देखे जो पाप से ॥ ४ ॥

२३५

रैनमंजूरा व सेठकी बातचीत ॥

सेठ—दुख पाएगी मर जाएगी आखिर को पिछताना होगा ॥
रैन०—एक दिन है सबका मरना इस दुनिया से जाना होगा।

२३६

सेठजीका जवाब ॥ चाल (नाटक) मैं प्यारी कुरबान ॥

अय प्यारी कहा मान ।
मतवारी-है बारी-मनहारी कहा मान ॥ टेक ॥
होवे-ख्वारी-बेजारी-तोहे मारी-टरआन ॥
पछतावे-दुख पावे-कलपावे-परेशान ॥ अय० ॥ १ ॥
छब न्यारी-दब सारी-तू-प्यारी-प्यारियां ॥
दिन करके-चित करके-बोलो ना हँसियां ॥ अय० ॥ २ ॥

२३७

रैनमंजूराका जवाब ॥ चाल—(नाटक)

तू है बड़ा बदकार, रे तोहे नाहीं लाज. तोहे नाहीं शरमरे टेक।
दुख बहू मैं लगु हूं तुम्हारी।
तू मोहे समझे है नार ॥ रे तोहे० ॥ १ ॥

१—बदकार।

पाप बोले मत बोले रे पापी ।
फटजागी धरती पहार ॥ रे तोहे० ॥ २ ॥
रावण गिया लखी खोटी नज़र से ।
होगई लंक उजार । रे तोहे० ॥ ३ ॥
सारे करमों में पाप बुरा है ।
पापों में बुरी परनार ॥ रे तोहे० ॥ ४ ॥
अनुज वधू भगनी सुत नारी ।
कन्या बराबर चार ॥ रे तोहे० ॥ ५ ॥

२३८

सेठ जी और रैनकंवर के सवाल जवाब । (शेर)

सेठ—समझ देखले प्यारी मनमें तू अपने ॥
मेरे हाथसे अब रिहाई न होगी ॥
रैन०—जो देगा अज़ीयत तो पाएगा ज़िल्लत ।
बुराई में हरगिज़ भलाई न होगी ॥
सेठ—यह तो बतला फ़ायदा क्या ऐसी नादानी में है ।
रैन०—पेश आनी है वही जो कुछ कि पेशानी में है ॥
सेठ—अरी क्यों हाथसे अपने तू नाहक़ जान खोती है ।
रैन०—तो क्या चारा है मैं मजबूर हूं तक़दीर सोती है ।
सेठ—अब प्यारी जब तुम्हारी जानपर ही बन आएगी ।
बता तो किस तरह तू अपनी फिर अस्मत बचाएगी ।

२३९

रैनमंजूरा का जवाब ॥

चाल—कोई चातुर वैसी सखी ना मिली ॥

अरे पापी तू मुझको डराता है क्या।
मुझे मरने का कोई खतर ही नहीं ॥
कर ना खोटी नज़र इस बदीसे गुज़र।
बदी करनेका अच्छा समर ही नहीं ॥ १ ॥
तेरे घरमें सिठानी महा गुणवती।
हाय उसपे भी तुझको सबर ही नहीं ॥
सुन नारीपे तूने जो पाप धरा।
क्या वह घोर नरकका खबर ही नहीं ॥ २ ॥
मैं सती हूं देख हाथ लाना नहीं।
ऐसी धमकी सतीको दिखाना नहीं ॥
इस दरियामें आग न लगजा कहीं।
मेरे शीलपे करना नज़र ही नहीं ॥ ३ ॥
देख रावनने सीतापे ज़ुल्म किया।
क्या नतीजा हुवा सोच मनमें ज़रा ॥
राज पाट गया बदनाम हुवा।
मर नर्क गया क्या खबर ही नहीं ॥ ४ ॥
और इन्द्र नरेन्द्र जो मिलके सभी।
क्या मजाल जो शीलको मेरे हरें।
मेरी दमनी है क्या शीलाल मिरा।
मेरी नज़रों में कोई बशर ही नहीं ॥ ५ ॥

चाहे भय भेद साम और दाम दिखा ।
चाहे एक अनेक तू बात बना ॥
मेरे मनका सुमेरु हिलेगा नहीं ।
मेरे मनमें किसीका भी डरही नहीं ॥ ६ ॥

२४०

सेठजी और रैनमंजूषा का गुस्सेसे सवाल व जवाब करना ॥ (वार्तालाप)

सेठ—अय कम्बख्त हठ न कर इंकार छोड़ ॥
रैन०—अय बदबख्त जिद न कर तकरार छोड़ ॥
सेठ—मान ले ॥
रैन०—जान ले ॥
सेठ—आस न तोड़ ॥
रैन०—बदकारी छोड़ ॥
सेठ—मैं अभी तुझे मनालूंगा पकड़कर ।
रैन०—मैं अभी मरजाऊंगी दरियामें पड़कर ॥
सेठ—(हाथ बढ़ाकर और रैनमंजूषाके पकड़नेका इरादा करके)
देखूं तू कहां तक अपनी शील बचाएगी ॥

२४१

रैनमंजूषा का घबराकर कांपना और [illegible]
[illegible] ॥ चाल—नाटक ([illegible])

हाए मैं अनाथ नाथ किससे जा कहूं ॥
पापी है भारी जो निरलज्ज अभागी निडर होके हाथ गहे ॥
बचे नहीं जो मेरा शीलमें निज मैं गिरके मरूं ॥ हाए० ॥

मालनी-तेरे व्योपार पर लानत है साहूकार पर लानत
पहुमती-तेरे परधान पर लानत तेरे दरबार पर लानत ॥
मानभद्र-तेरे मां बाप पर लानत तेरे घर बार पर लानत ॥

२४५

सेठजी का अफसोस करना ॥ (चाल-मुझत)

गया पाप से सारा ही काम बिगड़ ।
ना इधर का रहा ना उधर का रहा ॥
सही जूती की मार जुमी की रगड़ ।
ना इधर का रहा ना उधर का रहा ॥ १ ॥
गया दोनों जहांन के काम से मैं ।
ना इधर का रहा ना उधर का रहा ॥
न धरम ही मिला न विसाले सनम ।
ना इधर का रहा ना उधर का रहा ॥ २ ॥

२४६

सिट्टके का मारा और जाना ॥ (चाल-मुझत)

अच्छा खूब हुवा तेरी थी यह सजा ।
जो इधर का रहा ना उधर का रहा ॥
जब न माना कहा अब पुकारे है क्यों ।
हा इधर का रहा ना उधर का रहा ॥ १ ॥
हुई कैसी गती देखलो तुम सभी ।
ना इधर का रहा ना उधर का रहा ॥

मालनी-तेरे व्योपार पर लानत है साहूकार पर लानत
पहुमती-तेरे परधान पर लानत तेरे दरबार पर लानत ॥
मानभद्र-तेरे मां बाप पर लानत तेरे घर बार पर लानत ॥

२४५

सेठजी का अफसोस करना ॥ (चाल-ग़ज़ल)

गया पाप से सारा ही काम बिगड़ ।
ना इधर का रहा ना उधर का रहा ॥
सही जूती की मार ज़मी की रगड़ ।
ना इधर का रहा ना उधर का रहा ॥ १ ॥
गया दोनों जहांन के काम से मैं ।
ना इधर का रहा ना उधर का रहा ॥
न धरम ही मिला न विसाले सनम ।
ना इधर का रहा ना उधर का रहा ॥ २ ॥

२४६

विदूषक का आना और गाना ॥ (चाल-ग़ज़ल)

अच्छा खूब हुआ तेरी थी यह सजा ।
जो इधर का रहा ना उधर का रहा ॥
जब न माना कहा अब पुकारे है क्यों ।
ना इधर का रहा ना उधर का रहा ॥ १ ॥
हुई कैसी गती देखलो तुम सभी ।
ना इधर का रहा ना उधर का रहा ॥

कोई भूल के करना न ऐसा कभी ।
यह इधर का रहा न उधर का रहा ॥ २ ॥

२४७

सब महाजनों का रैनमंजूषा के पावों में गिरना और अर्दास करना ॥

चाल—(ग़ज़ल) बंजारा नामा ॥

अय रैनमंजूषा महा सती, अब एक हमारी अर्ज सुनो ॥
है शरण तुम्हारी ली हमने, टुक कोप तजो मन शांत करो ॥१॥
तू जिन शासन मतलीन सही, तूने ही शील का भार धरो ॥
पापी ने लखी महिमा तेरी, जैसा था किया वैसाही मरो ॥२॥
या पापी के संग डूबे घर और बार हमारे जाते हैं ॥
सब संगू भाई देख सती, बिन कारण मारे जाते हैं ॥ ३ ॥
अब करुणा धारो रोस निवारो, सब मिल अर्ज सुनाते हैं ॥
डूबत नय्या को पार लंघादो, चर्णन सीस निवाते हैं ॥ ४ ॥
तू दयावती है महा सती, यश जैन धरम का विस्तारा ॥
होगया निश्चय मन जैन धरम, है तुम हाग सुख कर्तारा ॥५॥
अब कर कृपा धरकर करुणा, हमरा भी कीजे निस्तारा ॥
तेरा गुन गावें हाथ जोड़, अर्दास करें बारम बारा ॥ ६ ॥

२४८

रैनमंजूषा का कोप दूर करना और दया करके इनको दूर करने के लिये और सेठजी का छोड़ने के लिये प्रार्थना करना ॥

चाल—(कवाली) [illegible] आलम बहार आई [illegible] [illegible] [illegible] ॥

सुनो अब देव गन तुमने करी मेरी सहाई है ॥

तुम्हें धन्य है सती की आनकर असमत बचाई है ॥ १ ॥
रखा संजम धरम मेरा बढ़ाई शील की महिमा ॥
सती की लाज रख जिन धर्म की अतशय दिखाई है ॥ २ ॥
पाप की बात पापी ने कही थी जैसी कुछ मुझसे ॥
आपने आनकर वैसी गती इसकी बनाई है ॥ ३ ॥
क्षमा अब कीजिये मनमें निवारो कष्ट को जल्दी ॥
विचारे दीन दुखियों पे दया मन मेरे आई है ॥ ४ ॥
खोल दो बंद इसके भी धरम का बाप है मेरा ॥
सजा अबतो बहुत इसने करम अपने की पाई है ॥ ५ ॥

२४९

सब देवी देवताओं का उपसर्ग दूर करना और रैनमंजूषाको तसल्ली देकर चला जाना ॥

चाल नाटक (भैरवीं)—दिन रतियां ना छेड़ो सय्यां छोड़ो बय्यां ॥

सत सतियों का—देखो सखियां-खोलो अखियां—
जिनमत रखियां—हो रही खुशियां हां ।
हम लागें सारी पय्यां—तोरी लेवें री बलय्यां ॥ सत० ॥
रैनमंजूषा सुन तू प्यारी-पती मिले तेरी बलधारी ॥
राज करेगी तू सुखकारी-सुख में बीते रैन सारी ॥
गर अब आ-कोई विपता-हम सब आ देवेंगे मिटा ॥
हां हां हां हां हां हां हां हां ॥ सत० ॥

२५०

सब दरबारीयों का क़िस्मत और शीलका निश्चय करना और मिल कर गाना

चाल नाटक—क़िस्मत सब पर लाती आफ़त ॥

जैसी करनी वैसी भरनी, निश्चय नहीं तो कर कर देख ॥
सुगत भी है दुरगत भी है, सुख दुख भी है मर कर देख ॥
एक दिन टूटे आपही छूटे, जाम गुनाह का भर कर देख ॥
है तु बशर परमेश्वर होजा, दूर हिये से शर कर देख ॥
सतियों को बद निगाह। है देखना बुरा ॥
माता बहिन सुता। सम जानियो सदा ॥
जिसने खुदी करी। मनमें बदी धरी ॥
आख़िरविपत भरी। आफ़त में जा पड़ी ॥ कर कर देख जैसी०॥

(ड्रोप सीन)

इति न्यामतसिंह रचित मैनासुन्दरी नाटक का
चौथा ऐक्ट समाप्तम् शुभम्

मैना सुन्दरी नाटक

पांचवां ऐक्ट

रैणमंजूषा और धवल सेठ का कुमकुमद्वीप में पहोंचना और वहां के राजा और श्रीपाल से मिलना. राजा श्रीपाल का भांड वगोवा करवाना और शूली का हुकम दिलवाना, गुणमाला का रैनमंजूषा से श्रीपाल का हाल पूछना और अपने पिता को बताना. राजा का श्रीपाल से मुआफ़ी मांगना. धवल सेठ का मारना. श्रीपाल का मैनासुन्दरी को याद करना और उज्जैन को रवाना होना ॥

श्रीजिनेन्द्रायनमः

सीन ३५

कुमकुमद्वीप के राजा के दरबार का परदा

२५१

नोट—धवल सेठ और रैनमंजूषा के साथ जहाजों का रवाना होकर कुमकुम द्वीप में पहोंचना और धवल सेठ का भेट लेकर कुमकुमद्वीप के ,राजा से मिलने को दरबार में आना ॥

सेठ—महाराज को जुहार ॥

राजा—आइये सेठजी विराजिये (सेठ का भेट देकर आसन पर बैठना) सेठजी कहां से आये और इस देश में क्योंकर आना हुवा ॥

सेठ—महाराज हम वाणिज्य हैं अनेक द्वीप समुद्रों में वणज करने को फिरते हैं। हंसद्वीप से आपका नाम सुन कर आए हैं॥ आप के दर्शन करके परम आनन्द मिला ॥

राजा—सेठजी हम भी आप से मिल कर बहुत प्रसन्न हुवे कोई कार्य हे तो कहिये॥

श्रीपाल—(राजा के आदिनाथ के पाकर) सेठजी लीजिये पान लीजिये ॥

सेठ-(श्रीपालको गौरसे देखकर पहिचानना और विदा मांगना) महाराजकी कृपासे सब प्रकार से आनन्द है अब जाने की आज्ञा दीजिये ॥

राजा-अच्छा सेठजी आप जाइये ॥ (सेठका चला जाना)
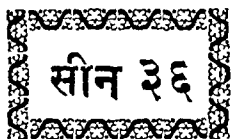
जहाज़ों का परदा

२५२

धवल सेठका अपने जहाज़ों में आना और मंत्रियां से बात चीत करना

चाल—(इन्दर सभा) अरे लाल देव इस तरफ़ जल्द आ ॥

सुनो मंत्री ध्यान करके ज़रा ॥
  यकायक यह क्या माजरा होगया ॥ १ ॥
मेरी अक़्ल हैरान है इस जगह ॥
  विचारा था क्या और क्या होगया ॥ २ ॥
श्रीपाल डाला समन्दर के बीच ॥
  न मालूम कैसे रिहा होगया ॥ ३ ॥
रसाई हुई कैसे दरबार में ॥
  किया क्या जो राजा फ़िदा होगया ॥ ४ ॥
कोई हाल जल्दी बताए मुझे ॥
  मेरा तीर कैसे खता होगया ॥ ५ ॥

२५३

एक मंत्रीका हाल बताना । चाल—नंबर २५२

करूं सेठजी हाल इसका बयां ।
यह आया समुद्रको तिरके यहां ॥ १ ॥
दी गुणमाला राजाने लड़की इसे ।
बना रक्खा है घरजमाई इसे ॥ २ ॥
श्रीपाल है सेठजी याका नाम ।
महा पुन्यवान और बड़ा नेकनाम ॥ ३ ॥

२५४

सेठजी—मंत्रीसे अय मंत्रीयो यह श्रीपाल बड़ा पुन्यवान और बलवान पुरुष है मैंने इसको समुद्रमें डाला और इसकी रानीको सताया अब इसके हाथ से बचना कठिन है। मेरा चित्त बेचैन है जल्दी कोई ऐसा उपाय करो जो इसके हाथोंसे जान बचे ॥

२५५

सुमतप्रकाश मंत्री की राय।
चाल—यह कैसा बाल बिखरे हैं।

इसलिये सरमें श्रीपालके जाना मुनासिब है ॥
उसीके पाओं में सरको झुकाना ही मुनासिब है ॥ १ ॥
वह है गम्भीर गुणसागर क्षमा सागर दयासागर ॥
सभा श्रीपालके जाकर करना ही मुनासिब है ॥ २ ॥
सेठजी यह यही करलो करेगा मान वह तेरा ॥
तुम्हें मैंदहको दिलसे हटाना ही मुनासिब है ॥ ३ ॥

२५६

कुमतप्रकाश मन्त्रीकी राय ॥ चाल-नम्बर २५१

हमारी रायमें श्रीपाल पे जाना नहीं अच्छा ॥
किसी दुश्मनके धोके जालमें आना नहीं अच्छा ॥ १ ॥
सुमतपरकाश नादां है भला यह मंत्र क्या जाने ॥
सीस चरणों में बैरीके कभी लाना नहीं अच्छा ॥ २ ॥
जो अपराधी हो तुम उसके तो वह बखशेगा क्यों तुमको ॥
खयाल ऐसा कभी दिलमें जरा लाना नहीं अच्छा ॥ ३ ॥
करो तदबीर कुछ ऐसी वह मारा जाय जल्दी से ॥
निशां दुश्मनका बाकी कोई रहजाना नहीं अच्छा ॥ ४ ॥
यह काम हो सकता है भांडोंसे जल्दी से बुला लीजे ॥
यह है तदबीर लासानी शुबा लाना नहीं अच्छा ॥ ५ ॥

२५७

सेठका अदा ॥ (वार्तालाप)

अय कुमतप्रकाश आपकी राय बहुत ठीक है हम आपसे बहुत प्रसन्न हैं, लो यह दस हज़ार रुपया इनाम देते हैं। अय महाजनों तुम क्यों चुप हो तुम भी अपनी राय जाहिर करो ॥

२५८

महाजनों की राय ॥ चाल-करनी हमें नसोंका कुछ दीजे दान ॥

सेठ हमारा कहना, अब लीजे मान ॥ टेक ॥
मत मनमें बदी बिचारो ॥ इक सुमत हिये में धारो ॥
सभोंका हो कल्याण ॥ सेठ० ॥ १ ॥

वह श्रीपाल सुखकारी ॥ है समझो धरम अवतारी ॥
दया सागर गुण खान । सेठ० ॥ २ ॥
जा खता माफ करवाओ ॥ नहीं मनमें शंका लाओ ॥
रहेगा तुमरा मान ॥ सेठ० ॥ ३ ॥
नहीं सुनो जो बात हमारी ॥ पड़जागी बिपता भारी ॥
तुम्हारी होगी हान ॥ सेठ० ॥ ४ ॥

२५९

कुमतप्रकाश और सेठजीको बात चीत ॥

सेठ०—अब कुमतप्रकाश इन महाजनों ने जो कुछ कहाहै इस में तुम्हारी क्या राय है ॥

कुमत०—हे सेठजी आपसे बढ़कर हमारी बुद्धि नहीं आप ही अपने मनमें विचार करलें ।

सेठ०—ओ जो सेठजी आपही मंत्र करेंगे तो मंत्रियों को कौन पूछेगा तुम अपनी माफ़ माफ़ रायदो कोई शंका मतकरो ।

कुमत०—(दोहा) सुनो सेठजी कानदे बात कहूं एक सार ॥
तुम उन मागर डारियो, और सताई नार ॥ १ ॥
वह तेग बैरी भया, देखो सोच बिचार ॥
बदला तुमसे लेयगा, छोड़े नहीं जिनदार ॥ २ ॥
ताते बैरी मारना, जब लग पार बसाय ॥
साम दाम औ दंडदे, करके भेद ...

सेठ०—(...) बस अब हम ... किसी ...
सुनेंगे कुमतप्रकाशने ...

करेंगे । कुमतप्रकाश जाओ भांडों को जल्दी बुला लाओ ।

कुमत०—बहुत अच्छा सेठजी अभी बुलाकर लाता हूं ॥

(चला जाना)

२६०

कुमतप्रकाश का भांडों के सरदारको बुलाकर लाना और बातचीत करना ।

कुमत०—सेठजी यह भांडों का सरदार हाजिर है ।

सेठ०अय भांडों के सरदार देखो श्रीपाल जो राजा के दरबार में है तुम उसको अपना बेटा होना जाहिर करो लो तुमको (टके देकर) दो लाख टके देते हैं अगर तुमने यह काम पूरा किया तो हम और भी इनाम देंगे ॥

सरदार—बहुत अच्छा सेठजी हम अभी जाते हैं अपना कमाल दिखाते हैं और आपका काम बनाते हैं ॥

(चला जाना)

सीन ३७

राजा के दरबार का परदा

२६१

भांडों का आना [illegible] दरबार में पहुंचना और गाना । ([illegible])

आहाहा—आहाहा—आहाहा !!!

आली दरबार है-सरकारी मरकार है ॥

फूला गुलजार है—हरदम बहार है ॥ १ ॥

राजा दिल शाद हो-साहिब औलाद हो ॥

दुश्मन बरबाद हो घर घर पुकार है ॥ २ ॥

लालों के लाल हैं-साहिब जमाल हैं ॥

रंगीन कमाल हैं-दुनिया निसार है ॥ ३ ॥

भांडों का रंग देखो-सारे हैं दंग देखो ॥

गाने का ढंग देखो-महफिल तय्यार है ॥ ४ ॥

२६२

एक भांड—(बातचीत) अबे भांडों तुमने क्या तार प

लगाई है कोई ठुमरी टप्पा मेघी टेरी गाओ

महाराज का दिल खुश करो ॥

२६३

भांडों का नाचना और गाना ।

चाल-दम आड़ी के बेर मन मोरे भजन कीजे ललजाना ॥

दानाई का रूप मत देखो राम भाग नशजागा ॥ टेक ॥

पर धन कंचन पर मद्रलन पर ॥

तिरा को मत ललचावे पार में डूब जागा ॥ दानाई०

झूठ कपट चोरी और हिंसा ॥

जुआ पराकी मत जा ॥ दानाई० ॥

सुल्फा गांजा ...

पराई ...ओं को मत दे ॥ दानाई० ॥

वेश्या काला नाग समझियो ॥
प्यारे उधर मत जावे जिया तेरा डस जागा ॥ पर० ॥ ४ ॥
न्यामत बोवो फूल धरमका ॥
पापका कांटा मत बोवो पांवमें घुस जागा ॥ पर० ॥ ५ ॥

२६४

राजा-(वार्तालाप) वाह वाह कंवर श्रीपालजी इनको हमारी तरफ़से इनाम दो ॥

श्रीपाल—(इनाम देकर) यह लो राजा साहिब इनाम देतेहैं

२६५

भाडोंका श्रीपालको देखकर अपना बेटा जाहिर करना । वार्तालाप)

१ बूढ़ी स्त्री-(गले में हाथ डालकर) अरे मेरा बेटा तैं कहां!
२ स्त्री-(सिरपर हाथ रखकर) अरे मेरा लाल तैं कहां गया था!
१ लडकी-(हाथ पकड़कर) रे मेरा वीरन !
१ भांड-(छातीसे लगाकर) रे भाई श्रीपाल !
२ भांड-(सिरपर हाथ रखकर) रे बेटा श्रीपाल तू समुद्रसे कैसे निकला !
२ लड़की-(चिमटकर) रे मेरी मां का जाया !
३ स्त्री-(कमरपर हाथ रखकर) रे मेरी बोबोका जाया !
४ स्त्री-(छातीसे लगाकर) रे मेरे अंधेर घरका चांदना !

२६६

चाल-(नाटक) मन हर लीनों यांके सांवरया कि जबसे दर्शन दीनो ॥
सब भांडोंका श्रीपालको पकड़कर खुश होना और गाना ॥

तन मन वारें बेटा सांवरिया कि तूने दर्शन यह दीना ॥
सागरयासे कैसे निकस आयो प्यारे ॥ तन० ॥ टेक ॥
प्यारा प्यारा प्यारा है प्यारा है दिन ॥
भटक भटक मिले तेरे दर्शन ॥ सागरया० ॥ १ ॥
शुभ घड़ी शुभ दिन शुभ यह मिलन ॥
धन कंचन करें तोपे अर्पण ॥ सागरया० ॥ २ ॥
थई थई थई थई नाचें हो मगन ॥
हरप हरप गाएं राजाके गुण ॥ सागरया० ॥ ३ ॥

२६७

राजाका यह हाल देखकर हैरान होना और भांडों से कहना ॥

अरे गुस्ताख भांडों यह क्या माजरा है हमसे साफ़ साफ़ बयान करो ॥

२६८

एक स्त्रीका श्रीपालको भांड बगोवा करना (इसकी टेक सब भांड गावें /
चाल—सुनो तुम भंगके लच्छन सुनो तुम भंगके लच्छन ॥

सुनो इस पूतके लच्छन सुनो इस पूतके लच्छन ॥ टेक ॥
दोहा- मेरे दो लड़के भए, दोनों पूत कपूत ॥
गोवरधन श्रीपाल सों, बारा मुट्ठी ऊत ॥ सुनो० ॥ १ ॥
एक दिन आपस में लड़े, दोनों ऐसे नीच
श्रीपाल गुस्सा किया, प[illegible] [illegible]च ॥

गोवरधन भी मर गया, मरा हमारा कंत ॥
मैं दुखयारी रह गई, काह कहूं विरतंत ॥ सुनो० ॥३॥
धन यह अवसर धन घड़ी, धन तेरा दरबार ॥
सूरत बेटेकी लखी, वारूं सब घर बार ॥ सुनो० ॥ ४ ॥
ना धन दौलत चाहिये, ना चहिये भंडार ॥
बेटा हमको दीजिये, पाए लाख हज़ार ॥ सुनो० ॥५॥

२६९

राजाका यह माजरा देखकर हैरान होना और श्रीपाल से पूछना ॥ (शेर)

क्यों रे ओ श्रीपाल कहो क्या यह बात है ॥
हैरां है अक्ल मेरी तआज्जुब की बात है ॥ १ ॥
तूने तो अपने आपको राजा बताया था ॥
क्या झूठ था वह सारा जो तूने सुनाया था ॥ २ ॥
अब ठीक हाल कुलका तुम अपने बयां करो ॥
क्या माजरा है साफ़ मेरे से अयां करो ॥ ३ ॥

२७०

नोट—यह हाल देखकर श्रीपाल मनमें विचार करने लगा कि देखो कर्मों की कैसी विचित्र गति है कर्म बड़े बलवान हैं सब सुरासुर कर्मों के वशमें हैं जैसे कर्म नचावे वैसे नाचना पड़ता है आज मेरे अशुभ कर्म का उदय है अब भी यदि मैं अपना बल प्रकाश करूं तो इन सबको छिनमें मार डालूं परन्तु देखूं तो सही अब आगे कर्म क्या दिखलाते हैं; ऐसा विचार करके राजा को जवाब देना ॥

चाल—यह कैसे बाल बिखरे हैं० ॥

सुनो राजा गौर करके करम का ढंग न्यारा है ॥
नहीं होता है वह हरगिज़ कि जो मनमें विचारा है ॥ १ ॥

चलिये अबके और क़िसमत आज़माई कीजिये ॥
रंजोग़म मरने का कुछ दिलमें नहीं लाते हैं हम ॥ ८ ॥
(रवाना होना)

सीन ३९
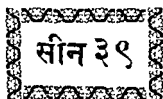
गुणमाला के महल का परदा ॥

२७५

बांदी का गुणमाला के पास जाना और हाल सुनाना ॥
चाल—सखी सावन बहार आई झुलाए जिसका जी चाहे ॥

छोड़ शृंगार को रानी ज़रा सुनले ध्यान करके ॥
तेरा भरतार मरता है ख़बर ले उसकी जा करके ॥ १॥
भांड दरबार में आए लखा श्रीपाल को जिस दम ॥
कहा बेटा लगे रोने गले अपने लगा करके ॥ २ ॥
वे सुन कर ख़फ़ा राजा दिया है हुक्म शूली का ॥
गए जल्लाद ले श्रीपाल को इसदम पकड़ करके ॥३॥

२७६

गुणमाला का जवाब ॥ चाल—नंबर २३१

अरी बांदी सुनाई क्या ख़बर तूने यह आ करके ॥
मुझे बे मौत मारा तूने यह बातें सुना करके ॥ १ ॥
मेरा बालम है कोटीभट मुकट [illegible] वंशी ॥

हो कैसे भांड का बेटा तू क्या बकती है आ करके ॥ २ ॥
नहीं ताक़त किसी की है उसे शूली चढ़ाने की ॥
यक़ीं आता नहीं मुझको दिखा मौक़े पे जा करके ॥ ३ ॥
में खुद चलती हूं झूठी बात गर तेरी मैं पाउंगी ॥
तुझे मरवायदुंगी बान्दी खाल में भुस भरा करके ॥ ४ ॥

(रवाना होना)

सीन ४०

शूली का परदा

२७७
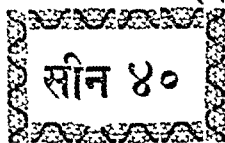
जल्लादों का श्रीपाल को शूली के पास ले जाकर खड़ा करना
श्रीपाल का कर्मों की निन्दा करना और अफसोस करना ॥
चाल—(नाटक) हाय मुझे दर्दे जिगर ने सताया ॥

हाय मुझे कर्मों ने कैसा सताया ॥
कोई प्यारा नहीं-कोई चारा नहीं-न सहारा किसी ने दिलाया
किया मुझको अकेला बाप को सरसे हटा करके ॥
निकाला घरसे मुझको कुष्ट को तन में लगा करके ॥
कहां माता कहां गुनमाला मैना रैनमंजूषा ॥
खबर आया नहीं क्या मुझको दरया में गिरा करके ॥
राजा जल्लदर मिला-सेठ मय्याद मिला-हर एक उस्ताद
मिला—सख्त बेदाद मिला ।

न कोई आदिलो मुनसिफ़ न यगाना देखा ॥
ग़ोर कर देखा तो फ़ितरत का ज़माना देखा ॥
हाय कर्मों ने रहम न खाया ॥ कोई प्यारा० ॥

२७८

गुणमाला का दासी के साथ शूली के पास पहोंचना और श्रीपाल
से हाल पूछना ॥

चाल—मारूडा प्यारी बोली रे मारने दे जलनीर ॥

गुणमाला अरजी करती जी सुन लीजे भरतार ॥ टेक ॥
तुम कोटीभट त्रय धारी-यह कैसी बात विचारी ॥
किम निन्दा हुई तुम्हारी जी-राजा के दरबार ॥ १ ॥
तुम किसके सुत कहलावो-मेरा सब संदेह मिटावो ॥
मोहे सांची बात बतावो जी जरा दया सु मनमें धार ॥ २ ॥

२७९

श्रीपाल का जवाब

चाल—सखी हावन बहार आई झूलाय जिनका जी चाहे ॥

बताएं क्या तुम्हें प्यारी पता अपना निशां अपना ॥
बस अपना है नहीं कोई निशां अ. अपना । १ ॥
न माई बंध है कोई न कोई आशना
विगाने देश में प्यारि . है म
यहाँ बेरन सुवा
ठिकाना अब . ह
सदा यूं ही बगूले र
नहीं मालूम क्यों ने

रैनमंजूषा के जहाज़ का परदा

२८३

गुणमाला का रैनमंजूषा को पुकारना ॥ (वार्तालाप)

अरी श्रीमती रैनमंजूषा-अरी सती रैनमंजूषा—हे प्यारी रैनमंजूषा कहीं हो तो बोल अरी बहन रैनमंजूषा जो कहीं सुनती हो तो बोल ॥

२८४

रैनमंजूषा का पता न लगने पर गुणमाला का अफसोस करना ॥

चाल—सखी सावन बहार आई झुलाए जिसका जी चाहे ॥

कहां जाऊं किधर ढूंढूं न सूरत देख पड़ती है ॥
समझले दिलमें गुणमाला तेरी तक़दीर फिरती है ॥१॥
बोल दे दे के मैं हारी जवाब आया नहीं अब तक ॥
किसी की कुछ नहीं चलती है जब तक़दीर फिरती है ॥२
हुई गर देर तो क़ातिल करेगा क़त्ल बालम को ॥
करूं क्या अक्ल मेरी यहां नहीं कुछ काम करती है ॥३॥
पियारी रैनमंजूषा अगर कहीं हो तो बोलो तो ॥
खड़ी गुणमाला तेरी याद सौ सौ बार करती है ॥ ४॥

२८५

गुणमाला की आवाज़ सुनकर रैनमंजूषा का जहाज़ पर खड़ी होकर देखना और पूछना ॥ चाल—नंबर २८४

बहन तू कौन है और किस लिये बेज़ार फिरती है ॥
मुसीबत क्या पड़ी तुझपर जो यूं फ़रयाद करती है ॥ १ ॥
मैं खुद बेचैन हूं दुखिया हूं कर्मों की सताई हूं ॥
मैं जो कुछ हूं सो हाज़िर हूं कहो क्यों याद करती है ॥ २ ॥

२८६

गुणमाला (शेर)

ज़ात श्रीपाल की क्या है बता दीजे कृपा करके ॥
मेरा दुख दर्द है यह ही मिटा दीजे दया करके ॥

२८७

रैनमंजूषा (शेर)

सखी तू कौन है क्या दुःख तुझे पहले बता मुझको ॥
तू क्यों पूछे है मेरे मे हाल सारा सुना मुझको ॥ १ ॥
तू क्या श्रीपाल को जाने ज़रा यह तो जिता मुझको ॥
असल जो बात है कहदे न दे धोका ज़रा मुझको ॥ २ ॥

२८८

गुणमाला का हाल बताना ॥
चाल—(नाटक हरिश्चन्द्र) दिये दुख कलक ने भारे ॥
बसे दंड के राज बिचारे ॥

मैं अबला दुखयारी—क्या पूछेगी बात हमारी ॥ टेक ॥
पिता मेरा भूपाला—है नाम मेरा गुणमाला जी ॥

वनमालाकी र जदुलारी क्या० ॥ १ ॥

श्रीपाल एक सुन्दर काया—वह सागर तिरकर आयाजी ।

भयो नगरमें अचरज भारी ॥ क्या० ॥ २ ॥

सो वोही पिता मन भायो–मम तासंग व्याह रचायो जी ॥

भई वह ही जो मुनि उचारी ॥ क्या० ॥ ३ ॥

भोगे सुख दिन दो चारे–अब फिर गए भाग हमारे जी ॥

नहीं मुखसे जाए उचारी ॥ क्या० ॥ ४ ॥

एक भांड अखाड़ा आया—श्रीपालको पुत्र बताया जी ॥

कहा, है संतान हमारी ॥ क्या० ॥ ५ ॥

सुन राजा कोप उपायो–झट क़त्लका हुक्म सुनायो जी ॥

हुई शूलीकी अब तय्यारी ॥ क्या० ॥ ६ ॥

अब सांच बात कह दीजे–मोहे भीक नाथकी दीजे जी ॥

मैं आई हूं शरण तिहारी ॥ क्या० ॥ ७ ॥

२८९

रैनमंजूषा का जवाब देना और दोनोंका रवाना होना

चाल—क़त्ल मत करना मुझे तेग़ो तवर से देखना ॥

बात क्या श्रीपालकी है तुझको जितलादूंगी मैं ॥

चल पिताके सामने सब हाल बतलादूंगी मैं ॥ १ ॥

रंगते क्या क्या दिखाई हैं करमने आनके ॥

खैंचकर नक़शा सरे दरबार दिखलादूंगी मैं ॥ २ ॥

कहने सुननेसे किसीके नेको बद होता नहीं ॥

भांड है या है वह राजा साफ़ जितलादूंगी मैं ॥ ३ ॥

छूट सच जो कुछ कि है मालूम वहां होजायगा ॥
खोलकर अच्छा बुरा सब हाल दिखलादुंगी मैं ॥ ४ ॥
ध्यान धर जिनराजका और धर्मपे निश्चय करो ॥
सांचको नहीं आंच यह चलकरके बतलादुंगी मैं ॥ ५ ॥
छोड़दे सब रंजोगम दिलको तसल्ली दीजिये ।
तेरे बालमको रिहाई जाके दिलवादूंगी मैं ॥ ६ ॥

(दोनों का चला जाना)
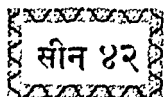
सीन ४२

कुमकुमद्वीप के राजा के दरबार का परदा

२९०

मैनसुन्दरी और गुणमालाका दर्बार में पहोंचना और वार्तालाप करना ॥

गुण०—पिताजी हमारे नगरमें सागरके तीर जो जहाज आए हैं उनमें यह एक सूरतकी प्यारी सुन्दर नारी है जो आपको श्रीपालका असली हाल बतलावेगी ॥

राजा—(मैनसुन्दरी से) हे देवी अपने हृदय में मन भाव को धारण करो और श्रीपालका सारा चरित्र मेरे से वर्णन करो ॥

२९१

रैनमंजूषा का जवाब ॥

चाल—क़त्ल मत करना मुझे तेग़ोतबर से देखना ॥

क्या कहूं यह माजरा क्योंकर हुवा क्या होगया ॥
बस समझलो जैसा कुछ होना था वैसा होगया ॥ १ ॥
हाल इस श्रीपाल का मेरे से क्या पूछो हो तुम ॥
जैसा क़िसमत में लिखा था होगया सो होगया ॥ २ ॥
था विचारा कुछ, नतीजा और ही कुछ होगया ॥
यार दुशमन बन गया अपना पराया होगया ॥ ३ ॥
कौन लाएगा यक़ीं कहने पे मेरे इस जगह ॥
आपही कहदेंगे सुनकर कैसे ऐसा होगया ॥ ४ ॥
मेरे ही कपड़े बदन के मेरे दुशमन हो रहे ॥
फिर शहादत कौन देवेगा कि ऐसा होगया ॥ ५ ॥

२९२

राजा का जवाब (शैर)

बेटी तू इस तरह का न दिलमें खयाल कर ॥
सब दूर अपने दिलसे यह रंजो मलाल कर ॥ १ ॥
जो बात अस्ल है वह मेरे से तू अयां कर ॥
मुझको यक़ीं है बात का तेरी तू बयां कर ॥ २
हुक्म एक दम जज़ा व सज़ा का सुनाऊंगा ॥
पानी को अलग दूध से करके दिखाऊंगा ॥ ३ ॥

२९३

रैनमंजूषा का हाल बताना ॥

चाल—(इन्दरसभा) मामूर हूं शोख़ी से शरारत से भरी हूं ॥

सुनिये पिताजी हाल श्रीपाल सुनाऊं ॥
जो माजरा है साफ़ तुम्हें सारा बताऊं ॥ १ ॥
अंगदेश में इक शहर है चम्पापुरी है नाम ॥
राजा वहां का अरिदमन था सो नेकनाम ॥ २ ॥
उसका यह श्रीपाल पियारा कुमार है ॥
कहते हैं कोटीभट इसे राजों में सार है ॥ ३ ॥
उज्जैन के राजा का जमाई है जानियो ॥
मैना मती का कंथ है सच बात मानियो ॥ ४ ॥
है कनककेतु राजा हंसद्वीप का भारी ॥
मैं उसकी सुता और श्रीपाल की नारी ॥ ५ ॥
हम दोनों चले लेके धवल सेठ महारा ॥
पापी ने मोहे देख पाप मनमें विचारा ॥ ६ ॥
छल करके श्रीपाल को दरिया में बहाया ॥
और पास मेरे दुष्ट वचन बोलने आया ॥ ७ ॥
तब आके जैन देवी करी मेरी सहाई ॥
उस पापी को दीनी सज़ा की सबकी तबाही ॥ ८ ॥
कहने से मेरे देवी ने उपसर्ग निवारा ॥
मुझको बना दिया कि मिले [illegible] ॥ ९ ॥
अब तक इसी उम्मेद में जीती
मानो तरह की आफ़तें [illegible]

कर आपके दर्शन सुखी मन हो गया मेरा ॥
दसवां विभाग शील का गरचे गया मेरा ॥ ११ ॥
सम तात जान आपको दरबार में आई ॥
जो बात असल थी वह सारी आके सुनाई ॥ १२ ॥
चाहे जो करो आपको अब अख़्तियार है ॥
इसमें न कोई मेरी तरफ़ से विचार है ॥ १३ ॥

२९४

राजा का अफ़सोस करना और सबका श्रीपाल के पास जाना ॥ (शैर)

है अफ़सोस कैसा ज़ुलम होगया ॥
ग़ज़ब हो गया है सितम होगया ॥ १ ॥
मेरे सरमें कैसा जनूं हो गया ॥
जो इन्साफ़ का आज खूं हो गया ॥ २ ॥
मेरे बेगुनाह यूं मेरे राज में ॥
सती पाए दुख यूं मेरे राज में ॥ ३ ॥
बिलाशक श्रीपाल है बेगुनाह ॥
सरासर धवल सेठ है पुर ख़ता ॥ ४ ॥
सती रैनमंजूषा सतियों में सार ॥
रखा शील को तूने अपने संभार ॥ ५ ॥
है शाबाश बेटी महा गुण भरी ॥
समझ. सब गई अब सुनीकत तेरी ॥ ६ ॥
धवल सेठ बचकर कहां जाएगा ॥
किये की वह अपने सज़ा पाएगा ॥ ७ ॥

श्रीपाल के पास जाता हूं मैं ॥

अभी तख्त पर ला बिठाता हूं मैं ॥ ८ ॥

(सबका चला जाना)
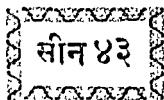
सीन ४३

शूली का परदा

२९५

राजा व गुनमाला व रैनमंजूषा और सब दरबारियों का शूली के पास पहुँचना और राजा का श्रीपाल से मुआफी मांगना ॥ शेर)

सुनो कोटीभट अय शहे नेकनाम ॥

गुनहगार हूं मैं तेरा लाकलाम ॥ १ ॥

बिना बात मैंने दिया दुख तुझे ॥

पशेमान हूं मैं तेरे सामने ॥ २ ॥

बनावट का था सारा यह माजरा ॥

बड़ा मुझको भांडों ने धोका दिया ॥ ३ ॥

जो कुछ बात थी साफ वह खुल गई ॥

जो थी असलियत मुझको सब मिल गई ॥ ४ ॥

खतावार मैं तेरा सरतापा हूं ॥

जो चाहो सो करदो गुनहगार हूं ॥ ५ ॥

दया मय तू गम्भीर वरवीर है ॥
मुआफ़ कीजे मेरी जो तक़सीर है ॥ ६ ॥

२९६

भीमसेन का जवाब (चाल—इतने मत हटना मुझे तेरी नज़र से देखना)

कौन करता है क्षमा राजा तेरी तक़सीर का ॥
दोष जो कुछ है सरासर है मेरी तदबीर का ॥ १ ॥
कर्म जो मैंने किये उनका नतीजा मिल गया ॥
टल नहीं सकता कभी हरगिज़ लिखा तक़दीर का ॥ २ ॥
रंज गर है तो मुझे राजा तेरे इन्साफ़ पै ॥
नाम भी तुझमें नहीं है अक़्ल का तदबीर का ॥ ३ ॥
गर नहीं तुझको तमीज़ एक भांड में और शाह में ॥
क्या करेगा न्याय तू फिर हर ग़रीब अमीर का ॥ ४ ॥
जुर्म मैंने क्या किया था यह ज़रा देतो बता ॥
हुक्म सूली का सुनाया कौनसी तक़सीर का ॥ ५ ॥
सख़्त है अफ़सोस तूने गुण मेरा जाना नहीं ॥
बल कभी देखा नहीं मेरी कमान और तीर का ॥ ६ ॥
कौन दे सकता है शूली मुझको तेरी क्या मजाल ॥
देवता हैं कांपते सुन नाम कोटी वीर का ॥ ७ ॥
ला ज़रा जाकर तेरी सैना को मेरे सामने ॥
देखलूं बल मैं भी तेरी फ़ौज और शमशीर का ॥ ८ ॥
पुत्र कोटीभट का हूं और आप कोटीभट हूं मैं ॥
मत समझियो मुझको बेटा भांड का या हीर का ॥ ९

में अगर चाहूं उलट दूं सारे तेरे राज को।
तब तुझे मालूम होगा पुत्र हूं किस वीरका ॥ १०

२९७

राजा का शरमिन्दा होना और श्रीपाल की अस्तुति करना ॥ (वार्तालाप)

अय महाराज श्रीपाल ! बेशक मैं गुनहगार हूं-आपका खतावारहूं ॥ बदकार भांडोंने सरे दरबार मुझको धोका दिया आपसे बदगुमान कराया-दुनिया मे मुझको बदनाम किया आपके सामने पशेमान बनाया ॥

शेर–अय शहा कर महरबानी बख्श दो मेरी खता ॥
मेरी गलती मुआफ़ कीजे हूं में बन्दा आपका ॥ ॥१॥
चालमें आ हरइक इन्सान धोका खाही जाता है ॥
भांड नक्काल लोगोंके कहे में आही जाता है ॥ २ ॥
आप महाराज कोटीभट दयामय हैं दयासागर ॥
बख्श दीजे खता मेरी जरा मनमें दया लाकर ॥ ३ ॥

२९८

श्रीपाल का जवाब देना ॥

चाल—(गुलम कराओ) दिल हमने सनम का दिया नज़राना समझ के ॥

दुशमन हमारी जानके सब यार बन गए ॥
हम आज बेखता ही गुनहगार बन गए ॥ १ ॥
हमने जरूर मेरकी कोई खता करी ॥
जो मेरे लिये बद भी दिल आज़ार बन गए ॥ २ ॥
महाराज आपकी नहीं इसमें कोई खता।

जाती है ॥ तेरे सब हमराहियों की ताज़ीस्त क़ैद की जाती है ॥ अय कोतवाल इन बदकिरदार भांडोंको तीरोंसे हलाक करो ॥ बदमाशों से मेरे राज्यको पाक करो ॥ इन मुजरिमों की कुछ सुनाई न होगी ॥
फौरन तामीले हुक्म हो हरगिज रिहाई न होगी ॥

३०१

श्रीपाल का सिफारिश करना ॥
चाल—रहम मत करना मुझे नेकी नज़र से देखना ॥

तात को मेरे शहा कर महरबानी छोड़दो ॥
छोड़ दो बहरे प्रभु तुम छोड़ दो अब छोड़ दो ॥ १ ॥
यह धवल शाह सेठ है और धर्म का मेरा पिता ॥
इसने जो कुछ है किया अच्छा किया है छोड़ दो ॥२॥
यह अगर वहां पे नहीं दरिया में मुझको डालता ॥
किस तरह मिलती मुझे गुणमाला प्यारी, छोड़दो ॥३॥
क्यों लगाते हो सियाही मेरे मुंहपे अय शहा ॥
होना था सो हो चुका अब क्या है इनको छोड़दो ॥४॥
सर झुकाकर दस्तबस्ता अर्ज यह करता हूं मैं ॥
जितने यह मुलजिम हैं सब कहने से मेरे छोड़दो ॥५॥

३०२

राजा और श्रीपाल की बात चीत (शेर)

राजा—अय कंवर कहते हो क्या सोचो विचारो तो जरा ॥
रहम करने का कौन मौका निहारो तो जरा ॥ १ ॥

कोत०-अभी हुजूर का हुक्म बजालाताहूं (चला जाना)
राजा-अय सेनापति समुद्र पर जो जहाज़ आए हें सबको जब्त करो और दाखिल सरकार करो-पापी धवल और उसके सब आदमियों को गिरिफ़तार करो हाज़िर दरबार करो ॥
सेना० बहुत अच्छा महाराज अभी तामीले हुक्म करताहूं ॥
(रवाना होना)
राजा-अय मंत्री क्या पापी धवल ने कम जुल्म किया है जो उसको मौत की सज़ा न दी जाए ॥
मंत्री०-अय कुमकुमद्वीपके शहनशाह वाकई धवल सख्त मुजरिम है इसको जरूर मौत की सज़ा दीजाए हरगिज़ रिहाई न की जाए ॥
कोत०-(भांडों को पेश करके) हजूर इन बदकिरदार भांडोंके बखारको बरबाद किया-सबको पाव ज़ंजीर हाज़िर दरबार किया ॥
सेना०अय शहनशाह सब जहाज़ जुब्त होकर दाखिल सरकार हैं-मुजरिम गिरिफ़्तार हाज़िर दरबार हैं
राजा-(हुक्म सुनाना) अय पापी धवल तूने अपनी धर्मकी बेटी सती रनमंजूषाके शीलपर हाथ निकाला और श्रीपालको नाहक समुद्र में डाला हमको भरे दरबार धोका दिया-कंवर श्रीपालको नजरों में शरमिन्दा किया ॥ तुझको तेरे पापों के बदले मौत की सजा दी

जाती है॥ तेरे सब हमराहियों की ताज़ीस्त क़ैद की जाती है ॥ अय कोतवाल इन बदकिरदार भांडोंको तीगेंसे हलाक करो ॥ बदमाशों से मेरे राज्यको पाक करो ॥ इन मुजरिमों की कुछ सुनाई न होगी ॥
फौरन तामीले हुक्म हो हरगिज रिहाई न होगी ॥

३०१

श्रीपाल का सिफारिश करना ॥

चाल—रहम मत करना मुझे तेगे नजर से देखना ॥

तात को मेरे शहा कर महरबानी छोड़दो ॥
छोड़ दो बहरे प्रभु तुम छोड़ दो अब छोड़ दो ॥ १ ॥
यह धवल शाह सेठ है और धर्म का मेरा पिता ॥
इसने जो कुछ है किया अच्छा किया है छोड़ दो ॥२॥
यह अगर वहां पे नहीं दरिया में मुझको डालता ॥
किस तरह मिलती मुझे गुणमाला प्यारी, छोड़दो ॥३॥
क्यों लगाते हो सियाही मेरे मुंहपे अय शहा ॥
होना था सो हो चुका अब क्या है इनको छोड़दो ॥४॥
सर झुकाकर दस्तबस्ता अर्ज यह करता हूं मैं ॥
जितने यह मुलजिम हैं सब कहने से मेरे छोड़दो ॥५॥

३०२

राजा और श्रीपाल का बातचीत (शेर)

राजा—अय कंवर कहते हो क्या सोचो विचारो तो जरा ॥
रहम करने का कौन मौका निहारो तो जरा ॥ १ ॥

श्री०--है दया ही धर्म का लक्षण विचारो तो जरा ॥
हर जगह लाजिम दया करनी निहारो तो जरा ॥ २॥
राजा-हुक्म तेरा मानने को मैं सदा तैयार हूं ॥
कैसे पर छोड़ूं इन्हें क़ानून से लाचार हूं ॥ ३ ॥
श्री०आप सच फरमाते हैं फ़रमां का ताबेदार हूं ॥
पर कहो मैं क्या करूं आदत से मैं लाचार हूं ॥४॥
राजा-पाप के बदले सजा पापी को देनी चाहिये ॥
अपने फेलों की सजा हरइक को लेनी चाहिये ॥ ५ ॥
श्री०-है यही लाजिम दया हरइक पे करनी चाहिये ॥
आंख बदफेली पे औरों का न धरनी चाहिये ॥ ६ ॥
राजा—खून यूं इन्साफ का करना मुनासिब है नहीं ॥
छोड़ देना मुजरिमों को यूं मुनासिब है नहीं ॥ ७ ॥
श्री० खूं बहा देना किसी का भी मुनासिब है नहीं ॥
रहम को दिलसे हटा देना मुनासिब है नहीं ॥ ८ ॥
राजा-अपने पापों की सजा गर यह नहीं यहां पाएगा ॥
कौनसी फिर है जगह जिस जा सजा यह पाएगा ।९।
श्री०-आप क्यों कातिल बनें हाथ आपके क्या आएगा ॥
जैसा जो करता है वैसा उसके आगे आएगा ॥१०॥
कर्म का क़ानून है ऐसा अटल दुनिया के बीच ॥
अपनी करनी की सजा हरइक बशर खुद पाएगा ।११।
राजा-गर यही मनशा तुम्हारा है तो इनको छोड़ दूं ॥
मुझको यह ताक़त कहां जो हुक्म तेरा मोड़ दूं ॥१२॥

श्री०—अच्छा तो फिर हुक्म हो तो सबके बंधन छोड़दूं ॥
हाथ पाओं खोलदूं जंजीर सबकी तोड़दूं ॥ १३ ॥
राजा—अय कंवरजी आपका कहना मुझे मंजूर है ॥
चाहे जो कुछ कीजिये वह ही मुझे मंजूर है ॥ १४ ॥

(श्रीपाल का अपने हाथों से सबके बंधन खोलना)

३०३

सबका श्रीपालकी स्तुति करना ॥

चाल—[क़वाली] हुवा सुन राम जशरथ के बहादुर हो तो ऐसा हो ॥

अहो श्रीपाल कोटीभट बहादुर हो तो ऐसा हो ॥
नेक नीयत बुलन्द हिम्मत दिलावर हो तो ऐसा हो ॥ १ ॥
खोलदी हाथसे अपने तौक़ जंजीर सारोंकी ॥
खता सबकी मुआफ़ करदी दयाकर हो तो ऐसा हो ॥ २ ॥
दयाका धर्मका गुणका दिवाकर हो तो ऐसा हो ॥
प्रजारक्षक धरमपालक कोई गर हो तो ऐसा हो ॥ ३ ॥

३०४

श्रीपालका धवल सेठकी स्तुति करना ॥

चाल—(ग़ज़ल) इस इश्क़ ने यारो मुझे दुनिया से उठाया-दीवाना बनाके ॥

इस कर्मने देखो मुझे दरया में गिराया—बहाना बनाके ॥
लहरोंने समंदरकी परीशान बनाया-दीवाना बनाके ॥ १ ॥
अय तात रासते में न सेवा करी तेरी—अफ़सोस है बाक़ी ॥
तूफ़ान भंवर ने मुझे लाचार बनाया—नीशाना बनाके ॥ २ ॥

३०८

[illegible]

[illegible]) दरसे यहां कौन खुदा के लिये लाया मुझको ॥

आज दुनिया से मैं बदनाम हुवे जाता हूं ॥
पापका भार मैं सर अपने लिये जाता हूं ॥ १ ॥
मुझसा पापी भी तो दुनियामें न होगा कोई ॥
पापकी खाक मैं चेहरेपे मले जाता हूं ॥ २ ॥
हा श्रीपाल तुझे मैंने सताया बेटा ॥
सामने ते रे नज़र नीची किये जाता हूं ॥ ३ ॥

(ज़मीनपर गिरना और मरजाना

३०६

श्रीपालका अफ़सोस करना और अपनी धर्म की माता सिठानी के पास जाना

चाल—(कृवाली) सखी सा[illegible]न बहार आई फुवार जिसका जी चाहे ॥

ग़ौर कर देखलो साहिब कि दुनिया चन्द रोज़ा है ॥
बक़ा इसमें किसीको भी नहीं है चन्द रोज़ा है ॥ १
यह जीते जीके झगड़े हैं जो मेरी मेरी करते हैं ॥
वगरना सारी दुनियाका तमाशा चन्द रोज़ा है ॥ २
कहां वह भीम और अर्जुन कहां रावण राम लछमन ॥
सभी यूं कहगए आख़िर कि दुनिया चन्द रोज़ा है ॥ ३
[illegible] धर्मका मेरा पिता भी आज दुनियासे ॥
गए अफ़सोस ख़ाली हाथ दुनिया चन्द रोज़ा है ॥ ४

[illegible] रवाना होना)

सीन ४९

सिठानी के जहाज़ और महलका परदा

३०७

[illegible] का सिठानी से मिलना और अर्ज करना ॥

चाल—[illegible] ॥

प्रभु भक्ति में मात लगा री जिया ॥
लगा री जिया—मना री जिया ॥ प्रभु० ॥ टेक ॥

तन धन जोबन झूटे सारे ॥
सारे समझले असार जिया ॥ प्रभु० ॥ १ ॥

होना था सोही होगया माता ॥
रंज को मन से दूर हटा ॥ प्रभु० ॥ २ ॥

विषय भोग का ध्यान हटाले ॥
जैन धरम में प्रेम लगा ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥

आज्ञा दीजे मात कुंवर को ॥
सर आंखों से मैं लाऊं बजा ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥

३०८

[illegible] ॥

चाल— [illegible] ।

कुंवर श्रीपाल सुन [illegible] ॥
शील सृंगार धरम [illegible] ॥ १ ॥

चलो माता तुम्हारे देशमे चलके पहोंचाऊं ॥
चलूं खुद संगमें और संग सब सैना हमारी हे ॥ ४ ॥

[सबका रवाना होना]
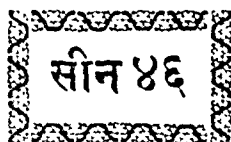
श्रीपालके महल का परदा ॥

३१२

नोट—राजा श्रीपाल पिटरानीजी को पहोंचाकर वापिस कुमकुमद्वीपमें आए और गुणमाला और रैनमंजूषा के साथ सुखसे रहते हुवे ॥ कुछ दिन बाद कुन्दनपुर के राजा मकरकेतु (राणी कर्पूरतिलक) की लड़की चित्ररेखाको व्याहा और कंचनपुर के राजा वज्रसैन (राणी कंचन माला की बेटी विलासमती से शादी की और कुमकुम पट्टनके राजा यशसेन की लड़की शृंगारगौरी को व्याहा और अनेक राजाओं को जीतकर उनकी कन्याओं को व्याहा और सुखसे कुमकुमद्वीप में राज करते रहे ॥

३१३

एक रात श्रीपाल का मैनासुन्दरी को याद करना और गमगीन होना ॥
रैनमंजूषा व गुणमाला का हाल पूछना ॥

चाल—मैं वही हूं प्यारी शकुन्तला तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥

प्यारे क्यों यह हालते जार है कैसा जीको तेरे मलाल है ॥
पिया साफ़ बतलादो हमें यह आपका क्या हाल है ॥ १ ॥

छठा ऐक्ट

मैनासुन्दरीका श्रीपाल के आनेकी आशा छोड़कर अपनी साससे अर्जिका होने के लिये आज्ञा मांगना, श्रीपाल का मैनासुन्दरी के पास पहोंचना और उसको रोकना, अपनी माता और मैनासुन्दरी को अपनी सैना में लाना और मैनासुन्दरी को पटराणी बनाना, मैनासुन्दरी का पिता को अपने कर्म का जलवा दिखाना श्रीपाल का चम्पापुर पहोंचना और अपने चचा वीरदमन से युद्ध करना और चचा को जीतना और चम्पापुर के तख्त पर बैठना और सबका मुबारकबादी गाना,

मैनासुन्दरी के महल का परदा ॥

३१६

मैनासुन्दरी का सप्तमी की रात को श्रीपाल को याद करना और उसके वियोग में विलाप करना और व्याकुल होकर अपनी सास के पास जाना ॥

चाल—हाय अच्छे पिया यही देश बुलालो हिन्द में जी घबरावत है ॥

हाय अच्छे पियामोहे दर्श दिखावो रैन में जी घबरावतहै टेक।
प्रभु के वास्ते अब तो तुम आवो जल्दी से ॥
सती को आन के सूरत दिखावो जल्दी से ॥
ज़रा तुम आके मेरे जी की बेकली देखो ॥
हैं प्राण जाते सती के बचावो जल्दी से ॥
हाय जीना भयो अब पलपल भारी नींद न दमभर आवत है १
न मैंने तप ही किया और न कुछ भी सुख देखा ॥
उमर सँभाली है जबसे सदा ही दुख देखा ॥
किसी के क़ौल का ना एतबार दुनिया में ॥
है क्षत्रियों के बचन को भी मैं परख देखा ॥
हाय जनम की दुखियादरश की प्यासी काहे जी तड़पावतहै २
तड़प रही हूं पड़ी बेक़रार जंगल में ॥
मेरा प्रभू को है मालूम हाल जंगल में ॥

ज़रा तुम आके मुझे यह बताओ तो कबतक ॥
करूंगी आने की मैं इन्तज़ार जंगल में ॥
हाय रैन अंधेरी जगतकी बैरन मछली सी तड़पावत है ॥ ३ ॥
किये हैं बारा बरस पूरे दुख यह सह करके ॥
राज़ बतावो तो तुम क्या गए थे कह करके ॥
न आए आजका वादा किया था क्यों तुमने ॥
इसी भरोसे वचन तुम गए थे दे करके ॥
हाय उमडउमड पिया नैन हमारे निशदिनमेंह बरसावतहैं ॥ ४

(चला जाना)

सीन ४८
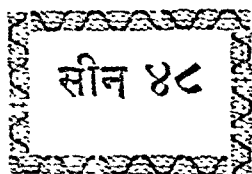
मैनासुन्दरीकी सासके महलका परदा

२१७

नोट—राजा श्रीपाल अपने स्वसुर की आज्ञा लेकर और सब रानियों और तमाम लश्कर को साथ लेकर उज्जैन नगर की तरफ़ रवाना हुआ और [illegible] दिन उज्जैनमें पहोंचा। सब रानियों को और लश्कर को [illegible] छोड़कर अकेला [illegible] आधी रैन के समय मैनासुन्दरी के महल के पास गया इस समय मैनासुन्दरी श्रीपाल के वियोग से व्याकुल होकर अपनी सास से [illegible] [illegible] थी श्रीपाल [illegible] [illegible] सुनने लगा।

३१८

मैनासुन्दरी का अपनी सास से गीता ॥

चाल—(नाटक) पिया आए न अरी हमसे सहा दुख जाए ना ॥

पिया आए ना अरी हमसे सहा दुख जाए ना ॥
ना वह आए जराए सताए जिया ॥ पिया० ॥
मुझको मालूम न था धोका दिये जाते हैं ॥
क्षत्रियों के भी बचन झूंठ निकल आते हैं ॥
न तो कुछ धर्म किया और न कुछ सुखही मिला ॥
उम्र के दिन यूं ही बरबाद हुए जाते हैं ॥
अनभाएना-भयो जाए ना ॥ अरी हमसे सहा दुख जाएना ॥
ना वह आए जराए सताए जिया ॥ पिया० ॥

३१९

सास का जवाब (दोहा)

हे पुत्री धीरज धरो मन मत करो उदास ॥
निश्चय करके आएगा, कोटीभट रख आस ॥ १ ॥
क्या जाने परदेश में, क्या कारण भयो आय ॥
जो अबलग आयो नहीं, श्रीपालवर राय ॥ २ ॥
वह क्षत्री का पुत्र है, महाबली सुख कन्द ॥
झूंट बचन बोले नहीं, चाहे टरें रवि चन्द ॥ ३ ॥

३२०

मैनासुन्दरी का जवाब ॥ चाल—[illegible]

मैं ना मानूंगी निहारी जग तुम्ह कारणा री ॥ टेक ॥

अब मैं सारे दुख परहारूं ॥ तोड़ मुकुट धरती में डारूं ॥
भेष अर्जका सारूं ॥ सब सुख कारणा री ॥ १ ॥
अब लग आस विषय तरु बोए ॥ बारा बरस अकारथ खोए ॥
अब ना खोऊं एक पल माता ॥ जनम सुधारना री २॥
मत मेरे जीको भरमावो ॥ मतना सूते करम जगावो ॥
माता वेगी हुक्म सुनादो ॥ कर इन्कार ना री ॥ ३ ॥

३२१

माम का जवाब ॥ चाल–घरसे यहाँ कौन खुदा के लिये लाया मुझको ॥

बेटी दो दिन मेरे कहने से ठैर जावो तुम ॥
ऐसी कायर न बनो जीको न कलपावो तुम ॥ १ ॥
इतने कहने की मेरे और भी करलो परीक्षा ॥
जो नहीं आया तो फिर ले लेंगे दोनो दीक्षा ॥ २ ॥

३२२

मैनासुन्दरी का जवाब ॥ चाल–परदेसी सय्यां नेहा लगाए दुख देगयो ॥

कोटीभट माता बातें बनाए दुख देगयो–सुख लेगयो ॥ टेक ॥
कै तो भरमाए नारी ॥ हमको विसराए हारी ॥
कै वह मारग वीसारी ॥ कै वह मारग वीसारी ।
दुख देगयो—सुख लेगयो ॥ कोटी० ॥ १ ॥
पाती न आई पीकी ॥ कभु ना पूछी जीकी ॥
झूटी सब बातें देखी ॥ एक ना सांची देखी ॥
जो कह गयो–वर देगयो ॥ कोटी० ॥ २ ॥
मनको ठैराए राखो ॥ अब लग समझाए राखो ॥

बनके विरहन विप चालो ॥ बनके विरहन विप चालो ॥
अब ना रहूं–पल ना रहूं ॥ कोटी० ॥ ३ ॥

३२३

सास और मैनासुन्दरी के सवाल और जवाब ॥

चाल–(कव्वाली) सखी सावन बहार आई झुलाए जिसका जी चाहे ॥

सास–अरी तू मान ले श्रीपाल कल्ह या आज आएगा ॥
वह निश्चय करके आएगा वचन अपना निभाएगा १॥
मैना०—परम बारा में नहीं आया वह कैसे आज आएगा॥
तुझे होगा यकीं उसका वचन अपना निभाएगा २ ॥
सास—बहुत सी फ़ौज और लश्कर वह अपने संग लाएगा
जो तू होगी नहीं घरमे तो वह किसको दिखाएगा ३
मैना०–मेरे जैसी हज़ारों राज कन्या ब्याह के लाएगा ॥
तू माता वह तेरा बेटा अरी तुझको दिखाएगा ॥ ४ ॥
सास–तुम्हारे बिन अगर सूना वह घरको देख पाएगा ॥
यकीं समझो वह दुख पाएगा उल्टा लौट जाएगा ५ ॥
मैना०-मेरे से भी अधिक सुन्दर वह बांदी घरमें लाएगा ॥
भला मुझ मंदभागन को वह कब खातिर में लाएगा ६
सास–हज़ारों राणियां बांदी अगर वह संग लाएगा ॥
तो सब रणवास में तुझको वह पटराणी बनाएगा ७
मैना०–दिला ल्यालच मुझे मत रोक यह दिन फिर न आएगा
ऐसा मोह जाल में मुझको तेरे क्या हाथ आएगा ८

सास—तू दो दिन औरजा श्रीपाल गर फिर भी न आएगा ॥
तो दिक्षा में भी लेलूंगी तेरा मतलब बर आएगा ९॥
मैना०—है जीना बूंद शबनम की भरोसा है नहीं पलका ॥
कौन जाने मेरी माता कि कल क्या पेश आएगा १०
सास—तू मालिक घरकी क्या तुझको खयाल इतना न आएगा
कि तेरे बिन राज और पाट सब किस काम आएगा ११

३२४

मैनासुन्दरी का उत्तर ॥ (रागनी)

मह न किसी के कोई न हमारा झूटा सब व्यवहार ॥
तन मन धन सब है छिन भंगर जैसे धुन्ध पसारा ॥
दोहा—राजा राणा छत्रपती हथियन के असवार ॥
मरना सबको एक दिन अपनी अपनी बार ॥
दल बल देही देवता मात पिता परिवार ॥
मरती विरियां जीव को कोई न राखनहार ॥
अजी क्या सुत क्या भरतार ॥ हम० ॥ १ ॥
दाम बिना निर्धन दुखी तृष्णा वश धनवान ॥
कहीं न सुख संसार में सब जग देखो छान ॥
आप अकेला अवतरे मरे अकेला होय ॥
यूं कबहीं इस जीव को साथी संग न कोय ॥
अजी झूटा है घरबार ॥ हम० ॥ २ ॥
एक तुच्छ सुखकी आस में जो दिये बारा साल ॥
आतम हित कुछ ना किये पड़ी मोह के जाल ।

अब मनकी आसा मिटी मोह करम गयो सोय।
जो अब भी चेतूं नहीं मो सम मूरख कोय ॥
अर्जा देखो सोच विचार ॥ हम० ३ ॥

३२५

गाम का जवाब ॥

चाल--सब दोनों जहान नज़र से गुज़र तेरी शान का कोई बशर ना मिला

क्यों बिगाड़े है तू मारी बात बनी ॥
पनी बीतगई और थोड़ी रही ॥
एक दो दिन की बात रही है सती ॥
अब नरक तो मही जो सही सो सही ॥ १ ॥
जो यह तेरा पनी है तो मेरा भी सुन ॥
दम माम रमा डर पीर मही ॥
मेरा तेरे से ज्यादा जले है जिया ॥
जरा जी में विचार करो तो मही ॥ २ ॥
अब और अगर हट तुमने करी ॥
और दोनों ने चल करके दिशा धरी ॥
सारे लोग हंसेंगे कहेंगे यही ॥
देखो दोनों ने कैसी अयोग करी ॥ ३ ॥

३२६

सैनसुन्दरी का जवाब ॥ (चाल नम्बर ३२५)

नहीं लोग हंसाई का डर है मुझे ॥
इस बात का एह फ़िकर है मुझे ॥

न तो तप ही किया न पिया ही मिला ॥
　　ना इधर की रही ना उधर की रही ॥ १ ॥
अब छोड़ दई मैंने पीकी लगन ॥
　　मैंने लेली है बस श्रीजीकी शरण ॥
गए बारा बरस याद करते सजन ॥
　　ना इधर की रही ना उधर की रही ॥ २ ॥
अब जल्दी से आज्ञा सुना दो मुझे ॥
　　कहीं चल करके दिक्षा दिलादो मुझे ॥
वेगी मुक्ती के मारग लगादो मुझे ॥
　　ना इधर की रही ना उधर की रही ॥ ३ ॥

३२७

सास का जवाब ॥ (चाल नम्बर ३२५

तप करने का बेटी यह वक्त नहीं ॥
　　तेरी बाल अवस्था समझ तो सती ॥
कुछ दिन तो करो सुखराज सही ॥
　　हट छोड़ ज़रा मेरी मान कही ॥ १
एक दो दिन तो इक मन धीर धरो ॥
　　फिर हर्ष के सोलह शृंगार करो ॥
कोटीभट की ज़रा पटनार, बनो ॥
　　सारी चम्पा में आन फिरेगी तेरी । २ ॥

३२८

मैनासुन्दरी का जवाब देना और वैराग्य में आना ॥

चाल—रहम मत करना मुझे तेरी नज़र से देखना

हे जगत दुख रूप तेरा राज क्या करना मुझे ॥
यहां सदा रहना नहीं घरबार क्या करना मुझे ॥ १ ॥
रंक हो चाहे राव हो यहां सब में हलचल हो रही ॥
सार जब कुछ भी नहीं शृंगार क्या करना मुझे ॥ २ ॥
फिरते फिरते चार गत में एक ज़माना हो गया ॥
अब तो लाज़िम है यही तपसार का करना मुझे ॥३॥
मात सुत भरतार दारा सब जुदा हो जायंगे ॥
ऐसी नातेदारी का फिर ध्यान क्या करना मुझे ॥ ४ ॥
सब जहां मतलब का है मतलब बिना कोई नहीं ॥
अपना जब कोई नहीं संसार क्या करना मुझे ॥ ५ ॥
सबके सब हम और तुम महमान हैं दो चार दिन ॥
अपनी अपनी करके फिर सर भार क्यों धरना मुझे॥६॥
कौन रख सकता है मुझको यह तो बतलादे मुझे ॥
इस जहां फ़ानी से होगा कूच जब करना मुझे ॥ ७ ॥
आग में कोई जलादेगा दबादेगा कोई ॥
किसके काबू में है फिर ज़िन्दा भला करना मुझे ॥८॥
चान्द सूरज की चले ना देव की इन्सान की ॥
यह अमर है नेमुदा- है एक दिन मरना मुझे ॥ ९ ॥

सारे जंतर और मंतर वैद्य भी बेकार हैं ॥
और फिर किसपे भरोसा है कहो करना मुझे ॥ १० ॥
अबतो जीमें है यही मेरे कि जिन दिक्षा धरूं ॥
राज चम्पा वीर पटराणी का क्या करना मुझे ॥ ११

२२९

साम का जवाब (शेर)

हट छोड़ दे छोड़ूं नहीं मैं यों कहूं तू यों कहे ॥
अब ठेरजा ठेरूं नहीं मैं यों कहूं तू यों कहे ॥ १ ॥
राज करियो मैं कहूं और तू कहे दिक्षा धरूं ॥
तू मान जा मानूं नहीं मैं यों कहूं तू यों कहे ॥ २ ॥
दो दिन अगर ठेरे नहीं तो आज के दिन ठेरजा ॥
फिर मैं भी तेरे साथ हूं वह ही करूं जो तू कहे ॥ ३ ॥

२३०

[illegible]

मैंने छोड़ी री तेरे कंवर की आन ॥
सब सुख री नाना जगत का मान ॥ भारी [illegible]—
मची है सारे हलचल—अभी सुख लाग दलबल—
न [illegible] का नाम लो ॥ मैंने० ॥
बनमें ध्यान धरूंगी—तन [illegible] हरूंगी ॥
यहां कुछ काम नहीं है—दुःख का [illegible] नहीं है ॥
एक दिन सबको जाना—क्या राजा क्या राणा ॥

क्या सूरज चन्दर—नौकर अफ़सर—जल चर नभ चर—
इन्दर सुरनर ॥ छोड़ी री० ॥

३३१

सास का जवाब (दोहा)

प्यारी दुर्लभ मिलत है राज भोग संजोग ॥
सुख भोगो संसार का पीछे लीजो जोग ॥ १ ॥
तू प्यारी नादान है करती नहीं विचार ॥
राज सम्पदा राज सुख मिले न बारम बार ॥ २ ॥

३३२

मैनासुन्दरी का जवाब ॥

चाल—मन्नी मरशन बहार आई कुवाव जिसका जी चाहे

फंसे दुनिया में जो मूरख सदा नाशाद होता है ॥
इसे जो छोड़ देता है वही दिलशाद होता है ॥ १ ॥
कहीं मरने का डर दिलमें कहीं बीमारियां तनमें ॥
कहीं रंजोअलम देखा कोई बेज़ार होता है । २ ॥
पशुगन नर्कगत नरगत किसी गतमें न सुख देखा ॥
अगर सुरगन में भी पहोंचा तो माला देख रोता है ॥ ३ ॥
किसी का भाई बैरी है किसी की नार कल्हारी ॥
कोई बिन नार व्याकुल है कोई मन मार रोता है ॥ ४ ॥
कोई निर्धन दुखी देखा नहीं कोई सुखी देखा ॥
किसीको कुछ किसीको कुछ कोई आज़ार होता है ॥ ५ ॥
कोई बिन पुत्र दुख पावे मगर कुछ हाथ नहीं आवे ॥

अगर सुख हो भी जाता है तो मरजाने पे रोता है॥६॥
कोई गर आज सज धज के है बैठा तख्त शाही पे ॥
वही कलको अकेला ख़ाक में जाकरके सोता है ॥७॥
अगर दुनिया में सुख होता तो तिर्थंकर नहीं तजते ॥
विना संसार के त्यागे नहीं आराम होता है ॥ ८ ॥
राज लक्ष्मी, सुनो माता किसी की भी नहीं होती ॥
सदा रहती है चंचल ज्यों झलक बिजली का होता है॥९॥
ज़माना छानकर देखा कहीं भी सुख नहीं देखा ॥
विना वैराग्य के न्यामत नहीं आराम होता है ॥१०॥

३३३

सास का जवाब ॥ चाल—अरे लाल देव इस तरफ़ जल्द आ ॥

ज़रा बेटी कीजे इधर को निगाह ॥
अकेली मैं कैसे रहूंगी बता ॥ १ ॥
तेरा इस तरह जाना अच्छा नहीं ॥
सताना मेरे जी को अच्छा नहीं ॥ २ ॥
गया था श्रीपाल तो छोड़ कर ॥
चली तू भी मेरे से मुंह मोड़ कर ॥ ३ ॥

३३४

मैनासुन्दरी का आभूषण उतार कर फेंकना और अपनी सास को घर बार सौंप कर वन को जाना ॥

चाल नाटक—(भैरवीं) पनिया भरन को मैं कैसे प्यारी जाउं ॥

दिक्षा धरन को मैं माता वन जाउं ॥ टेक ॥
काहे करत हो हमसे झगड़या ॥
पाप हरन को मैं माता वन जाउं ॥ १ ॥

ले माता आभूषण तेरे ॥
ध्यान करन को मैं माता बन जाउं ॥ २ ॥
छोड़ दिया घरबार तिहारो ॥
जोग धरन को मैं माता बनजाउं ॥ ३ ॥
है झूठा यह सब संसारा ॥
भर्म हरन को मैं माता बन जाउं ॥ ४ ॥

३३५

बैनासुन्दरी का आशिकां होने के लिये जाना और श्रीराम का प्रगट होना और बैनासुन्दरी को पकड़ना और समझाना ॥
चाल-(नाटक) तुम कौन-तुम कौन हो साहिब और कहां से किस लिये हो परेशान ॥

ठुक ठैर-ठुक ठैर हो प्यारी-जाती कहां को—
किस लिये हो परेशान ॥ यह सूरत—
यह सूरत कैसी बनाई तुमने-कर दिया है हैरान । ठुक० ॥
शेर-मैं हाजिर हूं मेरी प्यारी तेरे वादे से आ पहले ॥
अभी दिन भी नहीं निकला है जाती हो कहां पहले १
मुझे अफ़सोस है तूने न इतनी इन्तज़ारी की ॥
कि पूरब मे वह सूरज की तो निकल आती किरण पहले २
हां हां जी अलबल वाली-ओ हो हो भोली भाली ॥
तुम तो हो जिनजून वाली ॥ कैसा हट तुमने किया इस
आन औ मनिवान ॥ ठुक० ॥ १ ॥
शेर-राज हट बाल हट तिरिया की हट मशहूर दुनिया में ॥
मगर तेरी सी हट प्यारी कहीं हमने नहीं देखी ॥ १ ॥

छोड़ घरबार को यकदम चली संजम के लेने को ॥
यहां हालत क्या मेरी होती ज़रा यह बात नहीं देखी२।
क्यों ऐसी बात विचारी—क्यों दिक्षा मनमें धारी ॥
क्यों होगई हो मतवारी—मेरा नहीं तुमने किया कुछ ध्यान-
ओ नादान ॥ टुक० ॥ ३ ॥

२३६

मैनासुन्दरी का हाथ जोड़ कर जवाब देना ॥
चाल—कृतल मत करना मुझे तेगो तबर से देखना ॥

दिलही क़ाबू में नहीं दिक्षा धरूं तो क्या करूं ॥
बेकली बढ़ती गई फिर मैं करूं तो क्या करूं ॥ १ ॥
कर दिया मजबूर जब तेरी जुदाई ने मुझे ॥
आगई यह ही मेरे जी में करूं तो क्या करूं ॥ २ ॥
सुख तजा तेरे लिये घरबार सारा तज दिया ॥
छोड़ तुम भी चलदिये तो मैं करूं तो क्या करूं ॥३॥
वर्ष बारा तक तो की मैं इन्तज़ारी आपकी ॥
हो गई लाचार तो बतलाइये मैं क्या करूं ॥ ४ ॥

२३७

श्रीपालका मैनासुन्दरी को महल में चलने के लिये कहना ॥

चाल इंदरसभा (संझौटा भैरवीं) घर से यहां कौन खुदाके लिये लाया मुझको

सरपे आंखों पे कलेजेपे बिठाऊं तुझको ॥
आ मेरी प्यारी गले से मैं लगाऊं तुझको ॥ १ ॥

छोड़ बैराग चलो महल में शृंगार करो ॥
सारे रणवास में पटराणी बनाऊं तुझको ॥ २ ॥

३३८

मैनासुन्दरी का जवाब ॥ (चाल नम्बर ३३०)

विषय भोगों की नहीं बात सुनाओ मुझको ॥
राज और पाट का लालच न दिखाओ मुझको ॥१॥
जाल दुनिया से मैं निकली हूं बड़ी मुशकिल से ॥
अब मेरे प्यारे न फिर इसमें फंसाओ मुझको ॥ २ ॥

३३९

श्रीपाल का कथन ॥ (चाल—नंबर ३३७)

दिन बुरे दूर हुवे पुन्य सितारा चमका ॥
देख कर्मों का तमाशा मैं दिखाऊं तुझको ॥ १ ॥
चलके दरबार में बैठो जग सिंघासन पे ॥
चीर पटरानी का एक बार बंधाऊं तुमको ॥ २ ॥

३४०

मैनासुन्दरी का जवाब ॥ (चाल—नंबर ३३१)

खूब कर्मों का तमाशा मैं पिया देख लिया ॥
रहने दो और तमाशा न दिखाओ मुझको ॥ १ ॥
है यही दिलमें कि जा बनमें कहीं ध्यान धरूं ॥
चीर पटरानी का रस्तो न बंधाओ मुझको ॥ २ ॥

३४१

श्रीपाल का जवाब (चाल नम्बर ३३७)

अबतलक तो जो हुवा सो हुवा माफ़ करो ॥
और आगे को नहीं प्यारी सताऊं तुझको ॥ १ ॥
मेरी भुज बलका ज़रा कुछ तो नज़ारा देखो ॥
तेरी क़िसमत का सती जलवा दिखाऊं तुझको ॥ २ ॥

३४२

मैनासुन्दरी का जवाब देना और जाने को तय्यार होना (चाल नम्बर ३३७)

बाप का प्यार तेरा राज सभी कुछ देखा ॥
ख्वाब है दुनिया की बातें न लुभाओ मुझको ॥ १ ॥
जो खता आज तलक मुझसे हुई माफ़ करो
ज़िद मेरे से न करो बस न सताओ मुझको ॥ २ ॥

३४३

श्रीपाल का मैनासुन्दरी को पकड़ना और रोकना ॥
चाल—छाप मत डाला मुझे तेरी नजर में देखता

बेवजे नाराज़ क्यों होती खता कुछ भी नहीं ॥
आगया वादे पे मैं मेरी खता कुछ भी नहीं ॥ १ ॥
तुझ बिना घरबार लश्कर है मेरे किस काम का ॥
तू गई तो राज करने का मज़ा कुछ भी नहीं ॥ २ ॥
मानले मैना सती कहना मेरा मंजूर कर ॥
याद रख प्यारी सताने में नफ़ा कुछ भी नहीं ॥ ३ ॥

किस तरह जाने दूं मेरे तनकी तु ही प्राण है ॥
मेरी नज़रों में सती तेरे सिवा कुछ भी नहीं ॥ ४ ॥

३४४

मैनासुन्दरी का जवाब देना और हाथ छुड़ाना
चाल नाटक (भैरवी) दिन रतियां ना छेड़ो सय्यां ॥

कर हय्यां ना रोको सय्यां-छाड़ो बय्यां ॥
हम सब तजियां--साजन सखियां हां ॥
मैं लागूं तोरे पय्यां-मोरा छोड़ो जी कलय्यां ॥ कर ०॥
मनवा मूते करम जगावे-मत मेरे जी को भरमावे ॥
कुछ ना तेरे हाथ आवे ॥ हाथ ना लगा बात ना बना ॥
लोभ ना दिखा-जिया ना लुभा हां हां हां हां हां हां हां हां ।कर०

३४५

श्रीपाल का जवाब ॥
चाल—यही अरमान पहाड़ आई सुनाम जिसका जी चाहे

हज़ारों आरज़ू दिलमें हमारे, एक तो निकले ।
मगर तू मानले कहना कि मेरा होंसला निकले ॥१॥
जनम से आज तक हमने यूंही मदमें उठाए हैं ॥
कभी एक दिन नहीं देखा कि दिलका मुद्दआ निकले ॥ २॥

३४६

मैनासुन्दरी का जवाब (चाल नम्बर ३४५)

नहीं होती कभी पूरी किसी की आरज़ू दिलकी ॥
यह हर्गिज़ हो नहीं सकता कि दिलका मुद्दआ निकले ?

फंसे जो जाल दुनिया मे नहीं आखिर को वह निकले ॥
वही निकले मगर दुनिया से जो दामन बचा निकले ॥ २ ॥

३४७

श्रीपालका जवाब ॥ (चाल—नंबर ३४५)

यह माना भोग दुनिया के बुरे हैं जोग अच्छा है ॥
मगर दिलका अगर अरमां निकल जाए तो अच्छा है ॥ १॥
अगरचे सा॰ है बै॰.ग दुनिया में सती लेकिन ॥
मेरे कहने से कुछ दिनको ठैर जाए तो अच्छा है ॥ २ ॥

३४८

मैनासुन्दरी का जवाब (चाल नम्बर ३४५)

कुमत की चाल से कोई संभल जाए तो अच्छा है ॥
दाव जिसदम लगे उसदम निकल जाए तो अच्छा है ॥ १ ॥
हविस अरमान इन्सां के कभी पूरे नहीं होते ॥
अगर दिलसे खयाल इसका निकल जाए तो अच्छा है ॥ २॥

३४९

श्रीपाल का जवाब ॥ (चाल नम्बर ३४५)

सुना था वज्र होता है निहायत सख्त पत्थर से ॥
मगर उस्से भी बढ़कर गर कोई निकले तो तुम निकले ॥ १॥
हज़ारों मिन्नतें करलीं मगर तुमने नहीं माना ॥
तुम्हें मैं बावफ़ा समझा था तुमतो बेवफ़ा निकले ॥ २ ॥

३५०

मैनासुन्दरी का जवाब ॥ (चाल नम्बर ३५४)

मुझे पत्थर बताओ बेवफ़ा कहलो जो जी चाहे ॥
मैं हूं तय्यार सुनेको तुम्हारा मुद्दआ निकले ॥ १ ॥
मेरी क़िसमत ही टेढ़ी है किसीको दोष क्या दीजे ॥
आप जैसे महरबां भी हो मुझसे बदगुमां निकले ॥ २ ॥
बुरा है हाए इस दुनिया में तिरिया का जनम देखो ॥
कि जिसका हौंसिला निकले तो हम बेकसपे आ निकले ३
मुरादें दिलकी बर आयें तुम्हारा हौंसला निकले ॥
कोई अहले वफ़ा ढूंडो अगर हम बेवफ़ा निकले ॥ ४ ॥

३५१

श्रीपालका मुआफ़ी मांगना ॥

चाल नाटक — (भैरवी) हाय मैं अबला भाग किसने आ कहूं ॥

हाय मैं अबार भूल बेवफ़ा कहा ॥ टेक ॥
प्राणों से प्यारी-अय राजदुलारी-क्षिमा कीजे मेरा कहा ॥
किया मना जो तेरा ध्यान-में मिथ्या पाप तिरा हाय० ॥ १ ॥
तुम मेरा राग-दे हृद निवारा-न बदला जाएगा दिया ॥
कहा यह और भी मेरा मान-चल महलों में जोरा हटा हाय० २

३५२

मैनासुन्दरी का जवाब ॥

चाल नं० [illegible] [illegible]) [illegible] ॥

छोड़ेंगी सारी दुनिया का झगड़ा ॥ सारा सारा-सारा सारा ॥
सारा जी-सारी दुनिया का झगड़ा ॥ टेक ॥

जोग धरूंगी-ध्यान करूंगी ॥
काटूंगी सारे करमों का रगड़ा ॥ छोडूंगी० ॥ १ ॥
महल तजूंगी-सेज तजूंगी ॥
लेउंगी वन पहाड़ोंका बसरा ॥ छोडूंगी० ॥ २ ॥

३५३

श्रीपालका मैनासुन्दरीको समझाना; कि तू बनमें किस तरह दुख सह सकेगी
चाल-(कव्वाली) सखी सावन बहार आई झुलाए जिनका जी चाहे ॥

जोग का भार अय कामन कहो कैसे उठाएगी
जोग खांडेकी धारा है सही तुझसे न जाएगी ॥ १ ॥
तेरा तन फूलसा कोमल सेज फूलोंकी सोती है ॥
कठिन धरती में प्यारी नींद कैसे तुझको आएगी ॥२॥

३५४

मैनासुन्दरी का जवाब ॥ चाल नम्बर (३५३)

जोग का भार जो होगा वह मैं सारा उठालूंगी ॥
अगर खांडेकी धारा है तो समतासे बचालूंगी ॥ १ ॥
नहीं है महलकी ख्वाहिश सेज धरती बनालूंगी ॥
विषय और भोगकी बातोंसे दिल अपना हटालूंगी २॥

३५५

श्रीपालका जवाब ॥ चाल—नम्बर ३५३

सुनो अय गुल बदन नाजुक तुम्हारा चान्द सा मुखड़ा ॥
धूपसे रंग उड़ जाएगा सरदी भी सताएगी ॥ १ ॥
बिगड़ जाएगी सूरत आपकी गरमीकी लूवोंसे
लुगी ऐसी चलेंगी प्यारी तनके पार जाएगी ॥ २ ॥

३५६

मैनासुन्दरी का जवाब ॥ (बात नम्बर ३५१)

बदन मट्टीका पुतला है खयाल इसके बिड़ने का ॥
न कीजे आप में इसको महोब्बतको घटाऊंगी ॥ १ ॥
अरूपी आतमा मेरी घटेगा रंग क्या इसका ॥
तमन्ना रूपकी रंगको दूर दिलसे निकालूंगी ॥ २ ॥

३५७

श्रीपाल का जवाब ॥ बात—नम्बर ३५२

कहीं चमकेगी बिजली नीर मूसलधार बरसेगा ॥
अंधेरी रैन में प्यारी कहो तू क्या बनाएगी ॥ १ ॥
ध्यान धर्में धरो प्यारी भूल जंगलमें मत जाओ ॥
धर्म कामार्थ शिव गृहस्थाश्रमसे क्या न पाएगी ॥२॥

३५८

मैनासुन्दरी का जवाब ॥ (बात नम्बर ३५३)

गरज बिजली पवन और नीरका भी डर नहीं मुझको ॥
अंधेरी रैनमें मैं ध्यान आपमें लगाऊंगी ॥ १ ॥
जो मुक्ती घरमें होजाती बनों में क्यों ऋषी जाते ॥
यह बहकानेकी बातें हैं कि सब घर ही में पाऊंगी ॥२॥

३५९

[illegible]

बनो में सांप और बिच्छू डांस मच्छर सताएंगे
शेर चीते डराएंगे धीर कैसे बंधाएगी ॥ १ ॥

भूक और प्यासकी बाधा तुझे हरदम सताएगी ॥
कठिन संजम वदन कोमल कहो कैसे निभाएगी ॥ २ ॥

३६०

मैनासुन्दरी का जवाब (चाल नम्बर ३५३)

शेर चीते का क्या डर है अमर है आतमा मेरी ॥
मैं भूक और प्यासको सहकर वदन अपना सधालूंगी ॥ १ ॥
आप संजम के धारनेका मुझे क्या डर दिखाते हैं ॥
द्वादश भावना धर धीर मैं अपनी बंधालूंगी ॥ २ ॥

३६१

श्रीपाल का मैनासुन्दरीका हाथ पकड़ना और समझाना ॥
चाल—(नाटक) मेरी मानो जी मानो क्या डर है ॥

मेरी मानो अय प्यारी सुन्दरया काहे करती हो मुझसे झगड़िया
क्या पत्थरका तेरा जिगर है-नहीं होता जो कोई असर है ॥
कहा मान-हट न ठान-कर न प्यारी बस हैरान ॥
मानो अय राज दुलरिया ॥ काहे करती हो० ॥

३६२

मैनासुन्दरीका जवाब ॥ (चाल नंबर ३६१)

छोड़ो छोड़ोजी मेरी अंगुरिया ॥ मत रोको हमारी डगरिया ॥
आग पत्थर जो चाहे बनालो-और जी में हो जो कुछ सुनालो ॥
जाने दो-जाने दो-वन जानेकी आज्ञादो ॥
मानो जी मानो संवरिया ॥ मत रोको०

३६३

श्रीपालका फिर समझाना ॥ (चाल नम्बर ३६२)

मेरी मानो अय प्यारी सुन्दरिया-काहे करती हो मुझसे झगड़या
रनवास बिगड़ जावेगा-भंग राजमें पड़ जावेगा ॥
तुझबिन-सच बता-किसके बांधू पट सजा ॥
कीजे महर की नजराय ॥ काहे करती हो० ॥

३६४

मैनासुन्दरीका जवाब ॥ (चाल नम्बर ३६३)

छोड़ो छोड़ो जी मेरी अंगुरिया ॥ मत रोको हमारी डगरिया ॥
एक मैना अगर हट जागी-क्या रौनक तेरी घट जागी ॥
बात बना-लोभ दिखा-मत मेरे जीको भरमा ॥
तेरे हजारों सुन्दरिया ॥ मत रोको० ॥

३६५

श्रीपाल का नाराज होकर हाथ छोड़ना और राज पाट छोड़कर चलता जाने को तय्यार होना ॥ (चाल नम्बर ३६४)

नहीं मानो जो मेरी सुन्दरिया। चलो छोड़ूं तुम्हारी नगरिया
सब राज छोड़ जाता हूं-रनवास छोड़ जाता हूं ॥
तुझे सब कुछ दिये जाता हूं-अरमान लिये जाता हूं ॥
मेरे दिलको जो कलपावेगी-सुख तू भी नहीं पावेगी ॥
मेरी माता जो सुन पावेगी-वो सुनतेही मर जावेगी

गुणमाला–चित्ररेखा-रैन पियारी मंजूषा ॥
त्यागेंगी प्राण सुन्दरिया। पड़े तेरे पे सबका सबरया। नहीं०

(लौट चलना)

२६६

मैनासुन्दरी का बदलना व श्रीपाल को रोकना व राज बिगड़ने की बात को सोच कर वैराग्य का खयाल छोड़ना व चरणों में गिरना और रोते हुवे मुआफी मांगना ॥

चाल—(देस-ताल कहरवा) वारी जाऊं जी सांवरिया सुन्दर वारलाओ ॥

ठेरो ठेरो जी कोटीभट तुमपर वारना जी ॥ टेक ॥
तन, मन धन सब तुमपर वारूं ॥ सीस तेरे चरणों में डारूं ॥
प्राणपति सुन ऐसी चित नहीं धारना जी ॥ ठेरो०१॥
बस अब मैं नहीं बनको जाऊं ॥ पति सेवा में ध्यान लगाऊं।
सती धरम दरसा के जनम सुधारना जी ॥ ठेरो० ॥२॥
बालम मेरी ओर निहारो ॥ मतना मनमें रोष बिचारो ॥
लाखों विपत उठाई तेरे कारणा जी ॥ ठेरो० ॥ ३ ॥
मैं बिरहन कर्मों की मारी ॥ बारा बरस सहे दुख भारी ॥
दुखयारी कह बैठी, दोष निवारना जी ॥ ठेरो० ॥ ४ ॥

२६७

श्रीपाल का खुश होना और मैनासुन्दरी को चरणोंमसे उठाना और छाती से लगाना और खुश करना और दोनों का महल में आना ॥

चाल—(इन्दरसभा) घर में यहां कौन खुदा के लिये लाया मुझको ॥

सरपे आंखों पे कलेजे पे बिठाऊं तुझको ॥
आ मेरी प्यारी गले में मैं लगाऊं तुझको ॥ १ ॥
तू तो क्षत्राणी है फिर दुक्खों से क्या डरती है ॥

३६९

श्रीपाल और मैनासुन्दरी की बात चीत ॥

चाल—(यमन कल्याण) बढ़ादे नाज की शब और घरखे पीर थोड़ीसी ॥

श्री०—मै आया हूं सती देखो तेरे वादे से भी पहले ॥
शिकायत फिर भी गर कुछ है तो जी खोलकर कहले ।१।

मैना०—शिकायत कर नहीं सकती पिया तेरी ज़बा मेरी ॥
आप सरताज हैं मेरे में चरणोंकी तेरी चेरी ॥ २ ॥

३७०

श्रीपाल का मैनासुन्दरी से हाल पूछना ॥

चाल—(इन्दरसभा) अरे लालदेव इस तरफ जल्द आ ॥

सती तू ज़रा मुझको यह तो बता ॥
मेरे बाद क्या हाल तेरा रहा ॥ १ ॥

रही खुश या ग़ममें कटे रात दिन ॥
सुना मुझको सब हाल अय गुलबदन ॥ २ ॥

३७१

मैनासुन्दरी का हाल बताना ॥

चाल—ठुमरी सिंध भैरवीं) कटत नाहीं सजनी पिया बिन सगरी रैन ॥

गिनत तारे कटती पिया बिन सगरी रैंन ॥
देखो पिंया सच मानो मोरे बैन ॥ गिनत० ॥ टेक ॥
काहु न मेरी धीर बंधाई-हम बिपत उठाई ॥
निश दिन सांवन जिम दोनों झरत नैन ॥ गिनत० ॥ १ ॥
हार शृंगार तन मनमें हटायो-अनजल न सुहायो ॥
हमरे बालम बिन नहीं पड़त चैन ॥ गिनत० ॥ २ ॥

३७२

श्रीपालका मैनासुन्दरीको तसल्ली देना और दोनों का दरबार को आना

चाल—(यमन कल्याण) बहारे बाग़की शय और चमनें चीर थोड़ीसी ॥

हंसो बोलो ज़रा रंजो मदन दिलसे हटा करके ॥
गई बातोंको जानेदे धीर मनमें बंधा करके ॥ १ ॥
मैं था लाचार अय प्यारी ख़ता मेरी मुआफ़ कीजे ॥
नहीं कुछ मैं भी सुख पाया तुझे बिरहन बना करके ॥२॥
मुसीबत जो सही मैंने सती परदेश में जाकर ॥
सुनाऊंगा तुझे सारी सरे दरबार जाकरके ॥ ३ ॥
मेरी माताको लेकर अब सती दरबार को चलिये ॥
नज़ारा अपनी क़िसमतका ज़रा देखो तो आकरके॥४॥

(दरबार को जाना और परदा गिरना)

सीन ५०

श्रीपालके लश्कर व दरबारका परदा

३७३

श्रीपालके लश्करमें दरबारका नज़र आना और परियों का मैनासुन्दरी के आनेकी मुबारकबाद गाना ॥

चाल—(नाटक) [illegible] ॥

आज सियानी मैना रानी धर्म निशानी आती है ॥
सुन्दर सूरत मोहनी मूरत सब मन मानी आती है ।१॥
सुन जिनबानी निश्चय ठानी सब बिधि जानी, आती है ॥

परम सियानी है लासानी अमृत बानी आती है ॥ २ ॥
कोटी भटकी है महरानी बन इन्द्राणी आती है ॥
तनमन धन सब करदो अर्पण सब सुखदानी आती है ॥ ३ ॥

३७४

श्रीपालका मैनासुन्दरी व माता के साथ दरबार में पहोंचना और सब दरबारियोंका खड़ा होकर विनय करना और तीनों का सिंहासन पर बैठना (माताका दाईं तरफ़ व मैनासुन्दरी का बाईं तरफ़ व श्रीपालका बीचमें) और श्रीपालका सब राणियों को बुलाना (वार्तालाप)

श्री०—अरे दरबान जाओ हमारी सब राणियों को सुनादो कि दरबारमें आएं और हमारी माता और मैनासुन्दरी को प्रणाम करें ॥

दर०—बहुत अच्छा महाराज (दरबानका चला जाना)

श्री०—अय माता देखिये यह दाईं तरफ़ हमारे मंत्री साहिब हैं और बाईं तरफ़ सेनापति साहिब हैं और यह सब दरबारी लोग हैं ॥

३७५

सेन-दरबान और सब राणियोंका बारी बारी आना और श्रीपालका अपनी माता व मैनासुन्दरीको सबका नाम सुनाना और सब राणियोंका माता और मैनासुन्दरीको प्रणाम करके सिंहासनके नीचे कुर्सी पर बैठ जाना ।

३७६

दरबानका आना और अर्ज़ करना (वार्तालाप)

महाराज राणीजी नज़राना लाती हैं ।

३७७

रैनमंजूषाका आना और श्रीपालका हाल बताना ॥ (वार्तालाप)

हे माता मैं आपसे रुखसत होकर एक वनमें पहौंचा जहां एक पुरुषका मंत्र सिद्ध करके आगे चला ॥ रास्ते में अपने पांवों से मैंने धवल सेठका जहाज़ चलाया उसने मुझको अपना धर्मका बेटा बनाया ॥ जहाज़ पर सवार होकर धवल सेठके साथ आगे बढ़ा समुद्रमें एक लाख चोरों को बांधा ॥ हंसद्वीप पहौंचकर सहस्रकूट चैत्यालय को खोलकर दिखाया और इस सती रैनमंजूषा को ब्याहा ॥

(रैनमंजूषाका सास और मैनासुन्दरीको प्रणामकरके बैठजाना)

३७८

गुणमालाका आना और श्रीपालका हाल बताना ॥

रैनमंजूषा को साथ ले आगे चला रास्ते में एक दिन धवल सेठ रैनमंजूषा पे आशक्त हुवा उसने धोका देकर मुझको समुद्र में गिराया ॥ चक्रेश्वरी जिनदेवी ने आकर रैनमंजूषा के शील को बचाया ॥ हे माता मैं आपके चरणों की कृपा और अपनी भुजाओं के बलसे समुद्र को चीर कर कुमकुमद्वीपमें आया और इस राजकुमारी गुणमाला को ब्याहा ॥ (गुणमाला का प्रणाम करके बैठ जाना) एक दिन धवल सेठ और रैनमंजूषा का जहाज़ कुमकुमद्वीप में आया और धवल सेठने मुझको भांडका लड़का कहकर राजासे शूलीका हुक्म दिलाया-गुणमाला उस मुसीबत में मेरे पास

आई रैनमंजूषा ने मेरी असलीयत बताई ॥ राजा खुद दिलमें शरमिन्दा हुआ और बजाए मेरे धवल सेठको शूलीका हुक्म दिया। मैंने शिफारिश करके धवल सेठको रिहा कराया मगर वह खुद अपने फेलों से शरमिन्दा होकर मुल्के अदम को रवाना हुआ ॥

३७९

चित्ररेखा का आना और श्रीपालका हाल बताना।

हे माता यह राणी चित्ररेखा कुन्दनपुर के राजा की राज-दुलारी है और मेरी प्राण प्यारी है (चित्ररेखाका प्रणाम करके बैठ जाना)

३८०

विलासमती का आना और श्रीपालका हाल बताना॥

यह कंचनपुर के राजा वज्रसेन की विलासमती राजकुमारी है जो सबको आनन्दकारी है ॥ हे माता इस तरहसे कुछ दिन कुमकुमद्वीपमें राज किया और आपकी कृपासे सब प्रकार सुख भोगा (विलासमती का प्रणाम करके बैठ जाना)

३८१

श्रीपालका सब राणियों को मैनासुन्दरीका हाल बताना और उसको पटराणी बनानेकी मंशा जाहिर करना ॥ [वार्तालाप]

अय मेरी प्यारी राणियों यह वही सती मैनासुन्दरी है जिसने मेरे कुष्टको हटाया मुझको मरनेसे बचाया। पिता का जुल्म सहती हुई घरबार से मुंह मोड़ा मगर अपने समयक्त और

कर्मके निश्चयको न छोड़ा ॥ मुसीबतमें पतिका साथ देकर पतिव्रता धर्मको दिखाया जैन धर्मका करशमा दिखा कर सतियों में नाम पाया ॥

शेर—गर इस सतीका मेरी तरफ़ ध्यान न होता ॥
तो आज इस इजलास का निशान न होता ॥
अहसान का इसके हमारे सरपे भार है ॥
इसपे हमारा जानोमाल सब निसार है ॥

मैं चाहता हूं आज इस सतीको महाराणी का ताज पहनाऊं और मेरे रनवासमें इसको अपनी पटराणी बनाऊं ॥

३८२

सब राणियों का मैनासुन्दरी का पटराणी मानना और नमस्कार करना और फूल बरसाना ॥

चाल (नाटक) गाओरी सब मिलके बधाई ॥

आवोरि सब मिलके सजनियां ॥
मैनासुन्दरीको शीस नवाओ ॥ हँस हँसके फूल बरसाओ री ॥
हरषाओ री-जश गावो री ॥ सब मिलके० ॥ टेर ॥

सतियों में सार है-महिमा अपार है ॥
सबका विचार है मैना पटनार हो ॥ १ ॥
सबकी सरताज है-सतियों की लाज है ॥
शुभदिन यह आजहै-सबको सुनकार हो ॥ २ ॥
जोबन नवीन है-जिन धर्म-लीन है ॥
क्रिया प्रवीन है-जय जय जयकार हो ॥ आवो०॥३॥

३८३

मैनासुन्दरी का जवाब

चाल—कृतल मत करना मुझे तेगों नजर से देखना

कौन कहता है मुझे मैं पटके लायक नार हूं ॥
  मैं तुम्हारी खाके पा और सबकी तावेदार हूं ॥ १ ॥
यह महाराजों कि कन्या इस जगह मौजूद हैं ॥
  मैं तो एक छोटेसे राजा की सुता नाकार हूं ॥ २ ॥
मैं जो कुछ होती तो रुसवाई मेरी होती नहीं ॥
  मत मुझे नादिम करो किसमतसे मैं लाचार हूं ॥३ ॥
याद करलो बापने कैसी मेरी इज्जत करी ॥
  ताजके लायक नहीं ना राज की हक्कदार हूं ॥ ४ ॥

३८४

श्रीपाल का जवाब देना और मैनासुन्दरी को पटरानी का मुकुट पहनाना ॥

चाल—कृतल मत करना मुझे तेगों नजर से देखना ॥

प्राण प्यारी और हमारी मेहरबां तूही तो है ॥
  बानी इस इजलासकी हां बेगमां तूही तो है ॥ १ ॥
कुष्ट मेरा दूर करता कौन था किसकी मजाल ॥
  कुष्ट हरता जैन पक्षकी मंत्रस्वां तूही तो है ॥ २ ॥
तू सती जिन धर्म की महिमा दिखाई आपने ।
  इम हमारे राजकी नामोनिशां तूही तो है ॥ ३ ॥
ताज पहनाताहूं तुझको आज पटराणीका मैं (ताज पहनाना)
  मेरे सब रणवासकी रौनकदिनां तूही तो है ॥ ४ ॥

३८५

प्यारियों का मुबारकबाद गाना।
चाल (नाटक) मुबारकबादी गावो शादी शाहेज़ादी की

बोलो प्यारी जय जयकारी अब पटरानी की ॥
यह मैनारानीकी है ॥ क्या प्यारी प्यारी राजदुलारी–
धर्म निशानी की ॥ बोलो० ॥
राजघरामें-आज सभामें-चीर बंधा पटरानीका ॥
कोटीभट की है मनमानी ॥ कलियां-खिलियां-
खुशियां मचियां ॥ सब सुखदानीकी ॥ बोलो० ॥

३८६

मैनासुन्दरीका अर्ज़ करना (शेर)

अय महाराज एक अरमान बाक़ी रह गया।
हो अगर मंजूर तो खोलूं जबान अपनी जरा ॥

३८७

श्रीपाल का जबाब (शेर)

आपकी खातिर मुझे मंजूर है फ़रमाइये ॥
कौनसा अरमान बाक़ी रहगया बतलाइये ॥

३८८

मैनासुन्दरी का जबाब ॥ चाल—करम मत करना मुझे तेरी नज़रसे देखना ॥

एक दफ़ा मेरे पिता को यहां बुलाना चाहिये ॥
और उन्हें जिन धर्मका निश्चय कराना चाहिये ॥१॥
था घमंड उनको बहुत अपनी बड़ी तदबीर का ॥
उनके झूटे मानको सरसे गिराना चाहिये ॥२॥

वह जो कहते थे कि देखेंगे तेरी तक़दीर को ॥
अब मेरी तक़दीर का जलवा दिखाना चाहिये ॥ ३ ॥

३८९

श्रीपाल का मंजूर करना (शेर)

आप जो चाहें वही करना मुझे मंजूर है ॥
हर तरह प्यारी तेरी खातिर मुझे मंजूर है ॥

३९०

श्रीपालका दूत भेजना ॥ (वार्तालाप)

अय दूत जाओ ! राजा पहुपालको हमारी तरफ़ से दरबार में आने के लिये समाचार दो ॥

३९१

दूत-(वार्तालाप) बहुत अच्छा महाराजकी जो आज्ञा हो ॥
(प्रणाम करके रवाना होना)

३९२

श्रीपाल और मैनासुन्दरीका बात चीत करना (वार्तालाप

श्री०-हे सती मैनासुन्दरी देखो राजा पहुपाल आपके पिता वह हमारे धर्म के पिता हैं हमको उनसे विनय पूर्वक मिलना उचित है ॥

मैना०-महाराज जैसी आपकी आज्ञा होगी वैसाही होगा ॥

३९३

दूत का आना और राजा श्रीपाल से अर्ज करना ॥ वार्तालाप)

(प्रणाम करके) हे महाराज राजा पहुपाल तशरीफ़ लाते हैं ॥

३९४

राजा पहुपालका तसरीफ़ लाना और श्रीपाल व मैनासुन्दरीका खड़े होकर विनय पूर्वक मिलना ॥ राजा पहुपालका दोनोंको न पहिचानना और हैरत से देखना और मैनासुन्दरी का पूछना ॥

चाल—क़ज़ा मत करना मुझे तेग़ो तबर से देखना ॥

आंख उठा कर देखिये यह कौन है मैं कौन हूं।
सोच कर फ़रमाइये तुम कौन हो मैं कौन हूं ॥ १ ॥
हाल क्या है आपका और किस लिये हैरत में हो ॥
होश कर देखो ज़रा यह कौन है मैं कौन हूं ॥ २ ॥
कौन यह महाराज हैं और किसका यह दरबार है ॥
ग़ौर करके मुझको तो बतलाइये मैं कौन हूं ॥ ३ ॥
हुक्म किसका तुमने माना शर्ण किसके आए तुम ॥
आपने देखा भी कुछ तुम कौन हो मैं कौन हूं ॥ ४ ॥

३९५

राजा पहुपाल का जवाब ॥ चाल—मेरे लालदेव इस तरफ़ जल्द आ ॥

कहूं क्या कि हैरत में आया हूं मैं ॥
मुसीबत का इसदम सताया हूं मैं ॥ १ ॥
परेशानी दिलपर मेरे छा गई ॥
मेरी अक्ल एक दमसे चकरा गई ॥ २ ॥
चकित हो गया देख परतापको ॥
नहीं मैंने पहिचाना है आपको ॥ ३ ॥
नहीं ताब मुझको जो कुछ भी कहूं ॥
न ताक़त कि सर अपना ऊपर करूं ॥ ४ ॥

३९६

मैनासुन्दरी का अपने पिता के चरणों में गिरना और कहना

चाल—मैं वही हूं प्यारी शकुन्तला तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥

मैं वही हूं मैना सितमज़दा तुम्हे याद हो कि न याद हो ॥
जिसे तुमने घरसे जुदा किया तुम्हे याद हो कि न याद हो१॥
मेरा मान तुमने गिरा दिया मुझे जाके कुष्टीसे व्याह दिया ॥
नहीं रहम दिलमें ज़रा किया तुम्हें याद हो कि न याद हो २
मेरी माताने भी अरज़ करी पर एक तुमने नहीं सुनी ॥
वह तो रो रही थी खड़ी खड़ी तुम्हें याद हो कि न याद हो॥३॥
नहीं माना कर्मको आपने नहीं जाना धर्मको आपने ॥
किया मान यत्नका आपने तुम्हें याद हो कि न यादहो ॥४॥
मेरे गुरुको तुमने बुरा कहा मैंने सुनके मनमें वह दुख सहा ॥
जो ज़ुबांसे जाए नहीं कहा तुम्हें याद हो कि न यादहो ॥५॥
अजी तुमने मेरेसे वह किया जो कभी किसी ने नहीं सुना ॥
कुछ खयाल मेरा नहीं किया तुम्हे याद हो कि न यादहो ॥६॥
मुझे सोप जिसको गएथे तुम यह वही है देखो तो पुर अलम॥
जाके कुष्ट जारी था दम बदम तुम्हें याद हो कि न यादहो ॥७॥
कहो अब भी आया तुम्हें यकीं कभी कर्म टारे टरे नहीं ॥
मैंने आपसे थी यही कही तुम्हें याद हो कि न यादहो ॥८॥
अब जैनधर्मकी लो शरण कभी बोलो मुहसे न वह सखुन ॥
जो सुनाए थे मुझे दुर्वचन तुम्हें यादहो कि न यादहो ॥९॥

३९७

राजा पहुपालका मैनासुन्दरी और श्रीपालको गले से लगाना और मैनासुन्दरीसे मुआफी मांगना और मैनासुन्दरी की तारीफ़ करना और जैन धर्म पर निश्चय लाना और कर्म फ़िलासफ़ी का क़ायल होना ॥

चाल-घर से यहां कौन खुदा के लिये लाया मुझको ॥

सरपे आंखोंपे कलेजेपे बिठाऊं तुझको ॥
आ मेरी बेटी गलेसे मैं लगाऊं तुझको ॥ टेक ॥
आप शरमिन्दाहूं मैं कहना न तेरा माना ॥
होके नादां तुझे तकलीफ़ में नाहक डाला ॥
मुझको अफ़सोस है पहले न तेरा गुण जाना ॥
जिदमें आ करके यूंही कर्मका झगड़ा ठाना ॥
होगया अबतो सती कर्मका निश्चय मुझको ॥
जैन बाणीका व जिन धर्मका निश्चय मुझको ॥ १ ॥
भूल जो मुझसे हुई बेटी मुझे मुवाफ़ करो ॥
सब गिला दूर करो आपका दिल साफ करो ॥
पिछली बातों को नहीं बेटी कभी नहीं याद करो ॥
अब दया दिलमें धरो और यह दिल शादकरो ॥
प्यारी अंग देशका हो राज मुबारक तुझको ॥
और पटराणीका यह ताज मुबारक तुझको ॥ २ ॥
मुझे तदबीर का दावा था यह बातिल निकला ॥
प्यारी तक़दीरका निश्चय तेरा कामिल निकला ॥
कुष्टी समझा था जिसे वह शहे आदिल निकला ॥
बादलों में था छुपा यह माह कामिल निकला ॥

जो कहा था तूने सत करके दिखाया मुझको ॥
सरे दरवार सती नीचा दिखाया मुझको ॥ ३ ॥
अय मेरी वेटी शान वढ़ाने वाली ॥
तू श्रीपालका है कुष्ट हटाने वाली ॥
तू है जिन धर्म की महिमा को दिखानें वाली ॥
और सती धर्मको दिखलाके वताने वाली ॥
अपने सत शीलका है जलवा दिखलाया मुझको ॥
उम्रभर के लिये मननून वनाया मुझको ॥ ४ ॥
वे शुवा इस सारे इजलासकी वानी तू है ॥
अय मेरी लख्ते जिगर धर्म निशानी तू है ॥
लाज तू कुलकी मेरी आखों की पुतली तू है ॥
तू ध्वजा धर्म की और शीलकी पुतली तू है ॥
तूने जिन धर्मका हामी है वनाया मुझको ॥
तूने ही कर्मका है निश्चय कराया मुझको ॥ ५ ॥

३९८

मैनासुन्दरी का हाथ जोड़कर अपने पिता से मुआफ़ी मांगना ॥
चाल—सोरठिया प्यारी वोलीजो भरने दो जल नीर ॥

अव माफ़ पिता कर दीजे जी वेटीकी तक़सीर ॥ टेक ॥
मैं कहा जो वालापन में ॥ तुम मतना रखियो मनमें ॥
मैं सीस धरूं चर्णन में जी ॥ वेटी की० ॥१॥
था कुछ नहीं दोष तुम्हारा ॥ यूंही था करम हमारा ॥
करमन वश सव संसारा जी वेटी की० ॥ २ ॥

नहीं करते जो तुम मन मानी ॥ किम होती मैं पटरानी ॥
इस कोटीभटकी रानीजी ॥ बेटीकी० ॥ ३ ॥

३९९

राजा पहुपाल का मैनासुन्दरी से उज्जैन जाने के लिये कहना ॥
चाल—(इन्दरसभा) अरे लालदेव इस तरफ जल्द आ ॥

सुनो बेटी मुझको नहीं कुछ खयाल ॥
मैं हूं अपनी करनी पे नादिम कमाल ॥ १ ॥
जो कुछ रंज है दिलसे तू दूर कर ॥
मेरा एक कहना तू मंजूर कर ॥ २ ॥
गमन यहां से उज्जैन को कीजिये ॥
दरश अपनी माताको भी दीजिये ॥
वह गममें तेरे बेटी बीमार है ॥
तेरी यादमें सारा दरबार है ॥ ४ ॥

४००

मैनासुन्दरी का उज्जैन जाना मंजूर करना
चाल-(क़व्वाली) सखी सावन बहार आई झुलाए जिसका जी चाहे ॥

दिलो जांसे पिताजीका हुक्म मंजूर है मुझको ॥
नहीं जो मानता गरचे वले मंजूर है मुझको ॥ १ ॥
आप मेरे पिता हैं मैं तेरी नाकार बेटी हूं ॥
मुझे जो चाहो सो कहलो वही मंजूर है मुझको २ ॥
मैं हूं नादिम मेरे कारण हुई चरचा तेरी जगमें ॥
जो जी चाहे सोही कीजे बदिल मंजूर है मुझको ॥ ३ ॥

सज़ावारे सज़ा गर हूं तो देदीजे सज़ा मुझको ॥
सरे तसलीम ख़म है हर सज़ा मंजूर है मुझको ॥४॥
साथ श्रीपाल को लेकर तेरे दरबार आऊंगी ॥
हुकम कुछ और हो फ़रमाइये मंजूर है मुझको ॥ ५ ॥
(परदा गिरना)

सीन ५१

उज्जैन के राजा पहुपाल के दरबार का परदा

४०१
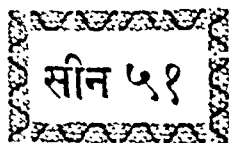
नोट—राजा पहुपाल ने मैनासुन्दरी से रुखसत होकर और उज्जैन में आकर श्रीपाल व मैनासुन्दरी की आमद में दरबार किया ॥

४०२

राजा पहुपाल व रानी निपुणसुन्दरी व सुरसुन्दरी, व सब दरबारियोंका दरबार में बैठे हुवे नज़र आना और दरबान का आकर खबर देना ॥

(वार्तालाप)

महाराज के चर्णो में प्रणाम, आज महाराज कोटीभट श्रीपाल मए महासती मैनासुन्दरी के दरबार में तशरीफ़ लाते हैं ॥

४०३

दरबारियोंका मुबारकबाद कहना व गाना—(नाटक) रानियों का और रिआया
मैनासुन्दरी का धनवाद गाना ॥
सबको सुका सुका ॥ मैना० ॥ टेक ॥

आती है वह सती श्रीमण ॥ जिसको दिया—कुष्टी से ब्याह
जिसके दुखका नहीं था ठिकाना ॥ सरको० ॥ १ ॥
यज्ञ रचाकर ध्यान लगाकर ॥ छिनमें दिया-कुष्ट मिटा ॥
बना जैसे कि इन्द्र समाना ॥ सरको० ॥ २ ॥
उसके लिये दरबार लगा है ॥ माता पिता—छोटा बड़ा ॥
सारे गाते हैं गुण उसके नाना ॥ सरको० ॥ ३ ॥

४०४

श्रीपाल व मैनासुन्दरी का मय गुणमाला व रैनमंजूषा व सेनापती के दरबार में आना ॥ सब दरबारियों का जय जयकार करना व फूल बरसाना ॥ श्रीपाल व मैनासुन्दरी व रानियों का निपुणसुन्दरी को प्रणाम करना ॥ निपुणसुन्दरी का सबको गले लगाना ॥ सुरसुन्दरी (मैनासुन्दरी की बड़ी बहन) का मैनासुन्दरी का गले लगाना ॥ राजा का श्रीपाल व मैनासुन्दरी को व निपुणसुन्दरी को सिंहासन पर बिठाना और सब रानियों का व सुरसुन्दरी का नीचे कुरसियों पर बैठाना ॥ और परियों का धर्म की और मैनासुन्दरी की महिमा वर्णन करना॥

चाल—(ग़ज़ल) क़त्ल मत करना मुझे तेग़ो तबर से देखना ॥

सत धरम जिनराज का है इसकी महिमा देखलो ॥
देखलो मैनासती, करमों की महिमा देखलो ॥ १ ॥
देखलो श्रीपाल को जो कुष्ट से लाचार था ॥
जिन धरम सिद्धचक्रकी पूजा की महिमा देखलो ॥२॥
मैनासुन्दर है वही कुष्टी से जिसको ब्याह दिया ॥
शीलकी महिमा सती मैना की महिमा देखलो ॥ ३ ॥
सेठजीने रैनमंजूषा को देखा बद नज़र ॥
वह पड़ा है नर्क में यहां इसकी महिमा देखलो ॥ ४ ॥

धर्म ही है सार जगमें धर्म का निश्चय करो ॥
धर्मका परताप देखो इसकी महिमा देखलो ॥ ५ ॥

४०५

राजा पहुपाल का मैनासुन्दरी से धर्म उपदेश के लिये प्रार्थना करना ॥ (वार्तालाप ॥

अय बेटी मैनासुन्दरी सती श्रोमणी मैंने झूटा तदवीर का दावा किया और तुझको दुख दिया ॥ अब मैं अपनी पिछली बात पर पिचताता हूं और तेरी कर्म मीमानसा पर निश्चय लाता हूं ॥ अय मेरी आखों की पुतली और मेरे कुलको उज्जल करनेवाली कुछ धर्म का उपदेश सुनाओ और मुझको धर्म मार्ग में लगाओ ।

४०६

मैनासुन्दरी का धर्म उपदेश देना और [illegible] और धर्म का और कामों का निश्चय कराना ॥

दोहा—सकलज्ञेय ज्ञायक सदा हित उपदेशक सार ॥
वीतराग जिन राजको नमों सो वारम वार ॥

चौपाई १६ मात्र (रामायण)

जगत विषे यह जीव अपारा । दुखसे डरें चहें सुख सारा ॥
पर नहीं काम करें सुखकारा । कर विषय भोग सहें दुखभारा १
पी मद मोह भ्रमे जग माहीं । निज सरूप कभू चेतन नांही ।
धारें सत्य तत्व मन नांहीं । कर मिथ्यात कुगत गत जांहीं २॥
जैन धर्म जगमें सुखकारी । अन्य सभी जानों दुखकारी ।

है हितकारी—दुख पर हारी—है सुखकारी सुनकर देख ॥
शंकटमोचान—तिहुंजगलोचन—रहित विदूपन-हितकर देख ॥
है तू बशर—परमेश्वर होजा—नेक हिये में धरकर देख ॥
हिरदे में जो धरे—जग से सुगम तिरे ॥
सब दुखको पर हरे—पशु नर्क गत टरे ॥
पट मत में सार है—महिमा अपार है ॥
जय जय जयकार है—तनमन निसार है ॥ पढ़कर देख० ॥

सीन ५२
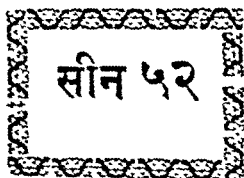
श्रीपाल के दरबारका परदा

४०८

श्रीपाल व मैनासुन्दरी उज्जैन से विदा होकर अपने दरबार में आए ॥
एक दिन श्रीपाल का अपने देश चम्पापुर को याद करना और मैनासुन्दरी से चलने का इरादा ज़ाहिर करना ॥

चाल—सखी सावन बहार आई झुलाय जिसका जी चाहे ॥

मेरा चम्पा नगर प्यारा मुझे अब याद आता है ॥
जनम भूमी मेरी परजा मेरा घर याद आता है ॥१॥
अगरचे मिलगई हशमत बना राजों का मैं राजा ॥
मगर मुझको वतन मेरा अभी तक याद आताहै ॥ २ ॥
भला किस काम का वह सुत जो चक्री भी हुवा तो क्या ॥
नहीं भोगा पिता का राज सो वह याद आताहै॥ ३ ॥

प्रभू कीजो मदद मेरी हरो चिन्ता मेरे दिलकी ॥
मुझे हरदम वतन चम्पा पियारा याद आता है ॥ ४ ॥
वतन के सामने सब हैंच राज और पाट दुनिया का ॥
है सच हुब्बुल वतन अपना सभी को याद आता है ॥५
मेरी प्यारी सती मैना कहो क्या आपकी मंशा ॥
मेरा लगता नहीं है जी यहां, घर याद आताहै ॥ ६ ॥

४०९

मैनासुन्दरी का जवाब ॥ (शेर)

मुनासिब और मुबारक बात यह तुमने विचारी है ॥
वही मंशा हमारी है जो कुछ मंशा तुम्हारी है ॥

४१०

श्रीपालका रवानगी का हुक्म देना ॥ (वार्तालाप

श्री०-मंत्री साहिब हमारा चम्पापुर जाने का मंशा है
फौरन चलने का इन्तज़ाम किया जाए ॥
मंत्री-बहुत अच्छा महाराज फौरन हुक्मकी तामील होगी ॥
दरबान-(प्रणाम करके) महाराज सैनापती साहिब
तशरीफ लाते हैं ॥
सैनापती-(दरबार को सलामी देना)
श्री०-सैनापती साहिब हमारा चम्पापुर जानेका इरादा है ॥
फौरन तमाम लशकर तय्यार हो जाए और चम्पापुर
की तरफ रवाना किया जाए।
सैनापती-बहुत अच्छा सरकार आजही कूचका हुक्म देताहूं

सीन ५३

श्रीपाल की सैनाका परदा

४११

श्रीपालका सैना सहित चम्पापुर के क़रीब पहोंचना और मंत्री से बातचीत करना ॥

श्री०—अय मंत्री चम्पापुर नगर क़रीब है तमाम सैना को तय्यार करो और नगर में प्रवेश करो ॥

मंत्री—हे महाराज ज़रा गौर फरमाइये कि महाराज कोटी भट श्रीवीरदमन आपके चचा अभी तक आपको लेने को नहीं आए हैं इससे मालूम होता है कि उनको कुछ ग़रूर है और आपको उलटा राज देने में उजर है मुनासिब है कि पहिले एक दूत को भेजा जाए ताकि जो असलीयत है वह खुल जाए

श्री०—बेशक आपकी राय माकूल है (दूत की तरफ देख कर) अय दूत फौरन महाराज वीरदमन के पास जावो और हमारी तरफ से निवेदन करो कि वे हम से आकर मिलें और हमारा राज हमको दें ॥

दूत—बहुत अच्छा महाराज जो महाराज की आज्ञा हो ॥

दूत का चला जाना

सीन ५४

वीरदमनके दरवार का परदा

४१२

दूतका वीरदमनके दरबार में पहोंचना और संदेशा देना ॥ (वार्तालाप)

अय महाराज वीरदमन ताजवर—अय बहादुर कोटी-नामवर, अय महाराज अरीदमन की दाहनी भुजा-अय महाराजा श्रीपाल के बहादुर चचा, आज महाराजा अधिपति कोटीभट श्रीपाल सामान चक्रवर्ती अपने दल बल के साथ तशरीफ लाए हैं चम्पापुर के करीब पड़ाव किया है और आपके लिये एक संदेशा दिया है ॥

४१३

वीरदमन का जवाब ॥ (वार्तालाप)

अय दूत कहिये श्रीपालका क्या हाल है और क्या खयाल है। किसलिये इधर का इरादा कियाहै और क्या संदेशा दिया है ॥

४१४

दूतका जवाब ॥

हे नाथ महाराजा श्रीपाल हम तमाम भूमंडल के शहंशाह आलीशान हैं-दुष्ट और मगरूर राजाओं के लिये मानो कालके समान हैं ॥ पहले जो उनके तनमें रोग था वह सब दूर हुवा तमाम बदन उनके पुरनूर हुवा ॥ हजारों राजाओं को जीत

उनकी राज कुमारियों को ब्याह कर लाए हैं, चतुरंग सैना को साथ लेकर अपने देश में आए हैं ॥

शेर—कुमकुम नगर के राव को भी चेर किया है ॥
कब्जे में हंसद्वीप और लंका को लिया है ॥ १ ॥
सोरठ का देश मरहठ और गुजरात को लिया ॥
पाटन ईरान चीन को है ज़ेरे पा किया ॥ २ ॥
जीता है जा उज्जैन को काबुल कंधार को ॥
फतह किया है उसने सारी मारवाड़ को ॥ ३ ॥
नरपार देश पांडु में कब्ज़ा अपना जमाया ॥
कुछ तुर्क और जापान को आधीन बनाया ॥४॥
सब रूम शाम रूस भी कब्जे में आगए ॥
इकबाल है कि आपसे आ सर झुका गए ॥५॥

हे राजन उस बरबीर कोटीभट श्रीपाल ने अनेक राजाओं को अपने चरणों में गिराया है और उनकी राज कन्याओं को अपनी राणी बनाया है ॥

शेर—गरचे वह श्रीपाल चक्रवर्त है नहीं ॥
पर बलमें दलमें आज वह चक्री से कम नहीं॥१॥
जय नाथ श्रीपाल ने यह बात कही है ॥
ख़िदमत में दस्तबस्ता यही अर्ज करी है ॥ २ ॥
आ प्यार महोब्बत से मुलाक़ात कीजिये ॥
कुछ और खयाल अपने नहीं दिलमें कीजिये ॥३॥
तुम बाप के समान हो मैं पुत्र तुम्हारा ॥
लाज़िम है तुम्हे देदो हमें राज हमारा ॥ ४ ॥

४१५

मोरध्वज का जवाब ॥

भार हत तू बड़ा गुस्ताख है जो हमारे सामने ऐसे सख्त कलाम कहता है ॥ तेरा राजा अभी तक बच्चा अकल का कच्चा है जो राज के लिये हमसे दरख्वास्त करता है ॥

शेर—अरे मूरख कहीं यह राज भी मांगे से मिलता है ॥
बिना शमशीर चमकाए नहीं हरगिज़ यह मिलता है ॥१॥
राज के वास्ते पुत्र को पिता को मार देते हैं ॥
या[illegible] नारको सुतको सभी को वार देते हैं ॥ २ ॥
जान अपनी भी दे देते हैं एक इस राज की खातिर ॥
बता मैं किस तरह दे दूं राज उसकी अर्ज सुनकर ॥ ३ ॥

और दूत तू भी बड़ा मूरख है जो ऐसे नादान राजा की दरख्वास्त को लेकर हमारे सामने आया ॥ देखो यह राज और सल्तनत का मुआमला बड़ा टेढ़ा होता है-इस में बाप बेटे का भी भरोसा नहीं होता है ॥

शेर—किया नहीं मन्द्रकी ने भी टाला ॥
राज के वास्ते भाई निकाला ॥ १ ॥
बिभीषण ने राम की तर्फ आके ॥
कत्ल करवा दिया रावण का जाके ॥ २ ॥
कौरव पांडु भिड़े इसही की खातिर ॥
[illegible] आखिर में लड़े इसही की खातिर ॥ ३ ॥

जाओ जाओ उस भीपाल से कहदो कि अगर कुछ जान है तो मैदान में आए-अपनी भुजाओं का बल दिखलाए-

सामने आकर शमशीर चमकाए-अपने राज का दावा जित लाए ॥ जबतक दोनों तरफ़ से संग्राम न होगा-हरगिज़ हरगिज़ राज का फ़ैसला न होगा ॥

४१६

दूत का जवाब ॥ (चाल—सवय्या)

बाल न जान अरे नृपको, प्रचंड अखंड त्रंड बड़े हैं ॥
फ़ौज प्यादे इते हैं संगमें, जैसे टिड्डी के दल कहीं आन पड़ेहैं१
या सम और न राज कोई, महि मंडल के नृप पाए पड़े हैं ॥
देश नगर सब उजाड़ दिये, वाके जो नर मूरख आन अड़ेहैं॥२
(दोहा)-याते राजा छोड़ कर, निज दल बलका मान ॥
जल्दी यहां से चालिये, धरो सीस पर आन ॥
शैर-राज श्रीपाल को दीजे कि यह उसकी अमानत है ॥
तेरा इंकार का करना अमानत में खयानत है ॥

४१७

धौलदमनका कोप करना और जवाब देना ॥

अरे गंवार दूत कहां वह श्रीपाल कलका लड़का नातजरबे कार बुद्धि हीन और कहां में कोटीभट युद्ध विद्या में प्रवीण ॥
शैर--हमारे देख बलको इन्द्र भी तो कांप जाते हैं ॥
हज़ारों देवता आकर चरण में सर झुकाते हैं ॥ १ ॥
मैं जिमदम म्यान से तलवार अपनी को निकालूंगा ॥
एकही वारमें उसको मार धरती में डालूंगा ॥ २ ॥
हमारे सामने श्रीपाल हरगिज़ हो नहीं सकता ॥
अक़लमें दलमें और बलमें बराबर हो नहीं सकता ॥ ३

४१८

दूतका जवाब (शेर

सब राजपाट छोड़दे मतकर गुमान तू ॥
यह मुफ्तकी लड़ाई बस हमसे न ठान तू ॥ १ ॥
कबतक लड़ेगा देख तू फौजे अजीम से ॥
यह जुरअतें बईद हैं मर्दे फ़हीमसे ॥ २ ॥
गर तू है कोटीभट तो हां वह भी है कोटीभट ॥
बल्के है वह तो देख कोटीभटका कोटीभट ३ ॥
यह बात जो सुन पाए तेरा सर क़लम करे ॥
हस्ती तेरी रवानए मुल्के अदम करे ॥ ४ ॥
लाज़िम है तुझको जल्दी से चल करके प्यार कर ॥
तकरार छोड़ ताबेदारी अख़्तियार कर ॥ ५ ॥

४१९

वीरदमन का जवाब ॥

अय नाबकार नाहंजार—

शेर—चाहता हूं काट सर तेरा जमीं में डार दूं ॥
क्या करूं में राजनीतिसे मगर लाचार हूं ॥ १ ॥
मेरे दरबार में श्रीपालकी तारीफ़ करता है ॥
हमारे शान शौकतकी तू यों तौहीन करता है ॥ २ ॥
मरा जब बाप उसका मैंनेही हाथों से पाला था ॥
हुवा जब कुष्ट तब मैंनेही उसे घरसे निकाला था ॥५॥
आज क्या हमसे वह यों हमसरी करने को आता है ॥
जा कहदे क्यों हमारे हाथसे मरने को आता है ॥ ४ ॥

४२०

दूत का जवाब ॥

हे नाथ मान न कीजे-

शेर-मान करना चाहये हरगिज़ नहीं इन्सान को ॥

तीरको देखा है हमने सरके बल गिरता हुवा ॥ १ ॥

मान सूरज करता है आकाश में चलते हुए ॥

शामको देखा उसीको आड़में छुपते हुए ॥ २ ॥

वातजो मानी नहीं रावणने अपने मानसे ॥

देखलो मारा गया वह एक लखनके वानसे ॥ ३ ॥

जव जरासिंधगयको कुछ मान दिलमें आगया ॥

कर दिया श्रीकृष्णने एकदम में सर उसका जुदा ॥४॥

इसलिये तुमको न इतना मान करना चाहिये ॥

वस हुकम श्रीपालका माथे पे धरना चाहिये ॥ ५ ॥

४२१

वीरदमनका जवाब ॥ (शेर)

हासिल है हमको आज ज़माने में सरवरी ॥

चारों तरफ़से हिन्द है हमने फ़ते करी ॥ १ ॥

आवाज़ आ रही है नाम वीरदमनकी ॥

और धाक पड़रही है नाम वीरदमनकी ॥ २ ॥

जा कहदे श्रीपालसे गर जां में जान है ॥

सीनेमें अगर दिल है और तरकशमें वान है ॥ ३ ॥

तो आके सामने लड़े वह कारज़ार में ॥

वरना न मूंह दिखाए कभी इस दयार में ॥ ४ ॥

४२२

दूत का जवाब ॥ शैर

गो तू तजरबेकार है और होशियार है ॥
बल भी है, तेरा हाथमें भी आबदार है ॥ १ ॥
पर आपके इक़बालका अब इख्तताम है ॥
बस आवो ताब आपकी सारी तमाम है ॥ २ ॥
श्रीपालके इक़बालकी यह पहली रात है ॥
इस वास्ते समझले फ़तै उसके हाथ है ॥ ३ ॥
यूं खाने जंगी करना जहालतका काम है ॥
मालिक से सर फिराना हिमाक़त का काम है ॥ ४ ॥
करनी बहादुरोंको ज़लालत न चाहिये ॥
हरगिज़ भी अमानत में ख़यानत न चाहिये ॥ ५ ॥
कोई भी इसमें आपका हामी न बनेगा ॥
यह काम, तेरी बाइसे बदनामी बनेगा ॥ ६ ॥

४२३

वीरदमन का कोप करना और दूत को निकाल देना (वार्तालाप)

शैर—बस बस जुबान बन्दकर यह बात छोड़दे ॥
वरना अय दूत जीने की अब आस छोड़दे ॥

अय दुष्ट बदकार धीठ नाबकार क्या तुझको मौतका डर नहीं जो ऐसा बेखौफ़ होकर सरे दरबार हमारी निन्दा करता है ॥ जाओ दूर हो जाओ हमारी नज़रसे और निकल जाओ हमारे दरबार से और कहदो उस श्रीपालसे कि अगर राजकी ख़ुवाहिश है तो मैदान में आए फिर जिसकी किसमत में हो राज पाए (दूतका चला जाना)

सीन ५५
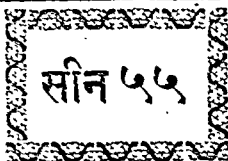
श्रीपालके लशकरका परदा ॥

४२४

दूतका वापिस आकर श्रीपालको हाल सुनाना (वार्तालाप)

हे महाराज राजा वीरदमन को आपका संदेसा दिया और अनेक प्रकार ऊंच नीच दिखाकर उसको समझाया साम दाम भय भेदको भी काम में लाया मगर उस मूरखने आपसे आकर मिलना और राज देना मंजूर नहीं किया बल्कि आमादे जंग हुवा ॥ वह अपने दलबल का इस कदर घमंड करता है कि अपने बराबर किसीको नहीं समझता है ॥

४२५

श्रीपालका कोप करना और तलवार खेंचना और लड़ाई का इरादा करना (सेनापती आदिका सामने खड़े हुवे नजर आना) ॥ (वार्तालाप)

हा ! जालसाज़ दग़ाबाज़ वीरदमन तूने धोका देकर मुझको चम्पापुर से निकाला और मेरे बापके तख्तका मालिक बना क्या अमानत में खयानत करना नामवरों का काम है क्या धोका देना बहादुरों का काम है ॥ तूने आज क्षत्रीकुल को बट्टा लगाया हमारे खानदानके नामपर धब्बा लगाया ॥ अब ज़रा मेरे सामने मैदान में आ और अपना बल दिखा ॥

४२६

श्रीपालका सैनापती को लड़ाई का हुकम देना और सबका लड़ाई के लिये रवाना होना ॥ चाल—(नाटक)

(तलतार सूतकर)

बहादुर जंगी एकदम नंगी म्यान करो शमशीर ॥
वीरदमन को चलकर मारो करो नहीं तासीर ॥ १ ॥
सब फौजें तय्यार कराओ राजपूत बरवीर ॥
अरमन जरमन तुर्क पठान और रूस चीन कशमीर ॥ २ ॥
एकदम मिलकर चलकर घेरो नगरी और जागीर ॥
देव बशर जिन भूत असुरको डारो दममें चीर ॥ ३ ॥

(सबका रवाना होना)
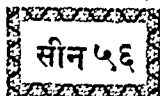
सीन ५६

परदा मैदाने जंग

४२७

(१) श्रीपालकी फौजोंका सैनापती के साथ गुजरते हुवे नज़र आना (२) वीरदमनकी फौजोंका सैनापती के साथ गुजरते हुवे नजर आना ॥ (३) लड़ाईका बाजा बजते हुवे और दोनों फौजोंका लड़ते हुवे नज़र आना (४) वीरदमनका फौजके साथ गुजरते हुवे नज़र आना (५) श्रीपालका अपनी फौजोंके साथ गुजरते हुवे नजर आना (६) दोनों तरफ़ के मंत्रियोंका आपस में विचार करते हुवे नजर आना और फैसला करना कि चूंकि मुआमला घरका है इसलिये लड़ाई बन्द की जाय और श्रीपाल और वीरदमन दोनों आपस में लड़ें जो जीत जाय वही चम्पापुर का राज पाय ॥ (७) श्रीपाल और वीरदमन दोनों का मैदान में आना और श्रीपालका वीरदमन से कहना ॥

श्री०—(शान्ती से) अय चचा वीरदमन मैंने आपको अपना राज बतौर अमानत दिया था अब आप मेरा राज मुझको दें ॥ अमानत में खयानत करना क्षत्री का धर्म नहीं है ॥ आप मेरे पिता के बराबर हैं आप पर हाथ उठाना मेरा धर्म नहीं है ॥

४२८

वीर०-(गुस्से से) अरे नादान श्रीपाल तू राजनीति को नहीं जानता जब हम तुम दोनों रणभूमि में आ गए तो फिर चचा और भतीजा कैसा ॥ तूने पहले ही मेरा कहना क्यों न माना अब डरने से क्या फ़ायदा अब तू मेरे हाथ से जान बचाकर नहीं जा सकता ॥

४२९

श्री०-(गुस्से से) अय दग़ाबाज़ वीरदमन तूने बहादुरों के नाम को डबोया और ईक्ष्वाक खानदान की शानको खोया ॥ अब (तलवार उठाकर) यह मेरी तलवार होगी और तेरा सर होगा-अब मेरे आगे तेग़ बुलन्द का ख़याल करना लाहासिल होगा ॥ देख कोई दममें तू मेरे हाथ से भाग जायगा-और अपने किये की सज़ा पाएगा ॥ तेरी मौत का फ़ैसला अब मेरी तलवार के इशारे पर है ॥ यह क्षत्री की तलवार है इसमें इन्तज़ार

और खुशामद की आदत नहीं ॥ मेरे इरादों के फ़ैसले को बदलने की हाजत नहीं ॥ लीजे वार संभालिये ॥

(वार करना)

४३०

श्रीपाल और वीरदमन दोनों का बहुत देरतक युद्ध होना ॥ आखिर कार श्रीपाल का वीरदमन को दोनों पांओं पकड़ कर उठा लेना और ज़मीन में दे मारना ॥ देवताओं का आना-जयजयकार करना-फूल बरसाना, श्रीपाल के गले में फूलमाला डालना-श्रीपाल की स्तुति करना-और श्रीपाल से वीरदमन को छोड़ने की अर्दास करना ॥

चाल—(नाटक गुलरू ज़रीना) मानो मानो पिया मोरा यह कहा ॥

छोड़ो छोड़ो शहा मूरख यह महा-तुमसे जो अड़ा ॥-
जानी नाही महिमा तेरी-तू शिवगामी चर्म शरीर ॥
तुमसे लड़ने को आना था नाहीं ज़ेबा ॥ छोड़ो० ॥
छत्र भान से दूनी तेरी होवे सदा ॥
हो सदा-हो सदा-हो सदा-हो सदा-हो सदा ॥
अय जीशान-तू बलवान-तू गुणवान-यह अनजान—
है नादान-अभय दान-दीजे दान ॥
तू लासानी, यह अभिमानी, की नादानी, तुझसे ठानी,
बदगुमानी क्या ॥ छोड़ो० ॥

(श्रीपाल का वीरदमन को छोड़ना)

४३१

वीरदमन का जवाब (शेर)

मैं ताक़त आज़माई में करूंथा इमतिहां तेरा ॥
सरासर हो गया झूटा वह था जो कुछ गुमां मेरा ॥१॥

तू बेशक है महा जोधा बहादुर हो तो ऐसा हो ॥
तेरे बलकी नहीं सीमा दिलावर हो तो ऐसा हो ॥ २ ॥
तू ले अब राज अपने बाप का मुझको उज्र क्या है ॥
सुरासुर होंगे सब तावे तेरे आगे बशर क्या है ॥ ३॥

४३२

भोपाल का जवाब (शेर)

बड़ा अफ़सोस है मुझको तुम्हारी होशियारी पे ॥
जवांमरदी इमांदारी तुम्हारी शहरयारी पे ॥ १ ॥
यह क्यों शरमिन्दगी बदनामी अपने सरपे ली तुमने ॥
बताओ तो कौनसी अक्लमंदी इसमें की तुमने ॥ २ ॥
तुम्हें लाज़िम है अब घर छोड़ धर वैराग को मनमें ॥
धरो जिन दिक्षा जा करके अभी एकदम किसी बनमें ३॥

४३३

वीरदमनका जवाब देना और दोनों का चला जाना। (शेर)

मुझे मंजूर है जो की नसीहत आपने मुझको ॥
दिलादी जाले दुनिया से नीयत आपने मुझको ॥ १ ॥
चलो पहले तुम्हारे सरसे रक्खूं ताज शाही का ॥
बाद में जाके लें दिक्षा मान तज बादशाही का ॥ २ ॥
(चला जाना)

और खुशामद की आदत नहीं ॥ मेरे इरादों के फ़ैसले को बदलने की हाजत नहीं ॥ लीजे वार संभालिये ॥

(वार करना)

४३०

श्रीपाल और वीरदमन दोनों का बहुत देरतक युद्ध होना ॥ आख़िर कार श्रीपाल का वीरदमन को दोनों पांवों पकड़ कर उठा लेना और ज़मीन में दे मारना ॥ देवताओं का आना जयजयकार करना-फूल बरसाना, श्रीपाल के गले में फूलमाला डालना-श्रीपाल की स्तुति करना-और श्रीपाल से वीरदमन को छोड़ने की अर्ज़ करना ॥

चाल -(नाटक गुलबकावली) मानो मानो पिया मोरा यह कहा ॥

छोड़ो छोड़ो शहा मूरख यह महा-तुमसे जो अड़ा ॥-
जानी नाहीं महिमा तेरी-तू शिवगामी चर्म शरीर ॥
तुमसे लड़ने को आना था नाहीं ज़ेबा ॥ छोड़ो० ॥
छत्र मान में दूनी तेरी होवे सदा ॥
हो सदा-हो सदा-हो सदा-हो सदा-हो सदा ॥
अय जीशान-तू बलवान-तू गुणवान-यह अनजान—
है नादान-अभय दान-दीजे दान ॥
तू ज्ञानी, यह अभिमानी, की नादानी, तुमसे ठानी,
बदगुमानी क्या ॥ छोड़ो० ॥

(श्रीपाल का वीरदमन को छोड़ना)

४३१

वीरदमन का जवाब (शेर)

मैं नाक़ज आज़माई में करता इसतिदा तेग ॥
मगमर हो गया झूठा वह था जो कुछ गुमां मेरा ॥१॥

तू बेशक है महा जोधा बहादुर हो तो ऐसा हो ॥
तेरे बलकी नहीं सीमा दिलावर हो तो ऐसा हो ॥ २ ॥
तू ले अब राज अपने बाप का मुझको उज्र क्या है ॥
सुरासुर होंगे सब ताबे तेरे आगे बशर क्या है ॥ ३॥

४३२

श्रीपाल का जवाब (शैर)

बड़ा अफ़सोस है मुझको तुम्हारी होशियारी पे ॥
जवांमरदी इमांदारी तुम्हारी शहरयारी पे ॥ १ ॥
यह क्यों शरमिन्दगी बदनामी अपने सरपे ली तुमने ॥
बताओ तो कौनसी अक्लमंदी इसमें की तुमने ॥ २ ॥
तुम्हें लाज़िम है अब घर छोड़ धर बैराग को मनमें ॥
धरो जिन दिक्षा जा करके अभी एकदम किसी बनमें ३॥

४३३

वीरदमनका जवाब देना और दोनों का चला जाना ॥ (शैर)

मुझे मंजूर है जो की नसीहत आपने मुझको ॥
दिलादी जाले दुनिया से बीयत आपने मुझको ॥ १ ॥
चलो पहले तुम्हारे सरसे खंडूं ताज़ शाही का ॥
बाद में जाके लूं दिक्षा मान तज बादशाही का ॥ २ ॥

(चला जाना)

सीन ५७
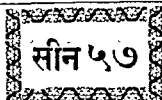
चम्पापुर के दरबार का परदा ॥

४३४

चम्पापुर का राजदरबार नजर आना और श्रीपाल का मय राणियों व मंत्री व सैनापती के दरबार में आना और परियोंका महाराज श्रीपाल की आमद में मुबारकबाद गाना ॥

चाल (नाटक) आज प्यारी देखो गुलशन में आई बहार ॥

आज प्यारी कैसी गुलशन में आई बहार ॥ टेक ॥
कर दिग विजय आए श्रीपाल राजा ॥
रानी हैं आठ हजार ॥ हजार प्यारी० ॥ १ ॥
रैनमंजूषा व गुणमाला प्यारी ॥
मैना की महिमा अपार ॥ अपार प्यारी० ॥ २ ॥
नाचो नचय्या व गावो बधय्या ॥
कर करके सोला सिंगार॥ सिंगार प्यारी० ॥ ३ ॥
राजा को चम्पा का राज मुबारक ॥
बोलो जय सारे पुकार ॥ पुकार प्यारी० ॥ ४ ॥

४३५

वीरदमनका श्रीपाल के सर पर ताज रखना और आप बन में जाने को तय्यार होना ॥

चाल—कदम मत करना मुझे तेगो तबर से देखना ॥

कौन कहता है कि दुनिया में बड़ा आराम है ॥

गौर कर देखा सरासर यह दुखों का धाम है ॥ १ ॥
जगमें सुख होता तो तिर्थंकर इसे क्यों छोड़ते ॥
चारों गतमें देखलो सुखका कहीं नहीं नाम है ॥ २ ॥
अय मेरे बेटा श्रीपाल अय मेरे लख्ते जिगर ॥
ताज धरता हूं तेरे सरपे तू नेक अंजाम है ॥ ३ ॥
जैन दिक्षा लेने को मैं बनमें जाता हूं कहीं ॥
अब मेरा इस राज से क्या वास्ता क्या काम है ॥ ४ ॥

४२६

श्रीपालका वीरदमनको प्रणाम करना और वीरदमन का दिक्षा लेनेको वनमें चला जाना ॥

चाल—(यमन कल्यान (छुड़ादे [illegible] की [illegible] और [illegible] पीर थोड़ी सी ॥

तुम्हें धनवाद है स्वामी बड़ी महिमा तुम्हारी है ॥
तुम्हे धन है पिता जो बनमें जाने की विचारी है ॥ १ ॥
मुझे अपना समझ करके खता मेरी मुआफ़ करना ॥
राज सब कुछ तुम्हारा है यह सब परजा तुम्हारी है ॥ २ ॥
मुबारक हो तुम्हें स्वामी परम बैराग जिन दिक्षा ॥
तुम्हारे सार चरणों में धोक हरदम हमारी है ॥ ३ ॥
(वीरदमन का चला जाना)

४३७

[illegible] जैनधर्म की महिमा वर्णन करना और [illegible] होना ॥

चाल—(नाटक [illegible])

जय जय जय जय—निश दिन नाम जपो भगवन का—
बना के गुणमाला ॥ जय० ॥ टेक ॥

शुभ दिन यह आज है—श्रीपाल राज है ॥
सर जिसके ताज है—आनन्द समाज है ॥ जय० ॥ १ ॥
सत जगमें सार है—महिमा अपार है ॥
वह जगमें ख्वार है—जो माया चार है ॥ जय० ॥ २ ॥
जिसने धर्म तजा।—आखिर को दुख सहा ॥
जय धर्म की सदा—सबने यही कहा ॥ जय० ॥ ३ ॥
न्यामत धरम करो—सब पर दया करो ॥
हिंसा को परहरो—विषय भोग को तजो ॥ जय० ॥ ४ ॥

(ड्रोप सीन)

इति न्यामतसिंह रचित मैनासुन्दरी नाटक का
छठा ऐक्ट समाप्तम् शुभम्

श्रीपाल का राज करना

४३८

नोट—

(१) जब श्री वीरदमन नें जिन दिक्षा लेली तो महाराज श्रीपाल न्यायपूर्वक भूमंडल का राज करने लगे और आठ हज़ार राणियों सहित इन्द्र के समान काल व्यतीत करने लगे परन्तु हरवक्त धर्म में तत्पर रहते थे ॥

(२) नित्य नियमानुसार षट आवश्यकों (देव पूजा, गुरु सेवा, स्वाध्याय, संयम, तप और दान) में यथेष्ट प्रवृत्ति करते थे ॥

(३) मैनासुन्दरी से श्रीपाल के चार पुत्र (धनपाल मही पाल, देवरथ, महारथ, बड़े बलवान व उत्तम लक्षणोंवाले हुवे।

(४) रैनमंजूषा के सात पुत्र और गुणमाला के पांच पुत्र हुवे और अन्य राणियों से भी बहुत से पुत्र हुवे—कुल बारा हज़ार पुत्र हुवे जो बड़े महाबली धीर वीर और गुणवान थे

(५) एक दिन महाराजा श्रीपाल दरबार में बैठे थे और सती मैनासुन्दरी भी सिंघासन पर विराजमान थी कि एक बनमाली ने आकर खबर दी कि बनमें श्रीमुनि महाराज पधारे हैं जिनके प्रभाव से सब ऋतुओं के फल फूल फले और फूल गए हैं ॥ राजा ने सिंघासन से उठकर परोक्ष नमस्कार

किया और अपने परिवार और परजा सहित दर्शन करने को वनमें पहोंचे ॥

(६) श्रीपाल ने प्रार्थना की, कि महाराज संसार से पार उतारनेवाला धर्म का उपदेश दीजिये ॥ श्रीमुनी महाराज ने धर्म उपदेश दिया और राजा श्रीमुनि महाराज की स्तुति करके वापिस घरको चले गए ॥

(७) एक दिन श्रीपाल ने उत्कानपात (बिजली की चमक) देखा तो आपको बिजली की चमकवत संसार असार मालूम होने लगा और बैराग्य पैदा होगया-अपने बड़े बेटे धनपालको बुलाकर कहा कि बेटा अब तुम राज करो और हम जिन दिक्षालेंगे, चुनांचे पुत्रको राज देकर आपने जिन दिक्षा लेली ॥

(८) सातसौं बीरों ने भी दिक्षा लेली और कुन्दप्रभा व मैनासुन्दरी व रैनमंजुषा व गुणमाला व चित्ररेखा आदि बहुत सी राणियां अर्जिकां होगई ॥

(९) महाराज श्रीपाल ने कुछ काल तक तप किया और केवल ज्ञानको हासिल करके दुनिया को धर्म उपदेश देकर मोक्षको प्राप्त हुवे ॥

(१०) महासती मैनासुन्दरी तप करके सोल्हवें स्वर्ग में देव हुवा और वहां से चयकर मोक्ष पाएगा ॥ कुन्दप्रभा ने भी सोल्हवें स्वर्ग में देव पर्याय पाई तथा अन्य राणियें भी अपने अपने तपके अनुसार गति को प्राप्त हुई ॥

श्रीपालका भवान्तर कथन

४३९

श्रीपालने श्रीमुनि महाराजसे अपने पिछले भव पूछे और श्रीमुनिराजने अवधि ज्ञानसे इस तरह वर्णन किया:—

(१) आर्य्य खंड में रतनसंचयपुर एक नगर था जहां श्रीकंठ विद्याधर राज करता था और श्रीमती पटराणी थी ॥

(२) एक दिन राजा राणी सहित श्री मंदिरजी में गए और श्री मुनि महाराजजी से धर्म उपदेश सुनकर श्रावक के व्रत लिये, कुछ दिन बाद राजाने वह व्रत छोड़ दिये और मिथ्याती बनकर जैन धर्मकी निन्दा करने लगा ॥

(३) एक दिन राजा सातसौ वीरों को लेकर वनमें गए वहां एक मुनि महाराज को देखकर उनको "कोढ़ी कोढ़ी" कहकर पुकारा और समुद्रमें गिरवा दिया, बादमें राजाको कुछ दया आई और मुनि महाराज को समुद्रसे निकलवा दिया ॥

(४) राजा एक दिन फिर वन क्रीड़ाको गए और मुनि महाराजको नगन देखकर उनकी निन्दा की और उनको मारनेके लिये तलवार निकाली और मारने का हुक्म दिया, पश्चात कुछ दया करके छोड़ दिया और अपने महल को चले गए ॥

(५) एक दिन [illegible]
[illegible]
[illegible]

(६) इस तरह राणी अपनी और कर्मों की निन्दा करती हुई उदास होकर पिलंग पर गिर पड़ी, इतने में राजा आगया राजाने राणीसे हाल पूछा मगर राणी न बोली, तब एक बांदीने राणीके उदास होने का कारण राजाको बताया राजा यह सुनकर लज्जित हुवा और अपनी भूल विचारने लगा और राणीको समझाने लगा कि हे प्रिये मुझसे बड़ी भूल हुई मैं बड़ा पापी हूं, अब मुझे नर्क में गिरने से बचाओ ॥

(७) तब राणी ने कहा कि हे महाराज आपने बहुत बुरा किया जो जैन धर्म को छोड़ दिया, अब आप श्री मुनि महाराज के पास जाकर प्रायश्चित लें और दोबारा जैनव्रत अंगीकार करें और अपने किये पर पश्चाताप करें ॥

(८) चुनांचे राजा श्री मंदिर जी में गया और श्री मुनि महाराज जी से जैनव्रत देने की प्रार्थना करी ॥

(९) श्री मुनी महाराजने राजा को सिद्धचक्र का व्रत दिया और पांच अणुव्रत दिये राजा मिथ्यात को छोड़कर और सिद्ध चक्रका व्रत और पांच अणुव्रत लेकर अपने घर आया और विधि पूर्वक व्रत पालने लगा ॥

(१०) जब आठ वर्ष पूर्ण हुवे तब भाव सहित उद्यापन किया और अन्त समय समाधि मरण करके सोल्हवें स्वर्ग में देव हुवा ॥

(११) राणी श्रीमती भी समाधि मरण करके स्वर्ग में देवी हुई और भी अपने अपने कर्मानुसार गतिको प्राप्त हुवे ।

(१२) वह राजा श्रीकंठका जीव स्वर्गसे चयकर श्रीपाल हुवा और राणी श्रीमती का जीव मैनासुन्दरी हुई ॥

(१३) निम्न लिखित फल हुवाः-

(१) मुनिको कोढ़ी कहनेसे श्रीपाल और सात सौ वीरों को कुष्ट हुवा ॥

(२) मुनिको समुद्रमे डालने से श्रीपाल समुद्रमें गिरा ॥

(३) मुनिको समुद्रसे निकालने से श्रीपाल समुद्र से निकला ॥

(४) मुनिकी निन्दा करनेसे श्रीपालको भांडोंने निन्दाकरी

(५) मुनिको मारनेका हुक्म देनेसे श्रीपालको शूलीका हुक्म हुवा ॥

(६) सिद्धचक्रकी पूजाके प्रभावसे कुष्ट अच्छा हुवा और राज सम्पदा पाई ॥

(७) पूर्व संयोगसे मैनासुन्दरी मिली ॥

४४०

दोहा-आदि अन्त जिन धर्मसे, सुखी होत है जीव ॥
यातै तन मन वचनसे, सेवो धर्म सदीव ॥ १ ॥
न्यामत एक जिनधर्मसे, मिले स्वर्ग निर्वाण ॥
यातै धर्म न छोड़िये, जबलग घटमें प्राण ॥ २ ॥

शुभम्

इति मैनासुन्दरी नाटक समाप्तम् शुभम्

(मिति मंगसर शुदी दशमी सम्वत १९६९
श्रीवीर निर्वाण सम्वत २४३९)

शुभम्

नोटिस

निम्न लिखित भाषा छन्द बद्ध चरित्र प्राचीन जैन पडितोंने रचेथे जिनके अब संशोधन करके मोटे कागज़ पर मोटे अक्षरों में सर्व साधारणके हितार्थ छपवाया है सब भाइयोंको पढ़कर धर्म लाभ उठाना चाहिये-यह दोनों जैन शास्त्र स्त्री पुरुषोंके लिये बड़े उपयोगी हैं, इनकी कविता प्राचीन है और सुन्दर है॥ दोनों शास्त्र जैन मदिरों में पढ़ने योग्य हैं:—

(१) भविसदत्त चरित्रः—यह जैन शास्त्र श्रीमान् पडित बनवारी लालजी जैनने सम्वत् १६६६ में कविता रूप चौपाई आदि भाषा में बनाया था जिसको कई प्रतियों द्वारा मिलान करके शुद्धता पूर्वक छपाया है और कठिन शब्दोंका अर्थ भी प्रत्येक सुफे के नीचे लिखा गया है इसमें महाराज भविसदत्त और सती कमलश्री व तिलकासुन्दरी का पवित्र चारित्र भले प्रकार दर्शाया गया है। सजिल्द मूल्य २)

(२) धन कुमार चरित्रः—यह जैन शास्त्र श्रीमान् पडित खुशहाल चन्द जी जैन ने कविता रूप चौपाई आदि भाषा में रचा था इसको भी भले प्रकार संशोधन करके छपवाया है इसमें श्रीमान् धनकुमार जी का जो का जीवन चरित्र अच्छी तरह दिखाया गया है। सजिल्द मूल्य १।)

(३) नमोकार मंत्रः—फूलदार बढ़िया मोटा कागज़ मूल्य ॰)

पुस्तक मिलनेका पताः—

बा० न्यामतसिंह जैनी सेक्रेटरी डिस्टिरिक्ट बोर्ड हिसार।

मु० हिसार (जिला खास हिसार)

पजाब)